'समय सन्दर्भ' दो और नाटकों के साथ तीन नाटक छपे हैं। उनके संवाद, चरित्र-चित्रण और प्रयोगधर्मिता से मैं बहुत प्रभावित हुआ। अब सुनता हूँ कि 'दरिन्दे' के पचास प्रदर्शन राजस्थान संगीत नाटक अकादेमी, और और संस्थाओं ने अनेक प्रमुख नगरों में कराये हैं। हजारों दर्शक और पचासों नाट्य-समीक्षकों ने इसे सराहा है। अब हमीदुल्ला ने चाहा कि दो शब्द इसपर मैं भी लिखूँ, तो मैं सोच में पड़ गया कि कहाँ से शुरू करूँ।

□

सबसे पहले तो मुझे जानवर पसन्द हैं। मैं जीवदया मण्डल का सदस्य नहीं हूँ, न रोज चींटियों को चीनी या आटा ही खिलाता हूँ, पर पशु-पक्षी सब प्रकृति के अंग हैं। मैं भी—यानी 'पुरुष' भी 'प्रकृति' से आबद्ध हूँ। एक तरह से मैं या हमीदुल्ला या हम सब जो इसे पढ़ रहे हैं, पशु हैं। पर केवल पशु नहीं हैं। पशु नाटक नहीं लिख सकते या खेल सकते—पर हमीदुल्ला ने लिखा है। यानी नाटक पसन्द आने का पहला कारण यही है कि मैं अब भी चिड़ियाघर देखना और सरकस देखना बहुत पसन्द करता हूँ। भारत के बड़े शहरों के सब चिड़ियाघरों में मैंने कई दिन बिताये हैं (उसके पालित अंश के नाते नहीं, दर्शक के नाते)—और विदेश में भी! अमेरिका में सेण्ट लुई मसूरी में मैंने दो दिन तक एक चिड़ियाघर देखा, कई स्केच बनाये; पश्चिम जर्मनी में फ्रांकफुर्ट और बर्लिन के चिड़ियाघर बड़े ही उमदा हैं। वहाँ एक जगह मछली से पैदा होनेवाली बिजली से बल्ब जलाया हुआ दिखाते हैं और अण्डे से चूजा कृत्रिम गरमी से जल्दी पैदा करने का पूरा जादू दिखाते हैं। रूस में हम उनके अतिथि थे, तो लेनिनग्राद या मास्को में एक सरकस भी हमें दिखाया गया। वैसे तो कुछ देशों में बड़े शहरों की भूगर्भ-रेलवे देखो, तो आदमी भी सरकस के ही अंग लगते हैं चाहे न्यूयॉर्क की 'सब' हो, पैरिस या मास्को की 'मैट्रो'।

अभी भी मैं घण्टों अपनी ढाई बरस की नातिन के साथ दिल्ली के 'ज़ू' में आधा दिन आनन्द से बिता सकता हूँ। दार्जिलिंग अभी गया था, तो वहाँ का सबसे ऊँचाई पर घुड़सवारी का मैदान और चिड़ियाघर देखे। यानी हर मनुष्य में अपने 'पूर्वज' (बन्दर आदि) के प्रति पूजा और प्रशंसा और प्रेम का भाव होता ही है। लार्ड बाइरन ने कहा है : "मैं मनुष्य से कम प्यार नहीं करता, पर प्रकृति से अधिक करता हूँ।" मार्क ट्वेन का कहना है कि "आप सड़क से एक कुत्ते को उठा लीजिए, और एक आदमी को। कुत्ते को खाना खिलाइए, वह जन्म-भर आपके साथ रहेगा। पर यह बात आदमी के साथ सही नहीं है।" आल्डस हक्सले की 'एप एण्ड इसेन्स' (पशु और मानव) और आरवेल की 'एनिमल फार्म' मेरी प्रिय पोथियाँ हैं।

शायद बीस साल पहले जब मैं नागपुर रेडियो पर था तो पुरुषोत्तम दारव्हेकर नाम के मराठी बाल-नाट्य लेखक ने एक नाटक रचा था, जिसमें एक आदमी को पिंजरे में बन्द रखकर सारे पशु उसे देखने आते हैं और शिकायतें करते हैं, ऐसी कहानी थी। टॉलस्टाय की एक बड़ी प्रसिद्ध लघु-कथा है कि एक आदमी के पास गौएँ थीं। उन्हें वह एक बड़े भारी पींजरापोल में बन्द रखता था। अब उनके बड़े-बड़े सींग थे, उनसे वे एक-दूसरे को घायल भी कर सकती थीं। तो इस गौशाला-मालिक ने उन सींगों पर मखमली टोपियाँ सिलवा दीं। एक आदमी ने उससे पूछा कि इतना सब खर्च करते हो, तो उन्हें घास चरने के लिए छुट्टा क्यों नहीं छोड़ देते? वह मालिक बोला : 'फिर उनका दूध और लोग जो दुह लेंगे। मैं इन गौओं का सारा दूध अकेले दुहता हूँ और बेचता हूँ।' यानी पंचतन्त्र के ज़माने से आज तक आदमी और जानवर में अकल के बारे में होड़ लग रही है : कभी एक दूसरे से सीखता है, कभी एक दूसरे को सिखाता है।

हमीदुल्ला के इस नाटक में जानवर और आदमी 'सिम्बॉल' हैं। वो उनके द्वारा आज के अर्थहीन माहौल में एक नया 'शब्द-व्यापार'।

संवाद' उपस्थित किया गया है। वैसे तो चिड़िया और जानवर की बोल
बोलनेवाले 'आदमी' 'वेंट्रोलोक्विस्ट' होते हैं, और तमाशा दिखाते हैं
र जानवर की बोली समझनेवाले बहुत कम हैं। वैसे तो चालीस सा
लेखकी करने के बाद हमें यह भी लगने लगा है कि आदमी की भी बोल
ा 'शबद' समझनेवाले कम ही इनमान हैं। 'शबद शबद बहु अन्तरा....
कबीर कह गये। हमारे यहाँ इसलिए शब्द को ब्रह्म कह दिया कि आगे
परिभाषा न करनी पड़े। बाइबिल में कहा : 'इन दि बिगनिंग देअर वाज
र्ड, ऐण्ड दि वर्ड विकेम गॉड' या इस्लामी धर्मग्रन्थों में उसे 'कुन'
कहा गया !

□

तो हमीदुल्ला की सबसे बड़ी खूबी इस नाटक में यह है कि शब्दों
ा कम से कम, और कई जगह 'बेकेट' की तरह और 'आनुई' और
जेरार्दू' के एबसर्ड नाटकों की तरह कलात्मक 'ऊलजलूल' प्रयोग करके
न्होंने बहुत बड़ा सार्थक प्रभाव पैदा किया है। ऐसा कमाल कुछ-कुछ
तारवां' वाले भुवनेश्वर के 'ताँबे के कीड़े' जैसे एकांकियों में था—जो
बसे पहले लखनऊ में यशपाल के 'विप्लव' में छपा था; या मोहन राकेश
मरणोपरान्त छपे 'अण्डे के छिलके' में 'छाते' नाटक में देखा। हिन्दी
ऐसे प्रयोग कम हैं—भुवनेश्वर और राकेश दोनों अब स्वर्गीय हैं।
ब्दों की एक गति मौन है, दूसरी गति अर्थपूर्णता है। 'अर्थ' वाले हाजी
स्तान शब्दों की दुनिया में कम नहीं, यानी जगलर-स्मगलर। और
नी' बाबाओं की दूकानें तो देश-विदेश में खूब कमा रही हैं : 'दुनिया
ा ले मक्कर से। बमभोले घी और शक्कर से !!'

व्यंग्य और परिहास कहाँ समाप्त होता है और गम्भीर नाटक कहाँ
रु हो जाता है, इसका 'दरिन्दे' में पता ही नहीं लगता। यही उसकी
बी है। सरताज माथुर ने अंगरेजी में जो इस नाटक का परिचय छापा

था उसमें बरतोल्त ब्रेश्ट (या ब्रेख्त) का एक वाक्य दिया है : 'थियेटर कन्सिस्ट्स इन मेकिंग लाइव रिप्रेजेण्टेशन्स ऑव रिपोर्टेड आर इनवेण्टेड हेपनिंग्स बिटविन ह्यूमन बीइंग्ज़ ऐण्ड फेलो क्रोचेर्स ।' हमीदुल्ला ने इसी तरह का थियेटर दिया है जिसमें मनोरंजन भी है और विचारों का उत्तेजन भी।

मैंने अपनी छोटी-सी जिन्दगी में कई नगरों में, कई देशों में सैकड़ों नाटक देखे हैं—अनेकों भाषाओं में। ब्रेख्त का नाम लिया गया है ऊपर; उनके थियेटर में १९६७ में बर्लिन में जर्मन में 'सोल्जर श्वाइश्क' देखा। 'दरिन्दे' देखते हुए मुझे नाजी अत्याचारों के खिलाफ संकेतमय ढंग से दिखाये गये उन कम से कम नाट्य-मंच-साधनों से बड़ा से बड़ा व्यंग्य पैदा करने की याद आ गयी। गये साल बांग्ला देश में ढाका में मैंने बादल सरकार का 'बाकी इतिहास' और खुद उनके निर्देशन में कलकत्ता में 'सगीना महतो' भी देखा है। सरकार भी इस तरह की एब्सर्ड थियेटर की युक्तियाँ 'एवम् इन्द्रजीत' में प्रयुक्त करते हैं। खानोलकर ने 'एक शून्य बाजीराव' (मराठी) नाटक में इसी तरह की शब्दों की 'अ-शब्दता' का उपयोग किया है। हमीदुल्ला से इस दिशा में बहुत आशाएँ हैं।

□

नाटक सिर्फ 'आलेख' या 'संहिता' (मराठी में 'टेक्स्ट' के लिए यह शब्द चलता है) नहीं होता। नाटक एक 'टोटल आर्ट'—समग्र कला है। आधुनिक नाटककार केवल शब्दों का प्रसाद लेकर वाग्विलास के कोणार्क नहीं बनाता। उसे दृश्य, अभिनय, 'नृत्त', मंचसज्जा, प्रकाशयोजना, 'कोरियोग्राफी' सभी का ज्ञान आवश्यक है। इसलिए कभी-कभी हिन्दी में देखते हैं कि नाटक का 'पाठ' तो वही रहता है, प्रस्तुतकर्ता उसका मंच-रूप और ही बना देते हैं। बलवन्त गार्गी नामक पंजाबी नाटककार ने तो यहाँ तक कहा है कि मुझे अच्छा डाइरेक्टर नहीं मिला। राकेश डाइरेक्टर

की इच्छानुसार अपने 'पाठ' को दुबारा-तिबारा बदलने, रिवाइज़ करते थे। हमीदुल्ला के इस नाटक के साथ खूबी यह है कि वे ही खुद अभिनेता और निर्देशक आदि सब कुछ हैं। यानी 'मैं' भी खुद, 'प्याला' भी खुद, 'साक़ी' भी खुद, 'मैख़्वार' भी खुद—गोया कि वेदान्तवाली आदर्श स्थिति है—'अहं ब्रह्मास्मि', माया तो ब्रह्म की छाया ही ठहरी।

हमीदुल्ला का नाटक मैंने पहले देखा, बाद में पढ़ा। इसलिए उसका असर कहते हैं कि दिल में नक़्श हो गया। यह उन थोड़े-से सौभाग्यशाली नाटकों में से एक है जिसे मैं नहीं भूलूँगा। और यह कहना इस नाटक की सबसे बड़ी तारीफ करना है। तारीफ़ यानी परिभाषा और परिचय भी (त-अरीफ़)।

हमीदुल्ला हमारी नाव में बैठे हैं। यानी अंगरेज़ी मुहावरे में मैं कह रहा हूँ कि हम और वो एक ही नाव में हैं; और उस नाव का नाम है—'अहिन्दी भाषी' लेखक जिनकी मातृभाषा दूसरी है, लिखते हैं हिन्दी में। बड़ी खुशी की बात है कि जिस खड़ी बोली हिन्दी को अमीर खुसरो और नज़ीर अकबराबादी ने सँवारा, जिसकी माँग रहीम, जायसी और रसखान ने भरी, और जिसके हाथों में मेंहदी रचानेवाले आज इतने सारे नामी-गिरामी शोहरत पाये हुए कहानीकार, उपन्यासकार, कवि, निबन्धकार, समीक्षक उर्दू-भाषी हैं, जैसे राही मासूम रज़ा, ख्वाजा बदीउज्ज़माँ, गुलशेर शानी, मेहरुन्निसा परवेज़, मंईम, इब्राहीम शरीफ़, फ़ीरोज़ अशरफ, माजदा असद, मलिक मुहम्मद, बशीर अहमद 'मयूख', इत्यादि-इत्यादि, उनमें एक और अच्छा लेखक नाम जुड़ गया—हमीदुल्ला!

'दरिन्दे' एक ऐसा नाटक है जो आसानी से खेला जा सकेगा और खेलनेवालों को मुश्किल ज़बान या सलीस-और-सकील की पेचीदगियों से सहज बचा देगा। क्योंकि इसकी भाषा सीधी-सादी, बोलचाल की सरल हिन्दी या हिन्दुस्तानी है—जहाँ आकर हिन्दी-उर्दू का भेद खत्म हो जाता

। इसकी भाषा दर्शकों और पाठकों को भाषातीत की ओर ले जायेगी—
ो कि भाषा का असली मक़सद है : प्रेम की भाषा या 'का भाषा, का
लिखिए, प्रेम चाहिए साँच' वाली भाषा।

मैं पुनः हमीदुल्ला का अभिनन्दन करता हूँ।

—प्रभाकर माचवे

पात्र

इस प्रयोगात्मक नौ-पात्रीय नाटक में, स्त्री व पुरुष, दो प्रतीक पात्र
जो विभिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न भूमिकाओं में आते हैं। इसी
ह तीन और पात्र, ढोलकिया, हनी और पिगवानवाला, अपनी-अपनी
मुख्य भूमिकाओं के अतिरिक्त अन्य भूमिकाओं में भी हैं। शेष चार
त्र, विक्षिप्त दार्शनिक, शेर, भालू और लोमड़ी, अपने पात्र एवं उसके
रित्र को स्थापित करने के हावभाव, बोलचाल और वेशभूषा में।

मंच

मंच के बीच में डेढ़ फुट ऊँची और साढ़े तीन फुट × साढ़े तीन फुट
ी लकड़ी की एक चौकी, जिसका विभिन्न अवसरों पर पात्रों द्वारा
पयोग होता है। दर्शकों की ओर से मंच के दायें हिस्से में दो बाजू-
रहीन कुरसियाँ। बायीं ओर एक स्टूल।

परदा उठने से पूर्व

ढोलक, झाँझ और मंजीरों के तेज ताल और लय में बजने की
आवाज़, जो परदा उठने के बाद भी कुछ क्षणों तक जारी रहकर भजन-
कीर्तन में विलीन हो जाती है।

परदा उठने के बाद

सामने चौकी पर स्वामीजी और उनके आसपास नीचे ज़मीन पर
बैठे भक्तजन अपने-अपने हाथों में विभिन्न वाद्य लिये स्वामीजी की अगुआई
में भजन गाते दिखाई देते हैं। भजन के अन्तरों के बीच 'भागो, भागो,
...की पार्श्वध्वनियाँ उभरती हैं, जो इस भक्ति-भावमयी वाता-

वरण को चीर रही हैं। जब-जब ये ध्वनियाँ उभरती हैं, मंच पर पात्र फ्रीज़ हो जाते हैं। कुछ क्षणों बाद भजन की लय तेज़ होने लगती है। एक-एक करके भक्तजन नृत्य-मुद्रा में खड़े होने लगते हैं। 'भागो-भागो' की पार्श्व-ध्वनियाँ अब जल्दी-जल्दी विघ्न डालने लगती हैं।

[गायन । वादन । पार्श्वध्वनियाँ । फ्रीज़ । मौन ।]

[दो-तीन बार यही क्रम ।]

[विक्षिप्त दार्शनिक का प्रवेश ।]

पात्र १ : गहूं !
पात्र २ : चीनी ?
पात्र ३ : चावल ?
पात्र ४ : तेल ?
पात्र ५ : पेट्रोल ?

वि. दा. : नहीं, नहीं, नही । ये आवाजें सुन रहे हो ?
(पार्श्व में 'भागो-भागो' का शोर)

स्वामी : ये लोग कहाँ भागे जा रहे हैं ? कहीं लाइन लगानी है ? अनाज के लिए, पानी के लिए, हवा के लिए ?

वि. दा. : लगता है तुमने आज रेडियो से समाचार-बुलेटिन नहीं सुना ? (सभी पात्र एक-दूसरे की तरफ देखते हैं । आपस में, 'सुना' 'नहीं सुना' की भिनभिनाहट । सभी आश्चर्य-चकित हो दार्शनिक की तरफ देखते हैं ।)
अभी-अभी खबर आयी है कि दुनिया के सारे गधों को पकड़कर जेल में बन्द किया जायेगा ।

पात्र १ और २ : स्वामी !

स्वामी : चुप ! हम कोई गधे थोड़े ही हैं । (दार्शनिक से) और भाई, देखने में तो तुम भी गधे दिखाई नहीं देते । फिर क्यों भागें ?

वि. दा. : कुछ पता नहीं है । बहुमत के आधार पर कब किसे गधा साबित कर दिया जाये ।

सभी पात्र : हाँ स्वामी । बहुमत के आधार पर गधा साबित किया जा सकता है ।

वि. दा. : इसीलिए कहता हूँ, भागो, भागो....
(दार्शनिक का ठहाका । पात्रों में भगदड़ ।)

स्वामी : रुको ।
(सभी पात्र अपने-अपने स्थान पर खड़े हो जाते हैं ।)

वि. दा. : क्या आप सबको अपनी इस बेचारगी पर एक मिनट तसल्ली से बैठकर हँसने की फ़ुरसत नहीं है ? (पॉज़) नहीं है। अच्छा, हँसना नहीं चाहते तो मत हँसो। रो लो, उनपर जो बलि के लिए समर्पित हैं।

स्वामी : बलि के लिए समर्पित ? कौन भाई ?

वि. दा. : आदर्श।

पात्र–१ : अभाव में कोई आदर्श नहीं चलता।

वि. दा. : राष्ट्रीय चरित्र।

पात्र–२ : भूखे का कोई चरित्र नहीं होता।

वि. दा. : सभ्यता।

पात्र–३ : रोटी नहीं देती।

वि. दा. : संस्कृति।

पात्र–४ : कल्चर, एग्रीकल्चर की तरह जरूरत पूरी नहीं करता।

वि. दा. : देश कृषि-प्रधान है।

पात्र–५ : देश कुरसी-प्रधान है।

स्वामी : अभाव, भूख, बीमारी।

वि. दा. : थोड़े से अवसरवादी, चन्द मुनाफाखोर सारी स्थिति का नाजायज फायदा उठा रहे हैं।

सभी पात्र : शैतान के उस्ताद।

वि. दा. : हाँ। आज जिन्दगी के दिन की शुरुआत दूध के लिए लाइन में खड़े होने से होती है। इन्होंने इस युग के उस महान् सत्यवादी को भी झूठा साबित कर दिया, जिसने कहा था, स्वराज के बाद दूध की नदियाँ बहेंगी।

सभी पात्र : गधे, सुअर, कुत्ते।

वि. दा. : अपने मालिक और अपने प्रति वफ़ादार। लेकिन ये सब अब और कितने दिन चलेगा ?

(पार्श्व में शेर की दहाड़। सभी भयभीत।)

हरिन्द्रे

स्वामी : यह आवाज़ कैसी है ? देखना भई !

(एक पात्र थोड़ा आगे विंग्स की तरफ जाता है । तेज़ी से लौटता है ।)

पात्र : शेर ! शेर !

(सभी पात्र 'भागो, भागो' चिल्लाते हुए मंच से बाहर चले जाते हैं । दार्शनिक विस्मित खड़ा उन्हें भय से भागते हुए देखता है ।

भाग गये ! सब आतंक में जी रहे हैं । गीदड़ !

(शेर का प्रवेश ।)

शेर : अभी तुमने कई जानवरों के नाम लिये । क्या तुम्हें हमसे कोई शिकायत है ?

वि. दा. : सहमा माहौल । हर चेहरा डरा हुआ । सब तरफ जंगल का राज ।

शेर : आदमी के लिए आदमी का राज ।

वि. दा. : हाँ, आदमी के लिए आदमी का राज । (हँसता है ।)

शेर : तुम्हें मुझसे डर नहीं लगता ?

वि. दा. : तुमसे ?

शेर : हाँ, मुझसे ।

वि. दा. : तुमसे डरने-जैसी कोई बात नहीं है । मुझे तुमसे कोई खतरा नहीं हो सकता, क्योंकि न तुम्हारा कोई आदर्श है, न ही सिद्धान्त । कोई मजहब भी नहीं है, तुम्हारा । कोई राजनेता भी नहीं हो, तुम । फिर क्यों डरूँ ?

शेर : मैं आदमी को मार डालता हूँ ।

वि. दा. : आदमी आदमी को मार डालता है । आदमी से तुम्हें डर नहीं लगता ?

शेर : जानता हूँ । आदमी बड़ा चालाक प्राणी है । अपनी हर कमज़ोरी को वह एक नाम दे देता है ।

वि. दा. : कैसे ?

शेर : जब आदमी हमें मारता है, तो उसे शौक कहा जाता है। जब हम आदमी को मारते हैं, तो हमें पशुता कहा जाता है।

वि. दा. : समझदारी आदमी का गुण है।

शेर : समझदार आदमी युद्ध क्यों करता है ? कभी तुमने सुना कि पशुओं में कोई बड़ी मार हुई ?

वि. दा. : युद्ध राजनीतिक विचारों की टकराहट है।

शेर : एक बात बताओ। बहुत दिनों से किसी आदमी से पूछने की सोच रहा था। आज तुम मिल गये।

वि. दा. : पूछो।

शेर : ये आये दिन इतनी लड़ाइयाँ होती हैं। इनमें हजारों आदमी मरते हैं। इन सबको आदमी खाता कैसे है ?

वि. दा. : आदमी उन्हें खाने के लिए नहीं मारता।

शेर : फिर आदमी चाहता क्या है ? एक लड़ाई के बाद दूसरी लड़ाई। आदमी के हाथों आदमी की मौत। आदमी जानवर से ज्यादा खतरनाक है।

(प्रकाश लुप्त होता है। अन्तरालिक क्षणिक पार्श्व-ध्वनियाँ। कुत्ते के भौंकने की आवाज। दुबारा प्रकाश आने पर एक व्यक्ति, जो शराब पिये हुए है, इस तरह मंच पर आता है मानो उसे धकेल दिया गया हो। वह किसी तरह सँभलकर खड़े होने की कोशिश करता है और एक कुत्ते को मंच पर उपस्थित मानकर उससे बातें करता है। कुत्ता बीच-बीच में कई बार भौंकता है, लेकिन दिखाई नहीं देता।)

शराबी : हरामी पिल्ले, आदमी को देखकर भौंकता है। नमक हराम ! आज कुछ देने को नहीं है, तो नहीं है। रोज

डालता हूँ, उससे सब्र नहीं ? तू समझता है, मैं पिये हुए हूँ। इसलिए भौंकता है। मैं पिये हुए नहीं हूँ। सभी नशे में बोलते हैं। भूँक मत। बिना मतलब कोई आश्वासन पूरे नहीं करता। क्या पूरे नहीं करता ? आश्वासन ! अपना काम देख। अपनी पत्नी की फ़िक्र मत कर। उसे रोज पड़ोसी का टॉमी बहलाता है। चुप हो गया ! शाबाश। यू आर ए वेरी गुड बोय, यू आर ए वेरी गुड बोय कुत्ते ! ....तो मैं क्या कह रहा था ? हाँ, आदमी शब्दों में बात करता है। शब्द, जो आश्वासन देते हैं। शब्द, जो प्यार जताते हैं। शब्द, जो नफरत जगाते हैं। (कुत्ता भौंकता है।) कुत्ते भौंकते हैं, तू कोई कुत्ता थोड़े न है कुत्ते ! कारवाँ गुजरते हैं। चुनाव होते हैं। गरीब मरते हैं। अररेरे, पास आने की कोशिश मत कर। दूर रह। तेरे सामने आदमी का बहुत छोटा रूप है रे। हमारे सामने बड़ी-बड़ी योजनाएँ हैं। शोर मत कर। नेशनल एनाउन्समेण्ट सुन ! कोई चीज ब्लैक से मत खरीद। भूखा मर जा कुत्ते ! मर जा। तेरे जिन्दा रहने से ब्लैक मारकेट जिन्दा है। हम जानते हैं, चीजों का अभाव है। अनाज जानवरों से बचा। आज चूहों से। सब चाट जाते हैं।....अरे, तू मुझे आदमी की तरह नहीं, अपनी खुराक की तरह क्यों देख रहा है ? हड्डी के जैसे। किसी की दावत मत कर और करता है, तो वैसी कर जैसी लोमड़ी ने सारस की की थी। किसने किसकी की थी ?....हाँ....कुत्ते, यू आर ए वेरी इण्टेलीजेण्ट बोय। मैं नहीं चाहता तुझे नुकसान पहुँचे, कुत्ते। मैं तुझे बहुत प्यार करता हूँ, बेटे। तुझमें बड़ा धैर्य है। आत्मविश्वास है। मैं तेरे पास आता हूँ। काट मत लेना। तुझे बहलाने के लिए आज मेरे पास सिर्फ़

शब्द हैं। तेरी तारीफ के शब्द। प्यार-भरे शब्द। शब्द, शब्द और शब्द !....

टामी, टामी, टामी, टामी......

(शराबी मंच से बाहर चला जाता है। प्रकाश क्षीण होता है। हलकी पार्श्वध्वनियाँ। शेर और दार्शनिक पर प्रकाश और एक चीख)

शेर : यह चीख सुनी ?

वि. दा. : हमारी आवाज, तुम्हारी आवाज, सबकी आवाज इस अन्धकार में एक चीख है।

शेर : लेकिन हर चीख की कोई वजह है।

वि. दा. : कमजोरी पर ताकत की जीत।

शेर : यह किसी स्त्री की चीख थी।

वि. दा. : फिर किसी वहशी ने किसी स्त्री की कमजोरी का फायदा उठाया होगा। जानवर !

शेर : जानवर बलात्कार के कायल नहीं। क्या तुमने कभी सुना कि किसी लोमड़ी का शीलभंग हुआ ? क्या तुमने किसी कबूतर को घण्टों अपनी प्रेमिका के सामने गुटरगूँ, गुटरगूँ करते नहीं देखा ? जंगल में मोर को मोरनी के सामने नाचते नहीं देखा ? किसी हिरन को हिरनी की आँखों में आँखें डालकर प्रेमालाप करते नहीं देखा ? कहाँ कोई ओछापन है उनके सम्बन्धों में।

(पार्श्व में वही चीख फिर सुनाई देती है। शेर और दार्शनिक चीख की दिशा में विंग्स में दौड़ जाते हैं। प्रकाश लुप्त। दृश्यों को जोड़नेवाला पार्श्वसंगीत।

पुनः प्रकाश आने पर स्त्री का प्रवेश, जो इस एकांश में पत्नी—माँ और पर-स्त्री की भूमिकाओं में है।

[illegible]

पुरुष का प्रवेश, जो इस प्रकोश में पिता, पुत्र और पर-पुरुष की भूमिकाओं में है।)

बूढ़ा : बजरिया मा कउनों बिजिया नाहीं मिलत। पिये का एक सिगरेट तक नाहीं।

बूढ़ी : राम जाने का होई गया है बाजार का? दाम आसमान छुवत हैं।

बूढ़ा : अरे हमार का होई सिगरेट बिना?

बूढ़ी : राहुल आवत होई। ओहसे ले लिहो।

बूढ़ा : उह तो सुबे ही माँग रहा हमसे सबेरे।

बूढ़ी : का? हे भगवान, कइस कलजुग आय गवा है? बेटा बाप से सिगरेट माँग के पिये लाग है। हमार तो कुछ समझ में नाहीं आवत।

बूढ़ा : (चिलम पीने का मूकाभिनय करता हुआ) ऊँह। ई भी भुज गयो। दो-चार अंगार लाके डाले तो।

बूढ़ी : देखत नाही हम काम करत हैं।

बूढ़ा : देइदे रामकली, देइदे।

बूढ़ी : अच्छा, अच्छा। अभी लावत है। (पॉज़)

बूढ़ा : ऊ का कहत रहीं तुम?

बूढ़ी : हम कहत रहीं कि हमें इस कलजुग की बात कछु समझ नाहीं आवत।

बूढ़ा : इहुया ना समझी की कौउन बात है? जऊन बात हम अपने खातिर ठीक समझत हैं, हम करत हैं। जऊन उई अपने खातिर ठीक समझत हैं, ऊ करत हैं।

बूढ़ी : जऊन बात ऊ अपने खातिर ठीक समझत हैं ऊ उनके काजे अच्छी है?

बूढ़ा : अच्छे होई तबहिन तो ऊ वैसेन करत है जेहिका ऊ अच्छा समझत है।

बूढ़ी : और हम वैसे करित है, जेहिका हम अच्छा समझत है ?
बूढ़ा : हाँ, हाँ (मॉंगता है ।)
बूढ़ी : तुम तो हमका पहाड़े रटावे लगे । अरे हम तो उनको और अपनी समझ के बीच के फरक की बात करत रहित है ।
बूढ़ा : फरक तो रहिबे करी । कोई चीज हमेस एक-सी नाही रहत । ई प्रकृति का नियम है कि जौउन चीज की बढ़त रुक जात है, तो ऊ गिरे लागत है ।
बूढ़ी : तुम तो सीधे-सीधे कोऊ बात नाहीं करत ।
बूढ़ा : हम तो यही कहत रहत हैं कि हम हू कहस कहाँ रहिगे जैस छब्बीस बरस पहिले रहेन । समझ का फरक उमिर का फरक होत है । बड़-बड़ उमिर का फरक बहुत बड़ा फरक होत है । याद है तोहका, सादी के सिरू के दिनन मा हम घण्टन बातन करत रहिन ।
बूढ़ी : सबै याद है ।
बूढ़ा : हम तुहार देह निहारा करत रहेन ।
बूढ़ी : वो हू ! लो साड़ी सुखवावे दो ।
बूढ़ा : ऊँह । तमाम भिगोये दिया, निचोड़ा नाही ।
बूढ़ी : ठीक है, ठीक है ।
बूढ़ा : (साड़ी सुखाने की कोशिश में हाथ ऊपर करता है ।) ई कमर का दर्द हमार जान ले लई, रामकली । (पॉज) (साड़ी खींचते दोनों पास आ जाते हैं ।)
बूढ़ी : वा दिनन तुम घण्टन हमसे बातन करित ।
बूढ़ा : काहे से कि वा दिनन हमका तुम्हार बातन से जादा तुहार सुडौल देह में दिलचस्पी रहिन ।
बूढ़ी : अब हम कहाँ वइस रह गइन ।
बूढ़ा : *यही तो फरक होई गवा ।*
बूढ़ी : भला तुम हू तो वैसे कहाँ रहे ।

बूढ़ा : ठीक है। ब्याह के बाद हम सोचित रही, रामकली, कि सायद हमार सादी तीन-चार बरस से जादा नाहीं निभी—काहे से कि तुम्हार और हमार बिचारन में जमीन-आसमान का फरक हुई। पर सादी होन पर तुम इतनी तेजी से हमरे खाये-पिये, उठें-बैठे, सोचे-समझे के तरीका पे छाय गवा कि रामकसम रामकली, आज हम सोचित है कि साँचऊँ हम वइस नाही रहे जैसे सादी के पहिले रहित।

बूढ़ी : सिकायत करत हो?

बूढ़ा : नाहीं, सिकायत नाही करत हैं। हम तो ई कहत रहिन कि (कमर के दर्द से कराहता है) हमें एक और जिये का मौका लागे, तो रामकसम रामकली, हम तोइकै अपन जीवन संगिनी चुनी।

बूढ़ी : याद है तुमका, जब हमार राहुल होएवाला रहा तुम कित्ता खयाल राखत रहे हमार।

बूढ़ा : राहुल। राहुल नही आवा अबै तक।

बूढ़ी : ईय राहुल कै बहू बहुते बोर किये रहे हमका। पाँच बरस होए गवा सादी को मगर बच्चा....

बूढ़ा : आवा नाही अबै तक। (दोनों मूकाभिनय द्वारा कुछ न कुछ करते रहते हैं)

बूढ़ी : जब कि राहुल हमार सादी के एक बरस बाद होई गवा।

बूढ़ा : हम राहुल की बात करित रहे।

बूढ़ी : हमहू राहुल की बात करित है।

बूढ़ा : नाहीं। तुम तो बच्चा की बात करत हो और हम सिगरेट को।

बूढ़ी : तुम लड़कवा के आदत बिगाड़ रहे।

बूढ़ा : अरे जरूरत खराब करत है सबका। और आज जरूरत

बेहिसाब बढ गयी है।

बूढ़ी : राहुल के होए पै हम एक सानदार दावत दिया रहा।

बूढ़ा : अरे धीरे बोलो, धीरे। दावतन पै रोक है सरकार का।

बूढ़ी : काहु भी होये, भगवान हमार सुन लें। हम जरूर दावत देंं।

बूढ़ा : लेकिन कानून।

बूढ़ी : फूड कमिसनर के साले के दामाद के चाचा के ससुर के बहनोई से तुहार जान-पहचान के का भये?

बूढ़ा : लोग का कहेंगे।

बूढ़ी : लोगन का का है। हमका अपन से मतलब रहे।

बूढ़ा : देस में जगह-जगह भुखमरी फैली है।

बूढ़ी : सबन को राहत मिल रही है। दावत जरूर होगी। पहिलेन जइसे। आज हऊन याद है।

बूढ़ा : (याद करने को कोशिश करता है) दावत में अचानक दिनेस आई गवा। तुहार बचपन का साथी।

बूढ़ी : (पुरानी यादों में खो जाती है) ऊ एक तोहफा लावा रहा।

बूढ़ा : एक गुड़िया।

बूढ़ी : नन्ही-मुन्नी।

बूढ़ा : तुहार सकल से मिलत-जुलत।

बूढ़ी : प्यारी-प्यारी।

बूढ़ा : तुमका इमोसनल हुई गवा।

बूढ़ी : तुम और तुहार सक।

बूढ़ा : नाराज होई गयी।

बूढ़ी : तुम्हई परवाह है। कहै वारो बात कहै मुँह में आये बकिन लागत हो। अब उ...

बूढ़ी : तुम सोतों में डर जात रहे ।

राहुल : मैं दबी आवाज में डैडी-डैडी चिल्लाने लगता ।

बूढ़ी : डरावना सपना ।

राहुल : दरवाजा खुल जाता ।

बूढ़ी : सोतों मा ।

राहुल : वह मुझे टॉफी देने के लिए हाथ बढ़ाता ।

बूढ़ी : तुम डर से आँख बन्द कर लेते ।

राहुल : मैं आगे ख्याल देता और तुम मेरे पास नहीं होती थीं । मैं डर से फिर आँखें बन्द कर लेता....और उसके बाद सरसराहट, बुदबुदाहट, सिसकियाँ....मैं डर से चीख उठता....डैडी, डैडी....दौड़ो....मम्मी को बचाओ....पर मैं रीछ घुस आया है । तुम दौड़कर मेरे पास आतीं....मैं आँख खोलकर देखता....तुम मेरे पास होती थीं ।

बूढ़ी : हम हमेश तुहार पास रहित ।

राहुल : नहीं । जब-जब ऐसा होता था, तुम मेरे पास नहीं होती थीं । और उसके बाद बहुत देर तक मुझे नींद नहीं आती थी ।

बूढ़ी : सबऊ सपनवा सच नाहीं होत । (मौन) तुहार ब्याह के बाद हमऊ एक सपनवा देख रही....एक नन्हा-सा नाती का गोद मा खिलाये का । पर आज ताईं उरमिला की गोद नाही भरी (मौन) आज डॉक्टर के पास गये रहे उए लेके, का कहिन ?

राहुल : कोई खास बात नहीं है ।

बूढ़ी : तुहार खातिर का कहिन ?

राहुल : वही, जो उरमिला के लिए ।

बूढ़ी : उरमिला की माँ तो कछु और ही कहत

राहुल : वह कोई डॉक्टर है, या उसने मुझे....

रवि : मैं तो यह जानना चाहता था कि क्या तुम्हें यह महसूस नहीं होता कि तुम्हारी शादी एक ग़लत आदमी से हो गयी है ?

उर्मिला : क्या कह रहे हैं, आप ?

रवि : मुझे मालूम है, राहुल उनमें से है जो बच्चे की पैदाइश पर लोगों के घर गाने-बजाने पहुँच जाते हैं । और तुम्हें इसका दुख भी है ।

उर्मिला : चुप रहिए । अपने दोस्त के बारे में ऐसी बातें करते शर्म नहीं आती आपको !

रवि : (उर्मिला के क़रीब आकर) तुम तो नाराज़ हो गयीं । तुम्हारी आँखें बिलकुल हिरन-जैसी हैं ।

उर्मिला : दूर रहिए । जानवर और इनसान में बुनियादी अन्तर है ।

रवि : कितनी कोमल । (निरन्तर उर्मिला की तरफ बढ़ता है । उर्मिला उससे बचने की कोशिश करती है ।) हाथ फेरने से मेमने के बाल कितने मुलायम, कितने नाज़ुक और चिकने लगते हैं ।

उर्मिला : भेड़िये की आँखें कितनी तेज़ चमकती हैं ।

रवि : तुमने मुझे पहचाना नहीं ।

उर्मिला : आगे मत बढ़ो ।

रवि : मैं तो एक परम्परा का निर्वाह कर रहा हूँ ।

उर्मिला : खूँखार दरिन्दे !

रवि : माँ कहूँगा ।

उर्मिला : नहीं चाहिए ।

रवि : वंश चलेगा ।

उर्मिला : नहीं ।

रवि : मोक्ष मिलेगा ।

उर्मिला : दुष्ट ! पापी !

खुशी होगी तुम्हें। वो आने ही वाला है अभी। लो, वो आ गया शायद। हाँ, वही तो है। (राहुल विंग्स में दर्शकों को दिखता हुआ चला जाता है) आओ यार रवि। मैं अभी तुम्हारी ही बातें कर रहा था। मम्मी पड़ोस में गयी है। डैडी बाहर हैं। तुम बैठो। उर्मिला से बातें करो। मैं तुम्हारे लिए कुछ लेकर आता हूँ। बस अभी आया। (राहुल रवि की भूमिका में उर्मिला के पास आता है। हावभाव और आवाज़ में बदलाहट।)

रवि : (उर्मिला से) नमस्ते।

उर्मिला : नमस्ते। बैठिए।

रवि : आप भी तो आइए....आइए, आइए।
(उर्मिला रवि के पासवाली कुरसी पर बैठ जाती है।)
बड़े खुले दिल का दोस्त है।

उर्मिला : ....

रवि : चुप क्यों हैं ? आप भी तो कुछ बोलिए।

उर्मिला : क्या बोलूँ ?

रवि : यही, राहुल की आदतों के बारे में।

उर्मिला : अच्छी हैं। ·
(रवि उर्मिला को घूरकर देखता है।)

रवि : मेरा भी यही खयाल है। बहुत-बहुत सुन्दर !

उर्मिला : आप यहीं बैठिए। मैं अभी आती हूँ।

रवि : अरे तुम, कहाँ चलीं। राहुल ने तो कहा था....

उर्मिला : वह अभी आ जायेंगे।

रवि : नहीं। वह अभी नहीं आयेगा।

उर्मिला : आप से कहकर गये हैं ?

रवि : मैं जानता हूँ।....तुम्हारे अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई।

उर्मिला : यह हमारा निजी मामला है।

करोड़ ! नब्बे करोड़ ! एक अरब । दो अरब ! तीन अरब !

शेर : क्या हुआ लोमड़ी ? आँकड़ों की भाषा क्यों बोल रही हो ?

लोमड़ी : चार अरब ! पाँच अरब । सात अरब ! आठ अरब ! दस अरब !

वि. दा. : लगता है, इसने किसी सत्ताधारी का भाषण सुन लिया है। वह अपने बचाव में आँकड़ों की भाषा बोलता है ।

शेर : कोई फ़ेमेली-प्लैनिंग का चक्कर तो नहीं है ?

लोमड़ी : बारह अरब ! तेरह अरब ! बीस अरब ! चालीस अरब ! अस्सी अरब !

वि. दा. : इस अरब का सम्बन्ध कहीं अरब-इसराईल-विवाद से तो नहीं है ?

लोमड़ी : शहर से आ रही हूँ मैं ।

वि. दा. : मैंने कहा था न, इसने किसी सत्ताधारी का भाषण सुना है।

शेर : क्या नसबन्दी सेण्टर से आयी हो ?

लोमड़ी : नहीं, मैं शहर से एक खबर सुनकर आयी हूँ ।

शेर : गधों को पकड़कर बन्द किया जा रहा है, यही न ?

लोमड़ी : इससे भी बुरी खबर है।

शेर : इससे भी बुरी ?

लोमड़ी : बहुत जरूरी ।

शेर : बहुत जरूरी ?

लोमड़ी : उसका हम पर सीधा प्रभाव पड़ने वाला है।

शेर : सीधा प्रभाव ! ऐसी क्या खबर है ?

लोमड़ी : अभी बताती हूँ। पहले यह बताओ, वह कौन प्राणी है ?

शेर : वह, वह एक ऐसा प्राणी है, जिसे दो पाँव वाले हममें-से एक मानते हैं ।

(दोनों मंच से बाहर चले जाते हैं। उर्मिला की तेज़ चीख़। प्रकाश लुप्त। भयावह संगीत। क्षणिक अन्तराल के बाद मंच के बीचोंबीच गोलाकार प्रकाश। राहुल का प्रवेश, मानो किसी अदालत में बयान दे रहा हो। पार्श्व से 'ऑर्डर, ऑर्डर, ऑर्डर' की मद्धिम आवाज़।)

मी लार्ड, उसके बाद उर्मिला उस तीन मंज़िली इमारत के कमरे की खिड़की से नीचे कूद गयी। मौत से पहले उसने पुलिस को बयान दिया कि एक दुःशासन ने उसके चीर-हरण की कोशिश की थी। लेकिन रवि इसके लिए बिलकुल ज़िम्मेदार नहीं है। मैंने ही रवि से ऐसा करने को कहा था। मैं उस लेबिल को अपनी पेशानी से हटा देना चाहता था, जिसपर 'नपुंसक' लिखा था। इस खोखलेपन को छुपाने के लिए हमारे देश में नियोग की प्रथा रही है। मैं नहीं जानता, मैं कहाँ ग़लत था? क्यों ग़लत था? उर्मिला की हत्या का ज़िम्मेदार कौन है? नैतिकता, अनैतिकता, नियोग-प्रथा या कोई और? लोग अपनी सहूलियत से हर बात को अपने हित में एक नाम दे देते हैं। आप अगर मेरी जगह होते, तो इस स्थिति में वही करते, जो मैंने किया, *क्योंकि सिर्फ़ चेहरे बदलते हैं, स्थितियाँ वही रहती हैं।*

(प्रकाश खण्डित होकर राहुल के चेहरे पर केन्द्रित हो जाता है। पार्श्व से 'ऑर्डर, ऑर्डर, ऑर्डर' की आवाज़। प्रकाश लुप्त। दो दृश्यों को जोड़नेवाला पार्श्वसंगीत। पुनः प्रकाश आने पर मंच खाली। लोमड़ी का तेज़ी से उछलते हुए प्रवेश। उसकी आवाज़ सुनकर शेर और प्रशासनिक का दूसरी ओर से प्रवेश।)

पचपन करोड़! छप्पन करोड़! साठ करोड़! अस्सी

शेर : इस पर बाद में विचार करेंगे।
लोमड़ी : फ़िलहाल क्या किया जाये ?
शेर : यही तो सोचना है।
लोमड़ी : मेरे विचार से हम सब को एक यूनियन बनानी—
आनवर-यूनियन। लड़ने के लिए।
शेर : लड़ने के लिए ? नहीं, नहीं। लड़ाई करना तो शहरी आदमियों का काम है।
लोमड़ी : तुम अहिंसा में विश्वास करने लगे हो ? लड़ने से मेरा मतलब खून-ख़राबे से नहीं है। मैं माँगों के लिए लड़ने की बात कह रही हूँ। हमें इस बारे में आदमी की सर्वोच्च सत्ता से मिलना चाहिए।
शेर : उसे देने के लिए माँग-पत्र की ज़रूरत होगी। तुम कहो, तो मैं अभी एक माँग-पत्र तैयार करवाऊँ। सभी सरकारों ने हमें बचाने और जंगल लगाने के लिए कई कानून बना रखे हैं।
लोमड़ी : फिर ये जंगल क्यों काटे जा रहे हैं ?
वि. दा. : इनके सारे काम उलटे होते हैं। वनमहोत्सव का नाम सुना है कभी ? उस दिन पेड़ लगाये जाते हैं। जंगल उगाये जाते हैं। भाषण होते हैं। तसवीरें खिचती हैं।
लोमड़ी : फिर जंगल काट डाले जाते हैं।
वि. दा. : ताकि डवलपमेण्ट ऑथॅरिटी और हाउसिंग बोर्ड के मकान बनाये जा सकें। जंगल साफ़ होते हैं। मकानों की नींव रखी जाती है। भाषण होते हैं। तसवीरें खिचती हैं।
शेर : जंगल लगाये जाते हैं। भाषण होते हैं। तसवीरें खिचती हैं। जंगल काटे जाते हैं। भाषण होते हैं। तसवीरें खिचती हैं।
वि. दा. : यही वह गणित की पहेली, जिसमें आदमी का सारा

वि. दा. : मैं भी मानता हूँ। वे मुझे अर्द्ध विक्षिप्त कहते हैं।

लोमड़ी : यह क्या होता है ?

शेर : जो मुझसे नहीं डरता।

वि. दा. : जो उनकी समझ से समझ में न आनेवाली बातें करें।

लोमड़ी : राजनीति की भाषा में यह हमारा मित्रराष्ट्र हुआ। तो हमें इससे कुछ नहीं छुपाना ?

शेर : हाँ। तो खबर क्या है ?

लोमड़ी : आबादी तेज़ी से बढ़ रही है। पचपन करोड़। छप्पन करोड़। साठ करोड़। अस्सी करोड़। नब्बे करोड़। एक अरब। दो अरब। तीन अरब। चार अरब। पाँच अरब। सात अरब। आठ अरब। (लोमड़ी चौकी का चक्कर काटने लगती है)

संसार के सारे जंगल तेज़ी से काटे जा रहे हैं। इतनी तेज़ी से कि कुछ ही दिनों में जंगल का नामोनिशान नहीं रहेगा।

वि. दा. : जब शहर की मौत आती है, वह जंगल की तरफ़ भागता है।

लोमड़ी : कहते हैं, आदमी के रहने के लिए जगह की कमी है। सारे जंगल कट गये, तो हम कहाँ रहेंगे ?

शेर : हम अपना अलग सूबा बनायेंगे। जानवरों का सूबा। उसमें आदमी को रहने की इजाज़त नहीं होगी।

वि. दा. : (खँखारता है।)

शेर : हाँ, उसमें ऐसे आदमी रह सकेंगे, जिन्हें आदमी आदमी नहीं मानता।

वि. दा. : ऐसे लोगों की तादाद ज़्यादा है, जो जानवरों-जैसी ज़िन्दगी बिता रहे हैं। तुम्हारे सूबे में वे सब कैसे आयेंगे ?

शेर : भालू ? भालू ठीक रहेगा।

वि. दा. : हाँ। उसकी कोई ग़लत इमेज भी नहीं है। लेकिन भालू का अकेले जाना ठीक नहीं है। उसके साथ सवाल का फ़ौरन जवाब देने के लिए कोई चालाक प्राणी होना चाहिए।

लोमड़ी : साथ मैं चली जाऊँगी।

शेर : तो माँग-पत्र तैयार करें। (शेर लोमड़ी की चौकी के इर्दगिर्द घूमता माँग-पत्र लिखाता है। लोमड़ी उसके पीछे-पीछे चलती माँग-पत्र लिखने का मूकाभिनय करती है।)

जानवर और इनसान को जीने का बराबर का हक़ है। वे सारे काम बन्द किये जायें, जिनसे जानवरों की सेहत और जिन्दगी पर बुरा असर पड़ता है। जंगल काटने बन्द किये जायें। हवा का दूषण रोका जाये। जानवरों के लिए अच्छे और सस्ते मकान बनाये जायें। उन्हें पहनने के लिए कपड़े दिये जायें। भोजन की पर्याप्त व्यवस्था हो। समाजवाद का प्रसार नेताओं की तरह जानवरों में भी किया जाये जिससे उनका घर बने, वे फलें-फूलें और समाज में उनकी इज़्ज़त बढ़े।

वि. दा. : अगर ऐसा नहीं हुआ, तो ?

लोमड़ी : तो क्रान्ति होगी।

वि. दा. : क्रान्ति ? इस देश में सब कुछ हो सकता है, लेकिन क्रान्ति नहीं हो सकती। क्रान्ति की चर्चा मैंने भी सुनी है। काले दिलों की सफ़ेद क्रान्ति। पीले चेहरों की हरी क्रान्ति।

लोमड़ी : यह क्रान्ति ज़रूर होगी। यह ऐसे प्राणियों की क्रान्ति है,

सुनवा डूब गया था। (शेर से) अगर कुछ दो, तो तुम्हारा माँग-पत्र मैं तैयार कर दूँ।

शेर : लेकिन उसे देने कौन जायेगा?

वि. दा. : तुममें से किसी को जाना चाहिए। मेरा खयाल है, तुम्हें जाना चाहिए। अच्छा रौब रहेगा। देखते ही सारी माँग मान लेंगे।

शेर : सत्ता बड़ी डरपोक चीज़ है। मैं चला तो जाऊँ, पर सोचता हूँ, मुझे देखते ही गश आ गया तो क्या होगा? सत्ता सच्चे, ईमानदार और ताकतवर जीव को देखने की आदी नहीं। तुम चली जाओ, लोमड़ी! अच्छी बुरी बात तुम दूर से ही सूँघ लेती हो।

लोमड़ी : सत्ता मेरी ही तरह स्त्रीलिंग है। दो स्त्रियों का किसी बात पर एक मत होना मुश्किल है। किसी और नाम पर विचार करें, जैसे गधा।

वि. दा. : वे उसकी बात ध्यान से नहीं सुनेंगे, क्योंकि उसके बारे में उन्होंने एक निश्चित इमेज बना ली है।

शेर : तुम ठीक कहते हो। उसके बारे में लोगों के विचार दूसरे हैं। उल्लू कैसा रहेगा? आबादी अच्छी नहीं लगती उसे। मगर उम्मीदवार भी चलेगा।

लोमड़ी : मेरे विचार से तो ठीक नहीं रहेगा। सब एक-दूसरे को विनोद में उल्लू कहते हैं।

शेर : हाँ, उल्लू अँधेरे में देखता है। अँधेरे में काम करता है।

वि. दा. : सबको अँधेरे में ही दूर की सूझती है। सब एक-दूसरे को अँधेरे में रखकर अपना काम निकालते हैं।

लोमड़ी : बन्दर कैसा रहेगा?

शेर : इनसान अपने पुरखे रिश्ते की वजह से उसको जानता है।

हनी : होय।
भालू : होय।
हनी : (भालू से) हाऊ डू यू डू ?
भालू : ओ. के.।
हनी : (लोमड़ी से) एण्ड यू ?
लोमड़ी : फाइन।
हनी : यू पीपल आर रियल्ली वण्डरफुल।
पिगवान : डोण्ट बी सरप्राइज्ड सिली, बेबी। क्या तुमने एम. जी. एम. की फ़िल्मों में बोलनेवाला खच्चर नहीं देखा है ? ही ईज गॉट ए नेम। अच्छा ही नाम है उसका, आ....।
हनी : फ्रांसिस।
पिगवान : ऐग्जेक्टली। और मुझसे तो आप लोग मिल ही चुके हैं। वरमसजी मरकसजी पिगवानवाला।
भालू : काफ़ी बड़ा नाम है।
पिगवान : वेरी करेक्ट। काफ़ी बड़ा काम है।
लोमड़ी : हम तो छोटे नाम से पुकारेंगे।
पिगवान : श्योर, श्योर।
लोमड़ी : मिस्टर पिग ओन्ली।
पिगवान : वेरी ट्रु। आई एम सीरियसली लुकिंग फ़ार ए वेरी-वेरी ब्राइट फ्यूचर इन यू। (भालू के पास आता है) आर यू कॉम्फर्टेबल ?
भालू : येस, ऑल राइट।
हनी : (लोमड़ी से) बी कॅम्फर्टेबल।
लोमड़ी : थैंक्यू।
पिगवान : (भालू से) हाउ इज योर फादर ?
भालू : ही इज डैड।
पिगवान : आई ऐम सो सॉरी टू हियर।

जिनके पास रहने को मकान नहीं हैं। पहनने को कपड़े नहीं हैं।

शेर : भोजन की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है।

वि. दा. : तुम्हें इस क्रान्ति का विश्वास है? मुझे तो विश्वास नहीं है।

लोमड़ी : तुम अपने को विद्वान् कहते हो और यह हारा हुआ स्वर?

वि. दा. : यह इस सदी का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि सत्ता और अधिकार राजनीतिज्ञों के हाथ में हैं।

लोमड़ी : यानी सत्ता गाँजे, चरस, शराब और पेटीकोट के हाथ में है।

शेर : नहीं, सत्ता यू. एन. ओ. के हाथ में है।

वि. दा. : नहीं, नहीं, नहीं। सत्ता सिर्फ डॉलर्स और रूबल्स के हाथ में है। डॉलर्स और रूबल्स। रूबल्स और डॉलर्स।

(पार्श्वसंगीत। धीरे-धीरे प्रकाश लुप्त होता है। पुनः प्रकाश। पिगवानवाला का प्रवेश।)

पिगवान : (विंग्स में) कम आन, कम आन। (विंग्स में दूसरी ओर जाता है।) हनी बेबी। देखो तो कौन आया है?

हनी : (विंग्स से आवाज आती है।) कौन है, डैडी?

(पिगवानवाला पीछे मुड़कर देखता है।)

पिगवान : अरे वहाँ रुक गये? (वापस विंग्स की तरफ आता है।) प्लीज कम इन, कम इन। डोण्ट बी कॉन्शस। इसे अपना ही घर समझो। (भालू और लोमड़ी का प्रवेश। सामने के दूसरे विंग्स से हनी का प्रवेश। पिगवानवाला हनी से) मिलो इनसे। मिस फॉक्स, मिस्टर बियर, दो ग्रेट।

हनी : मिस फॉक्स, मिस्टर बियर।

पिगवान : (लोमड़ी और भालू से) कम नियर। दी इज माई डॉटर। हनी दी स्वीटी!

हनी : होय।

भालू : होय।

हनी : (भालू से) हाऊ डू यू डू ?

भालू : ओ. के.।

हनी : (लोमड़ी से) एण्ड यू ?

लोमड़ी फाइन।

हनी : यू पीपल आर रियल्ली वण्डरफुल।

पिगवान : डोण्ट वी सरप्राइजड सिली, बेबी। क्या तुमने एम. जी. एम. की फ़िल्मों में बोलनेवाला सञ्चर नहीं देखा है ? ही हैज गॉट ए नेम। अच्छा हो नाम है उसका, आ....।

हनी : फ्रांसिस।

पिगवान : ऐग्जेक्टली। और मुझसे तो आप लोग मिल ही चुके हैं। घरमसजी भरकसजी पिगवानवाला।

भालू : काफ़ी बड़ा नाम है।

पिगवान : वेरी करेक्ट। काफ़ी बड़ा काम है।

लोमड़ी : हम तो छोटे नाम से पुकारेंगे।

पिगवान : श्योर, श्योर।

लोमड़ी : मिस्टर पिग ओन्ली।

पिगवान : थेंक्यू। आई एम सीरियसली लुकिंग फ़ार ए वेरी-वेरी ब्राइट फ़्यूचर इन यू। (भालू के पास आता है) आर यू कॅम्फ़र्टेबल ?

भालू : येस, ऑल राइट।

हनी : (लोमड़ी से) बी कॅम्फ़र्टेबल।

लोमड़ी : थैंक्यू।

पिगवान : (भालू से) हाउ इज योर फ़ादर ?

भालू : ही इज डेड।

पिगवान : आई ऐम सो सॉरी टू हियर।

जिनके पास रहने को मकान नहीं हैं। पहनने को कपड़े नहीं हैं।

शेर : भोजन की पर्याप्त व्यवस्था नहीं है।

वि. दा. : तुम्हें इस क्रान्ति का विश्वास है? मुझे तो विश्वास नहीं है।

लोमड़ी : तुम अपने को विद्वान् कहते हो और यह हारा हुआ स्वर?

वि. दा. : यह इस सदी का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है कि सत्ता और अधिकार राजनीतिज्ञों के हाथ में हैं।

लोमड़ी : यानी सत्ता गाँजे, चरस, शराब और पेटीकोट के हाथ में है।

शेर : नहीं, सत्ता यू. एन. ओ के हाथ में है।

वि. दा. : नहीं, नहीं, नहीं। सत्ता सिर्फ़ डॉलर्स और रूबल्स के हाथ में है। डॉलर्स और रूबल्स। रूबल्स और डॉलर्स।

(पार्श्वसंगीत। धीरे-धीरे प्रकाश लुप्त होता है। पुनः प्रकाश। पिगवानवाला का प्रवेश।)

पिगवान : (विंग्स में) कम आन, कम आन। (विंग्स में दूसरी ओर जाता है।) हनी बेबी। देखो तो कौन आया है?

हनी : (विंग्स से आवाज़ आती है।) कौन है, डैडी?

(पिगवानवाला पीछे मुड़कर देखता है।)

पिगवान : अरे कहाँ रुक गये? (वापस विंग्स की तरफ़ आता है।) प्लीज़ कम इन, कम इन। डोण्ट बी फॉर्मल। इसे अपना ही घर समझो। (मालू और लोमड़ी का प्रवेश। सामने के दूसरे विंग्स से हनी का प्रवेश। पिगवानवाला हनी से) मिलो इनसे। मिस फॉक्स। मिस्टर बियर, दी ग्रेट।

हनी : मिस फ़ॉक्स, मिस्टर बियर।

पिगवान : (लोमड़ी और मालू से) कम नियर। मी इज माई डॉटर। हनी दी स्वीटी!

हनी : होय।

मालू : होय।

हनी : (मालू से) हाऊ डू यू डू ?

मालू : ओ. के.।

हनी : (लोमड़ी से) एण्ड यू ?

लोमड़ी : फाइन।

हनी : यू पीपल आर रियल्ली वण्डरफुल।

पिगवान : डोण्ट बी सरप्राइज्ड सिली, बेबी। क्या तुमने एम. जी. एम. की फ़िल्मों में बोलनेवाला खच्चर नहीं देखा है ? ही हैज गॉट ए नेम। अच्छा ही नाम है उसका, आ....।

हनी : फ्रांसिस।

पिगवान : ऐग्जेक्टली। और मुझसे तो आप लोग मिल ही चुके हैं। बरमसजी मरकमजी पिगवानवाला।

मालू : काफ़ी बड़ा नाम है।

पिगवान : वेरी करेक्ट। काफ़ी बड़ा काम है।

लोमड़ी : हम तो छोटे नाम से पुकारेंगे।

पिगवान : श्योर, श्योर।

लोमड़ी : मिस्टर पिग ओन्ली।

पिगवान : थेंक्यू। आई एम सीरियसली लुकिंग फार ए वेरी-वेरी ब्राइट फ़्यूचर इन यू। (मालू के पास आता है) आर यू कॅम्फर्टेबल ?

मालू : येस, ऑल राइट।

हनी : (लोमड़ी से) बी कॅम्फर्टेबल।

लोमड़ी : थेंक्यू।

पिगवान : (मालू से) हाउ इज योर फादर ?

मालू : ही इज डेड।

पिगवान : आई ऐम सो सॉरी टू हियर।

हनी : (लोमड़ी से) ऐण्ड योर्स ?

लोमड़ी : पता नहीं।

हनी : (भालू से) *पिताजी को क्या हुआ था ?*

भालू : डोण्ट नो।

पिगवान : ही वाज़ ए गुड मेम्बर ऑव माइन।

हनी : पिताजी का नाम क्या था ?

भालू : भालू।

पिगवान : यह तो तुम्हारा नाम है। अच्छा ही नाम था उनका ?

भालू : मेरे दादाजी का नाम भी भालू था। मेरे परदादा का नाम भी भालू था। मेरे परदादा का नाम भी....

पिगवान : वह जब भी मुझे मिले, इट वाज़ ए ग्रेट एक्सपीरियेन्स। (भालू की याद में रोने लगता है।) ओह डियर भालू!

भालू और लोमड़ी : (रोने लगते हैं) भालू!

पिगवान : भालू।

भालू और लोमड़ी : भालू।

हनी : (चुप कराते हुए) डैड! डैड!

पिगवान : भालू।

हनी : डोण्ट बी सो इमोशनल, डैड। ऐसा हो जाता है।

पिगवान : ओह, ही वॉज़ सो काइण्ड टु मी। ए फ़ाइन किंग बॉर्न अर्थ।

हनी : ये तुम्हें कहाँ मिले ?

पिगवान : ये मुझे मिले ऐण्ड आइ वॉज़ सो हैप्पी टु सी दिस लिटिल चैप। (भालू के पास जाता है।) कितना बड़ा हो गया है अब! मैंने इसे छोटा-सा देखा था। हुआ यूँ, बेबी, कि जैसे ही ये सत्ता से मिलकर बाहर आये, मैं इन्हें पहचान गया। तुम्हें तो मालूम ही है, मैं सत्ता से जंगलात के ठेके

मलिन्हे

बो बात करने गया था।

भालू : हम जंगल की बात करने गये थे।

पिगवान : वन ऐण्ड द सेम थिंग। मैंने पूछा, कितने की बात करके आये हो?

लोमड़ी : लाखों की।

पिगवान : दो लाख या तीन लाख?

भालू : इससे ज्यादा।

लोमड़ी : चार लाख?

भालू : नहीं और।

पिगवान : पाँच लाख?

भालू : संख्या बड़ी है।

पिगवान : दस लाख?

लोमड़ी : और।

पिगवान : बीस लाख?

भालू : और।

पिगवान : बस, बस, बस। शो!

लोमड़ी : शी!

भालू : शी।

(सब अपने-अपने होठों पर उँगली रख लेते हैं।)

पिगवान : दुश्मन के भी कान होते हैं। वी विल हैव ड्रिंक्स। (सभी हाथ हवा में उछालते हैं और काल्पनिक प्याले उठाते हैं।) चियर्स।

हनी : चियर्स!

लोमड़ी और भालू : चियर्स!

पिगवान : फॉर द गुड हेल्थ ऑव लेडी फ्रांक्स।

हनी : फ़ॉर द गुड हेल्थ ऑव लॉर्ड बियर!

किसी स्त्री को इतने क़रीब से नहीं देखा।

रति (स्त्री) : इतनी उम्र हो जाने पर भी तुम्हारा किसी से सम्बन्ध नहीं रहा ?

अतुल : नहीं।

रति : तो शादी की सलाह किसने दी ?

अतुल : दोस्तों ने ! उन्होंने मुझे बताया कि स्त्री के साथ से आदमी का व्यक्तित्व निखरता है।

रति : इसीलिए....

अतुल : अरे, बातों-बातों में कितना वक़्त हो गया। देर हो रही है। दफ़्तर चलूँ। अच्छा, मैं जाता हूँ।
(पुरुष चला जाता है। स्त्री उसे जाता हुआ देखती है। सोचने की मुद्रा में)।

रति : अलगाव भरी दौड़। रिश्तों के बीच अकेलापन। मूलतो परिस्थितियाँ। (स्वगत) क्या अपने को अपराधी महसूस करने लगी हो ?....तो....बोलो, फिर क्या करूँ तुम्हारे लिए ?....आत्मा की हत्या या हत्या ?
(पार्श्व से आवाज़ें—हैलो, हैलो, हैलो, हैलो, हैलो, हैलो, हैलो, हैलो, हैलो........। रति यहाँ-वहाँ बिना इरादे चक्कर काटती है। फिर रुककर काल्पनिक टेलीफ़ोन का चोंगा उठाती है। मंच के दूसरी ओर गोलाकार में प्रकाश आता है, जहाँ पुरुष टेलीफ़ोन पर है।)

रति : हैलो। कौन ?

सुरेश (पु०) : मैं सुरेश।

रति : कैसे हो ?

सुरेश : ठीक हूँ। और तुम ?

रति : मैं....? (गले में जैसे कोई चीज़ फँस जाती है।)

सुरेश : तुम्हारे बं

रवि : हाँ।
सुरेश : खाली हो इस वक्त ? आ जाऊँ ?
रवि : नहीं।
सुरेश : शाम को रखें ?
रवि : शाम को भी नहीं। वह दफ़्तर से आ जाता है।
सुरेश : दोपहर को ?
रवि : कभी-कभी लंच में घर आ जाता है।
सुरेश : तीन-चार बजे।
रवि : हूँ।
(सुरेश की तरफ़ का प्रकाश लुप्त हो जाता है। रवि के कक्ष में क्षणिक मौन के पश्चात् फिर 'हैलो, हैलो, हैलो' की पार्श्व आवाजें। वह इधर-उधर दौड़ती है। फिर हथेली पर सिर रखकर बैठ जाती है।)
मुझसे नहीं हो पा रहा। नहीं हो पा रहा।
(दूसरी ओर सुरेश के कक्ष में फिर प्रकाश आता है। सुरेश काल्पनिक टेलीफ़ोन पर बात करता है।)
सुरेश : डरती हो ?
रवि : डर की कोई बात नहीं है। इस घर में आराम की हर चीज़ मौजूद है। अतुल बड़े पद पर है। उसके पास बेहद पैसा है। मुझे, मुझे तलाश है....
सुरेश : सुरक्षा के लिए किसी जानवर की। एक कुत्ता भेज रहा हूँ। काम आयेगा। रात में....
रवि : मुझे रात अब अच्छी नहीं लगती। कुछ स्थितियाँ ऐसी भावुक होती हैं जिनमें फ़ैसला करना कठिन हो जाता है।
सुरेश : फिर किसकी तलाश है ?
रवि : मौक़े की।
सुरेश : ख़ून से डर लगता है ?

मैं मुक्त।

सती : तुम कुतिया नहीं हो ?

रति : (हँसती है) मैं एक कस्तुरी मृग हूँ, जिसकी भीनी-भीनी खुशबू से माहौल महक जाता है।

सती : गणिका और तुममें कोई भेद नहीं है।

रति : वह एक मजबूरी है। यह एक चाहत है। मैं अपनी 'नेचुरल अर्ज' पूरी करने के लिए पुरुष का साथ चाहती हूँ। बिलकुल उसी तरह जैसे कोई पुरुष किसी स्त्री का साथ चाहता है।

सती : ऐसी स्त्री कुलवधू नहीं हो सकती।

रति : तुम एक कुलवधू हो सकती हो। मैं उन स्त्रियों में नहीं हूँ, जो अपने शरीर को फीडिंग बॉटल बना देती हैं।

सती : प्रकृति औरत को एक शरीर देती है।

रति : जो उसकी नियति बन जाता है।

सती : हाँ, नियति। एक रेखा। मर्यादा। भावना।

रति : नियति! (विराम) (कटाक्ष) नियति....खिलवाड़! जुल्म! आत्महत्या! तुम वही स्त्री हो न, जिसने अपने सतीत्व की रक्षा में एक तीन मंजिली इमारत की खिड़की से कूदकर आत्महत्या कर ली थी? वही तो हो, तुम। (अचानक जैसे कोई भूली बात याद आ गयी) और हाँ, तुम मेरी विधवा बहन भी हो। वही बहन, जो एक नाजायज बच्चे की माँ बननेवाली थी। और जिसने अपनी तथाकथित शर्म छुपाने के लिए आत्महत्या कर ली थी। चुप क्यों हो? बोलती क्यों नहीं? आत्महत्या उस जानवर ने क्यों नहीं की, जो अपना खोखलापन छुपाने के लिए तुम्हें अपने दोस्त से गर्भवती बनाना चाहता था! या उसने, जो तुम्हारे तथाकथित नाजायज बच्चे का बाप था। अपने नारी-शरीर की नियति में, मैंने मरना नहीं, जीना सीखा है।

सती : भावना का कोई अर्थ नहीं है ?

रति : पति के शव के साथ सती हो जाना या अपनी इच्छा के खिलाफ़ किसी दूसरे की इच्छा पर चलना, बलि है। ठीक उसी तरह की बलि, जो आदिम युग से आज तक अनेक उत्सवों पर होती रही है। इनसानों की बलि। जानवरों की बलि। पाशविक अत्याचार। कमज़ोर के खिलाफ़ ताक़तवर की साज़िश कि उसे इसके लिए या उसके लिए ज़िन्दा रहना या मर जाना चाहिए। क्यों हर बार किसी *भेड़, बकरी, गाय, स्त्री या बच्चे की बलि दी जाती है ?* क्यों नहीं किसी शेर की बलि दी जाती ? (विराम) क्यों एक स्त्री वैसे नहीं जी सकती, जैसे एक पुरुष जीता है ? तुम खुद कमज़ोरी का शिकार रही हो। तुम्हारे तर्क मुझे कमज़ोर नहीं बना सकते। चारों तरफ़ बड़ी दरिन्दगी है। इसमें तुम्हारे जैसे पात्रों के लिए कोई जगह नहीं, जो एक बकरी या मेमने की तरह व्यवहार करें। तुम अतीत में लौट जाओ। तुम अतीत में लौट जाओ। (उपयुक्त पार्श्व-संगीत। सती की ओर का प्रकाशपुंज धीरे-धीरे धूमिल होकर समाप्त होता सती को आकृति को विलुप्त कर देता है। सुरेश का प्रकोष्ठ आलोकित होता है। सुरेश काल्पनिक टेलीफ़ोन पर रति से बात करता है।)

सुरेश : हियर यू आर माई, गर्ल ! अब मैं जान गया, तुम सचमुच बहुत सक्षम हो। अब हमें जल्द शादी कर लेनी चाहिए। क्या ख़याल है तुम्हारा ?

रति : शादी ! डैम विद दिस शादी बिज़नेस। क्यों बंधें हम, जब वैसे ही हम एक-दूसरे को आसानी से पा सकते हैं।

सुरेश : रति, माई लव ! यह क्या कह रही हो, तुम ?

रति : मैं तुम्हें पहचान गयी हूँ। यू एक्सप्लॉएटर ! दरिन्दे !

सुरेश : रति, माइ डार्लिंग ! आइ प्रॅपोज़ ।

रति : आइ ऑपोज़ ।

सुरेश : डियर, आइ ऑनेस्टली प्रॅपोज़ ।

रति : पुअर चैप, आइ ऑनेस्टली ऑपोज़ ।

सुरेश : रति....

रति : हा-हा-हा-हा-हा-हा-हा....

(रति के प्रकोष्ठ का प्रकाश समाप्त हो जाता है ।)

सुरेश : रति....(प्रकाश धीरे-धीरे सिकुड़कर सुरेश पर केन्द्रित होता हुआ विलुप्त हो जाता है । दृश्य परिवर्तन-सूचक उपयुक्त पार्श्वसंगीत । पुनः प्रकाश आने पर मंच के बीच की चौकी पर शेर और उसके दायीं ओर आगे स्टूल के पास दार्शनिक नीचे बैठा है । लोमड़ी और भालू का साथ-साथ प्रवेश ।)

लोमड़ी-भालू : स्वार्थी, धोखेबाज़, ढोंगी ।

जमाखोर, मुनाफ़ाखोर, तस्कर, पाखण्डी ।

चालबाज़, बटेरबाज़, लालची ।

शेर : क्या समाचार लाये ? सत्ता से मिले ?

लोमड़ी-भालू : हम एक बगुले रंग के जीव से मिले ।

शेर : नेता से ।

लोमड़ी-भालू : हम एक गिरगिटरूपी अवसरवादी से मिले ।

शेर : दलबदलू से ।

लोमड़ी-भालू : हम एक सुवररूपी मुनाफ़ाखोर से मिले ।

शेर : पूँजीपति ।

लोमड़ी-भालू : हम अण्डर वर्ल्ड के असुरराज से मिले ।

शेर : स्मगलर ।

लोमड़ी-भालू : फिर हम एक ऐसे विस्तार से मिले, जो....हर गली, हर बाज़ार, हर दफ़्तर, हर कारबार में, भिन्न-भिन्न रंग, रूप और आकार में, सर्वत्र व्याप्त था ।

खड़ी हो जाती है। शेष तीन पात्र एक के पीछे एक हारे-थके, टूटे हुए से, भारी क़दमों के साथ लोमड़ी की तरफ़ बढ़ते हैं। इस एकांश में 'सत्ता' के सामने कभी भालू कभी शेर और कभी दार्शनिक घुटनों के बल बैठ जाते हैं।)

भालू : अब क्या करें ?

लोमड़ी(सत्ता): इन्तज़ार।

वि. दा. : तुमने क्या किया ?

लोमड़ी(सत्ता): हम मानते हैं, हमने ग़लतियाँ की हैं।

शेर : हमें भूख लगी है।

लोमड़ी : घर जाओ।

भालू : क्या खायें ?

लोमड़ी : हवा खाओ। हवा पर कोई राशन नहीं है।

वि. दा. : हमें ज़रूरत है।

लोमड़ी : हमें भी ज़रूरत है।

शेर : तुम्हें किसकी ज़रूरत है ?

लोमड़ी : एक ऐसे अर्थशास्त्री की, जो रातोंरात अमीरी-ग़रीबी का फ़र्क़ मिटा दे।

भालू : वह अर्थशास्त्री कब आयेगा ?

लोमड़ी : एक दिन आयेगा।

वि. दा. : वो दिन कब आयेगा ?

लोमड़ी : जब अर्थशास्त्री आयेगा।

भालू : तब तक क्या करें ?

लोमड़ी : इन्तज़ार।

शेर : अब और इन्तज़ार की ताब नहीं रही।

लोमड़ी : धैर्य रखो। तुम सबमें बड़ा धैर्य है। आत्मविश्वास रखो। तुम सबमें बड़ा आत्मविश्वास है। तुम ईश्वर में विश्वास करते हो ?

(प्रकाश लुप्त । पार्श्वसंगीत । बिगुल । मंच के बीच चौकी पर गोलाकार प्रकाश-पुंज। लोमड़ी 'सत्ता' के रूप में चौकी पर खड़ी है । शेष तीन पात्र उसके सामने आते हैं ।)

बि. दा. : वो दिन आया ?

लोमड़ी : एक दिन आयेगा ।

चोर : आखिर वो दिन कब आयेगा ?

लोमड़ी : परिवर्तन आ रहा है

भालू : तब तक क्या करें ?

लोमड़ी : इन्तज़ार ।

(प्रकाश लुप्त होकर मंच की बायीं ओर पहले लोमड़ी का सत्ता के रूप में प्रवेश । वह स्टूल पर खड़ी हो जाती है । उसके बाद शेष तीन पात्रों का बिगुल की ध्वनि के साथ प्रवेश ।)

चोर : वो दिन आया ?

लोमड़ी(सत्ता): परिवर्तन जादू का खेल नहीं है । वह धीरे-धीरे आता है ।

भालू : हम टूट रहे हैं ।

लोमड़ी : समस्याएँ व्यापक और जटिल हैं । उनका समाधान धीरे-धीरे किया जा रहा है ।

बि. दा. : समाधान होने तक क्या करें ?

लोमड़ी : समाधान होने का इन्तज़ार ।

चोर : अब तक क्या किया ?

लोमड़ी : इन्तज़ार ।

भालू : और क्या करें ?

लोमड़ी : इन्तज़ार ।

(प्रकाश बढ़कर मंच के दायें कक्ष को समान रूप से आलोकित करता है । बिगुल की आवाज़ । लोमड़ी सत्ता की शक्ल में स्टूल से उतरकर सामने कुरसी पर आकर

दे कि आर्थिक संकट का मुकाबला कैसे किया जाये। जो इन्हें सलाह दे जंग की, ताकि वे सब हथियार इनसानियत की छाती पर चलाये जा सकें, जिनमें पड़े-पड़े जंग लगने लगती हैं और जिनके इस्तेमाल न होने से धन लाक हो जाता है। पाउण्ड और स्टरलिंग की क़ीमत गिरने लगती है।

(शेर ज़मीन पर नीचे दो ज़ानू बैठकर प्रार्थना की मुद्रा में। उसके पीछे भालू और लोमड़ी। दार्शनिक उनकी तरफ़ मुँह करके दोनों हाथ सलीब की तरह दायें-बायें सीधे उठाकर अपना सिर एक तरफ़ लुढ़का लेता है, मानो सलीब पर लटका हो। भालू और लोमड़ी बीच-बीच में शेर के शब्द दोहराते हैं।)

शेर : हे भाई इनसान! जिन्दगी के रिश्ते में हम तेरे भाई हैं। अपनी ईर्ष्या, जलन या स्वार्थ के आधार पर तुझे हक है कि तू अपने दुश्मन को ख़त्म कर दे। लेकिन तुझे यह अधिकार नहीं कि अपनी ऐटमी शक्ति के बल पर तू ब्रह्माण्ड से जीवन समाप्त कर दे। जिन्दगी तलाश कर। मौत नहीं। हमें तेरे तर्क नहीं चाहिए।

लोमड़ी : हमें बहस नहीं चाहिए।

भालू : हमें थोथी सहानुभूति नहीं चाहिए।

शेर : हमें अपने लिए ज़मीन की तलाश है।

तीनों (एक स्वर में): एक ठोस आधार।

वि. दा. : (पूर्व मुद्रा तोड़कर दर्शकों की ओर मुंह करके) कैसी विडम्बना है। इनसान आकाश छू रहा है। इनसानियत धरती पर दम तोड़ रही है।

भालू : (शेर और लोमड़ी से) सुनो। (पॉज़) कहीं हम हार तो नहीं रहे हैं?

लोमड़ी : सच्चे, ईमानदार और ताक़तवर जीव कभी नहीं हारते।

स्त्री : तुम।

पुरुष : तुम।

(इसके बाद इस अंश में स्त्री-पुरुष ऊँची आवाज़ में बारी-बारी से एक-एक शब्द बोलते हैं। उनके द्वारा शब्दोच्चारण से तुरन्त पहले स्वरमण्डल की तीखी झंकार के ध्वनि-प्रभाव। एक शब्द का उच्चारण। फिर टेप रिकार्डेड निम्न विशिष्ट आवाजें। आवाज़ों के बीच स्त्री-पुरुष द्वारा आवाज़ों के संकेत के सामने अंकित-मूकाभिनय।)

(ध्वनि-प्रभाव)

स्त्री : बचपन (आवाजें) (मूकाभिनय)

स्कूल की घण्टी की आवाज	(पतंगबाज़ी। पुरुष पतंग उड़ाता है। स्त्री चरखी पकड़ती है।
फ़ीस फ़ीस फ़ीस फ़ीस फ़ीस फ़ीस	गिल्ली डण्डा।
फ़ीस फ़ीस फ़ीस फ़ीस फ़ीस फ़ीस	पुरुष के हाथ में डण्डा।
फ़ीस फ़ीस फ़ीस फ़ीस फ़ीस फ़ीस	स्त्री गिल्ली फेंकती है।)

(दोनों खेलने की मुद्रा में फ्रीज़ हो जाते हैं।)

(ध्वनि-प्रभाव)

पुरुष : जवानी

नौकरी नौकरी नौकरी नौकरी नौकरी नौकरी नौकरी नौकरी नौकरी नौकरी नौकरी नौकरी	(स्त्री-पुरुष द्वारा भटकाव का अलग-अलग अभिनय।)
माँगें माँगें	(स्त्री-पुरुष द्वारा अभाव-सूचक अभिनय। पार्श्व-ध्वनियों के समाप्त होने तक दोनों हाथ हवा में फैला देते हैं मानो किसी से कुछ माँग रहे हों।)

(दोनों आँगने की मुद्रा में मौन हो जाते हैं।)
(ध्वनि-प्रभाव)

स्त्री : बुढ़ापा

बाप बाप	(स्त्री-पुरुष द्वारा भूख, बीमारी और अभावग्रस्त बुढ़ापे का चित्रण।)
बेटा बेटा	(परिवार में पारस्परिक स्नेह सौहार्द के सिकुड़ते-टूटते दायरे। विलण्डित पारिवारिक इकाई। माता-पिता के प्रति सीमाबद्ध आदर-भाव और उसका औपचारिक निर्वाह। रिश्तों के बीच अकेलेपन और उसके अहसास की अक्कासी।) (मौन।)

(ध्वनि-प्रभाव)

पुरुष : रोटी

चील चील	(पुरुष फावड़े से मिट्टी खोदता है। स्त्री टोकरी में मिट्टी डालकर फेंकती है। पुरुष आकाश की ओर देखकर हाथ से

दरिन्दे

पुरुष : मैं।
स्त्री : मैं।

(दोनों पूरी शक्ति से ऊँचा दिखने की कोशिश करते सरकस की विशेष मुद्रा में फ्रीज़ हो जाते हैं।)

(ध्वनि-प्रभाव)

पुरुष : फुर्र।
स्त्री : फुर्र।
पुरुष : फुर्रर्रर्रर्रर्रर्र।
स्त्री : फुर्रर्रर्रर्रर्रर्र।
पुरुष : चिड़िया आयी दाना लायी।
स्त्री : फुर्र। चिड़िया आयी चावल लायी।
पुरुष : फुर्र। चिड़िया आयी गेहूँ लायी।
स्त्री : फुर्र। चिड़िया आयी दाल लायी।
पुरुष : फुर्र। चिड़िया आयी।
स्त्री : दाना लायी। फुर्र।
पुरुष : चिड़िया।
स्त्री : फुर्र। चिड़िया।
पुरुष : फुर्र।
स्त्री : फुर्र।
पुरुष : फुर्र। फुर्र। फुर्र।
स्त्री : फुर्र। फुर्र। फुर्र।

(दोनों पक्षियों की तरह मंच पर चक्कर काटते हैं। एक दूसरे को क्रॉस करते हैं। ध्वनि-प्रभावों के बीच मंच से बाहर चले जाते हैं। प्रकाश लुप्त होता है। क्षणिक दृश्य-परिवर्तन-सूचक संगीत। पुनः प्रकाश आने पर दर्शकों की ओर से मंच के दायीं ओर निकले हिस्से में स्त्री (रानी) और पुरुष किसी बात पर ज़ोर से ठहाका

(ध्वनि-प्रभाव)

पुरुष : शान्ति

गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द
गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द
गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द
गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द
गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द गिद्द

(स्त्री चौकी पर मुँह
बल लेट जाती है। पुरु
इस तरह व्यवहार करत
है जैसे लाश का गोश्त
नोंचने के लिए झपटते
गिद्द उड़ा रहा हो।
आखिर टूट-थककर वह
अपने दोनों हाथ हवा में
सीधे उठाकर लाश को
ढाँप लेने की मुद्रा में
फ्रीज हो जाता है।)

(ध्वनि-प्रभाव)

स्त्री : छोटे शब्द बड़े कान।
पुरुष : बड़े शब्द छोटे कान।
स्त्री : बड़े शब्द छोटे कान।
पुरुष : छोटे शब्द बड़े कान।
स्त्री : बड़े शब्द
पुरुष : छोटे कान
स्त्री : बड़े कान
पुरुष : छोटे शब्द।
स्त्री : मैं बड़ा।
पुरुष : मैं बड़ा।
स्त्री : मैं बड़ा।
पुरुष : मैं।
स्त्री : मैं।

पुरुष : बाद में कर लेना। अभी काफ़ी वक्त पड़ा है। आओ।

(दार्शनिक स्त्री-पुरुष के साथ हो लेता है। तीनों 'ज़िन्दाबाद, मुर्दाबाद' के नारे लगाते मंच के बीच चौकी का चक्कर काटते हैं। स्त्री-पुरुष मंच के बाहर चले जाते हैं। दार्शनिक मंच पर दर्शकों की ओर आगे बढ़ता हुआ मंच के सिरे पर आ जाता है। तभी अन्य पुरुष (पिशवान) का प्रवेश।)

अन्य पुरुष : (दार्शनिक से) यह चरस है। यह गाँजा है। यह अफ़ीम। यह शराब।

वि. दा. : चरस! गाँजा! अफ़ीम! शराब!

(ज़ोर से ठहाका मारता है।) हहहहहहहहह हा हा हा हा हा....

अ. पु. : बहुत खुश हो?

वि. दा. : बहुत खुश।

अ. पु. : (हाथ से चश्मे और उसके बाद टोपी का माइम करते हुए) यह चश्मा अपनी आँखों पर लगाओ।

वि. दा. : देखूँ तो कैसा लगता है। (माइम)

अ. पु. : अब तुम एक बुद्धिजीवी हो।

वि. दा. : अच्छा!

अ. पु. : यह टोपी पहनो।

वि. दा. : (माइम) लो पहन ली।

अ. पु. : अब तुम नेता हो।

वि. दा. : अच्छा!

अ. पु. : हमारे साथ आओ।

(अन्य पुरुष आगे और दार्शनिक उसके पीछे चलता है। दोनों मंच पर रखी कुरसियों के पास आते हैं। अन्य पुरुष दार्शनिक को कुरसी पर चढ़ने का इशारा करता

सामने दिखाई देते हैं। उनके सामने ही वि-
द्यार्थिक का प्रवेश।)

स्त्री : अरे तुम! आज बहुत दिनों बाद कॉफ़ी-हाउस आये?

वि. दा. : मैं जंगल में चला गया था।

पुरुष : कोई काम था?

वि. दा. : यहाँ की ज़िन्दगी से ऊब गया था।

स्त्री : वहाँ कोई फ़र्क महसूस किया?

वि. दा. : हाँ। वे लोग ज़्यादा ईमानदार हैं।

पुरुष : और?

वि. दा. : ज़्यादा सज्जन हैं।

स्त्री : और?

वि. दा. : ज़्यादा समझदार हैं।

पुरुष : और?

वि. दा. : आदमी उनके मुकाबले कमज़ोर ही नहीं बहुत गिरा हुआ जीव है।

स्त्री : फिर शहर में क्यों चले आये?

वि. दा. : जानवरों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाने।

पुरुष : तो कॉफ़ी-हाउस में आने की क्या ज़रूरत थी?

वि. दा. : हर आन्दोलन कॉफ़ी-हाउस की मेज़ों पर जन्म लेता है।

स्त्री : इसके अलावा भी कोई काम है?

वि. दा. : फ़िलहाल कुछ नहीं।

पुरुष : हमारे साथ चलो।

वि. दा. : कहाँ?

स्त्री : अमेरिका के खिलाफ़ प्रदर्शन करने।

पुरुष : उसके बाद चीन के खिलाफ़।

स्त्री : उसके बाद...

वि. दा. : लेकिन तब क्या?

वि. दा. : नहीं, अब मैं किसी के साथ नहीं जाऊँगा।

चारों पात्र : तुम्हें जाना ही होगा।

वि. दा. : कोई जरूरी है ?

चारों पात्र : हाँ, बहुत जरूरी। तुम लाचार हो और हम मजबूरियाँ। तुम बेकार हो और हम स्थितियाँ।

चारों पात्र बारी-बारी से १ : यहाँ आओ।

२ : यहाँ आओ।

३ : यहाँ आओ।

४ : यहाँ आओ।

वि. दा. : नहीं।

(दार्शनिक चारों पात्रों से घिरकर दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँपकर बैठ जाता है। प्रकाश सिकुड़कर इस समूह पर केन्द्रित होता धीरे-धीरे विलुप्त होता है। ध्वनि-प्रभाव। पुनः प्रकाश। मंच पर शेर, भालू और लोमड़ी।)

शेर : वह शहर गया है।

भालू : हमारी माँगें पूरी होंगी न ?

लोमड़ी : हमारी माँगें जरूर पूरी होंगी।

भालू : हमारी माँगें पूरी होंगी!

(खुशी में भालू डुगडुगी की पार्श्वध्वनियों पर नृत्य करता है। लोमड़ी नृत्य में भालू का साथ देती है। तभी दार्शनिक का प्रवेश। भालू और लोमड़ी उसे वहाँ आया देख नृत्य करना एकाएक बन्द कर देते हैं और आश्चर्य-चकित-से उसकी तरफ देखते हैं।)

तुम ?

आ गये तुम ?

अचानक बन्द हो जाने से दर्शकों की ओर मुँह करके खड़ा रह जाता है। इधर-उधर लोगों को देखता है, जो उसे अकेला छोड़कर चले गये हैं। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता। वह चौकी से नीचे उतरकर मंच पर बायीं ओर कुरसियों के पास नीचे बैठकर रोने लगता है। स्त्री का प्रवेश।)

स्त्री : अरे, तुम इस तरह रो क्यों रहे हो?

वि. दा. : तुमने मुझे नहीं पहचाना? मैं अपनी पूर्व स्थिति में आ गया हूँ।

स्त्री : पूर्व स्थिति?

वि. दा. : हाँ। अब मैं बेकार हूँ।

स्त्री : ओह। तो तुम्हारे पास कार नहीं रही।

वि. दा. : हाँ। अब मुझे चरस नहीं मिलता। गाँजा नहीं मिलता। लड़की नहीं मिलती। शराब नहीं मिलती।

स्त्री : तुम्हें शराब चाहिए?

वि. दा. : हाँ। चाहिए।

स्त्री : हमारे साथ चलो।

वि. दा. : कहाँ?

स्त्री : शराब-बन्दी आन्दोलन करेंगे।

वि. दा. : कब?

स्त्री : दिन में।

वि. दा. : शराब कब मिलेगी?

स्त्री : रात में।

वि. दा. : चलो।

स्त्री : चलो।

(दार्शनिक स्त्री के पीछे विंग्स की तरफ़ जाता है। स्त्री का प्रस्थान। दार्शनिक लौटकर मंच पर आता है। फिर मंच के ऊपरी हिस्से में सिर पकड़कर बैठ जाता है।)

है। दार्शनिक कुरसी पर खड़ा हो जाता है।)
यहाँ एक भाषण दो!

त्रि. दा. : (भाषण देने की मुद्रा में) देवियो और सज्जनो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। फिर दार्शनिक मंच
दूसरी ओर आकर स्टूल पर खड़ा हो जाता है। अ
पुरुष उसके पीछे-पीछे चलता है।)
देवियो और सज्जनो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। दार्शनिक अभिव
स्वीकार करता हुआ मंच के बीच चौकी पर आकर
हो जाता है और ऐसे व्यवहार करता है मानो अ
अभी उसने अपना भाषण समाप्त किया हो। अ
पुरुष ताली बजाता है।)

अ.पु. : अब तुम महान् हो। इस रातोंरात के परिवर्तन पर
से हँसो!

त्रि. दा. : नहीं। अब हम सिर्फ मुसकरा भर सकते हैं। एक हल
मधुर मुसकान, जो हमारी इस महानता की परिचायक

अ. पु. : (फोटो लेने की माइम करता) स्माइल प्लीज।
एक के बाद एक, दोनों ओर से पुरुष, स्त्री, अन्य
का प्रवेश। सभी फोटो लेने की माइम करते हैं। दा
निक चौकी पर खड़ा चारों तरफ घूम जाता है। स
पात्र उसके इर्द-गिर्द दो-तीन चक्कर घेरे में लगाते हैं।

पुरुष : स्माइल प्लीज।

स्त्री : जरा-सा मुसकराइए।

अ. स्त्री. : जस्ट ए मिनट। ओ. के. थैंक्यू।
(दार्शनिक को छोड़कर सभी विंग्स में वापस चले जा
हैं। दार्शनिक जो अभी तक चौकी पर चारों ओर घू
रहा होता है, 'स्माइल प्लीज' आदि की आवाजों

दरि

अचानक बन्द हो जाने से दर्शकों की ओर मुँह करके खड़ा रह जाता है। इधर-उधर लोगों को देखता है, जो उसे अकेला छोड़कर चले गये हैं। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता। वह चौकी से नीचे उतरकर मंच पर बायीं ओर कुरसियों के पास नीचे बैठकर रोने लगता है। स्त्री का प्रवेश।)

स्त्री : अरे, तुम इस तरह रो क्यों रहे हो ?

वि. दा. : तुमने मुझे नहीं पहचाना ? मैं अपनी पूर्व स्थिति में आ गया हूँ।

स्त्री : पूर्व स्थिति ?

वि. दा. : हाँ। अब मैं बेकार हूँ।

स्त्री : ओह्। तो तुम्हारे पास कार नहीं रही।

वि. दा. : हाँ। अब मुझे चरस नहीं मिलता। गाँजा नहीं मिलता। लड़की नहीं मिलती। शराब नहीं मिलती।

स्त्री : तुम्हें शराब चाहिए ?

वि. दा. : हाँ। चाहिए।

स्त्री : हमारे साथ चलो।

वि. दा. : कहाँ ?

स्त्री : शराब-बन्दी आन्दोलन करेंगे।

वि. दा. : कब ?

स्त्री : दिन में।

वि. दा. : शराब कब मिलेगी ?

स्त्री : रात में।

वि. दा. : चलो।

स्त्री : चलो।

(दार्शनिक स्त्री के पीछे विंग्स की तरफ़ जाता है। स्त्री का प्रस्थान। दार्शनिक लौटकर मंच पर आता है। फिर मंच के ऊपरी हिस्से में सिर पकड़कर बैठ जाता है।)

है। दार्शनिक कुरसी पर खड़ा हो जाता है।)
यहाँ एक भाषण दो !

त्रि. दा. : (भाषण देने की मुद्रा में) देवियो और सज्जनो !
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। फिर दार्शनिक मंच क
दूसरी ओर आकर स्टूल पर खड़ा हो जाता है। अन्
पुरुष उसके पीछे-पीछे चलता है।)
देवियो और सज्जनो !
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। दार्शनिक अभिवाद
स्वीकार करता हुआ मंच के बीच चौकी पर आकर खड़
हो जाता है और ऐसे व्यवहार करता है मानो अभी
अभी उसने अपना भाषण समाप्त किया हो। अन्
पुरुष ताली बजाता है।)

अ.पु. : अब तुम महान् हो। इस रातोंरात के परिवर्तन पर जो
से हँसो !

त्रि. दा. : नहीं। अब हम सिर्फ मुसकरा भर सकते हैं। एक हल्क
मधुर मुसकान, जो हमारी इस महानता की परिचायक है

अ. पु. : (फ़ोटो लेने का माइम करता) स्माइल प्लीज़।
एक के बाद एक, दोनों ओर से पुरुष, स्त्री, अन्य स्त्र
का प्रवेश। सभी फ़ोटो लेने की माइम करते हैं। दार्श
निक चौकी पर खड़ा चारों तरफ घूम जाता है। सभ
पात्र इसके इर्द-गिर्द दो-तीन चक्कर घेरे में लगाते हैं।)

पुरुष : स्माइल प्लीज़।

स्त्री : ज़रा-सा मुसकराइए।

अ. स्त्री. : जस्ट ए मिनट ! ओ. के. थैंक्यू !
(दार्शनिक को छोड़कर सभी विंग में वापस चले जाते
हैं। दार्शनिक जो अभी तक चौकी पर चारों ओर घूम
... रहा होता है, 'स्माइल प्लीज़' आदि की आवाजों से

अचानक बन्द हो जाने से दर्शकों की ओर मुँह करके खड़ा रह जाता है। इधर-उधर लोगों को देखता है, जो उसे अकेला छोड़कर चले गये हैं। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता। वह चौकी से नीचे उतरकर मंच पर बायीं ओर कुरसियों के पास नीचे बैठकर रोने लगता है। स्त्री का प्रवेश।)

स्त्री : अरे, तुम इस तरह रो क्यों रहे हो ?

वि. दा. : तुमने मुझे नहीं पहचाना ? मैं अपनी पूर्व स्थिति में आ गया हूँ।

स्त्री : पूर्व स्थिति ?

वि. दा. : हाँ। अब मैं बेकार हूँ।

स्त्री : ओह। तो तुम्हारे पास कार नहीं रही।

वि. दा. : हाँ। अब मुझे चरस नहीं मिलता। गाँजा नहीं मिलता। लड़की नहीं मिलती। शराब नहीं मिलती।

स्त्री : तुम्हें शराब चाहिए ?

वि. दा. : हाँ। चाहिए।

स्त्री : हमारे साथ चलो।

वि. दा. : कहाँ ?

स्त्री : शराब-बन्दी आन्दोलन करेंगे।

वि. दा. : कब ?

स्त्री : दिन में।

वि. दा. : शराब कब मिलेगी ?

स्त्री : रात में।

वि. दा. : चलो।

स्त्री : चलो।

(दार्शनिक स्त्री के पीछे विंग्स की तरफ जाता है। स्त्री का प्रस्थान। दार्शनिक लौटकर मंच पर आता है। फिर मंच के ऊपरी हिस्से में सिर पकड़कर बैठ जाता है।)

है। दार्शनिक कुरसी पर खड़ा हो जाता है।)
यहाँ एक भाषण दो!

वि. दा. : (भाषण देने की मुद्रा में) देवियो और सज्जनो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। फिर दार्शनिक मंच के
दूसरी ओर आकर स्टूल पर खड़ा हो जाता है। अन्य
पुरुष उसके पीछे-पीछे चलता है।)
देवियो और सज्जनो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। दार्शनिक अभिवादन
स्वीकार करता हुआ मंच के बीच चौकी पर आकर खड़ा
हो जाता है और ऐसे व्यवहार करता है मानो अभी-
अभी उसने अपना भाषण समाप्त किया हो। अन्य
पुरुष ताली बजाता है।)

अ.पु. : अब तुम महान् हो। इस रातोंरात के परिवर्तन पर जो
से हँसो!

वि. दा. : नहीं। अब हम सिर्फ मुसकरा भर सकते हैं। एक हलकी
मधुर मुसकान, जो हमारी इस महानता की परिचायक है।

अ. पु. : (फ़ोटो लेने की माइम करता) स्माइल प्लीज़।
एक के बाद एक, दोनों ओर से पुरुष, स्त्री, अन्य स्त्री
का प्रवेश। सभी फोटो लेने को माइम करते हैं। दार्श-
निक चौकी पर खड़ा चारों तरफ़ घूम जाता है। सभी
पात्र उसके इर्द-गिर्द दो-तीन चक्कर घेरे में लगाते हैं।)

पुरुष : स्माइल प्लीज़।

स्त्री : ज़रा-सा मुसकराइए।

अ. स्त्री. : जस्ट ए मिनट! ओ. के. थैंक्यू।
(दार्शनिक को छोड़कर सभी विंग्स में वापस चले जाते
हैं। दार्शनिक जो अभी तक चौकी पर चारों ओर घूम
रहा होता है, 'स्माइल प्लीज़' आदि की आवाज़ों के

दरिन्दे

अचानक बन्द हो जाने से दर्शकों की ओर मुँह करके खड़ा रह जाता है। इधर-उधर लोगों को देखता है, जो उसे अकेला छोड़कर चले गये हैं। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता। वह चौकी से नीचे उतरकर मंच पर बायीं ओर कुरसियों के पास नीचे बैठकर रोने लगता है। स्त्री का प्रवेश।)

स्त्री : अरे, तुम इस तरह रो क्यों रहे हो ?

वि. दा. : तुमने मुझे नहीं पहचाना ? मैं अपनी पूर्व स्थिति में आ गया हूँ।

स्त्री : पूर्व स्थिति ?

वि. दा. : हाँ। अब मैं बेकार हूँ।

स्त्री : ओह। तो तुम्हारे पास कार नहीं रही।

वि. दा. : हाँ। अब मुझे चरस नहीं मिलता। गाँजा नहीं मिलता। लड़की नहीं मिलती। शराब नहीं मिलती।

स्त्री : तुम्हें शराब चाहिए ?

वि. दा. : हाँ। चाहिए।

स्त्री : हमारे साथ चलो।

वि. दा. : कहाँ ?

स्त्री : शराब-बन्दी आन्दोलन करेंगे।

वि. दा. : कब ?

स्त्री : दिन में।

वि. दा. : शराब कब मिलेगी ?

स्त्री : रात में।

वि. दा. : चलो।

स्त्री : चलो।

(दार्शनिक स्त्री के पीछे विंग्स की तरफ जाता है। स्त्री का प्रस्थान। दार्शनिक लौटकर मंच पर आता है। फिर मंच के ऊपरी हिस्से में सिर पकड़कर बैठ जाता है।)

है। दार्शनिक कुरसी पर खड़ा हो जाता है।)
यहाँ एक भाषण दो !

त्रि. दा. : (भाषण देने की मुद्रा में) देवियो और सज्जनो !
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। फिर दार्शनिक मंच की
दूसरी ओर आकर स्टूल पर खड़ा हो जाता है। अन्य
पुरुष उसके पीछे-पीछे चलता है।)
देवियो और सज्जनो !
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। दार्शनिक अभिवादन
स्वीकार करता हुआ मंच के बीच चौकी पर आकर खड़ा
हो जाता है और ऐसे व्यवहार करता है मानो अभी
अभी उसने अपना भाषण समाप्त किया हो। अन्य
पुरुष ताली बजाता है।)

अ.पु. : अब तुम महान् हो। इस रातोंरात के परिवर्तन पर जो
से हँसो !

त्रि. दा. : नहीं। अब हम सिर्फ मुसकरा भर सकते हैं। एक हल्की
मधुर मुसकान, जो हमारी इस महानता की परिचायक है

अ. पु. : (फोटो लेने की माइम करता) स्माइल प्लीज़ !
एक के बाद एक, दोनों ओर से पुरुष, स्त्री, अन्य स्त्री
का प्रवेश। सभी फोटो लेने की माइम करते हैं। दार्श
निक चौकी पर खड़ा चारों तरफ़ घूम जाता है। सभी
पात्र उसके इर्द-गिर्द गोल-गोल चक्कर घेरे में लगाते हैं।)

पुरुष : स्माइल प्लीज़ !

स्त्री : ज़रा-सा मुसकराइए !

अ. स्त्री. : जस्ट ए मिनट ! ओ. के. थैंक्यू।
(दार्शनिक को छोड़कर सभी विंग्स में वापस चले जाते
हैं। दार्शनिक को अभी तक चौकी पर चारों ओर घूम
... है 'स्माइल प्लीज़' आदि की आवाज़ों के

ज्ञे

अचानक बन्द हो जाने से दर्शकों की ओर मुँह करके खड़ा रह जाता है। इधर-उधर लोगों को देखता है, जो उसे अकेला छोड़कर चले गये हैं। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता। वह चौकी से नीचे उतरकर मंच पर बायीं ओर कुरसियों के पास नीचे बैठकर रोने लगता है। स्त्री का प्रवेश।)

स्त्री : अरे, तुम इस तरह रो क्यों रहे हो ?

वि. दा. : तुमने मुझे नहीं पहचाना ? मैं अपनी पूर्व स्थिति में आ गया हूँ।

स्त्री : पूर्व स्थिति ?

वि. दा. : हाँ। अब मैं बेकार हूँ।

स्त्री : ओह्। तो तुम्हारे पास कार नहीं रही।

वि. दा. : हाँ। अब मुझे चरस नहीं मिलता। गाँजा नहीं मिलता। लड़की नहीं मिलती। शराब नहीं मिलती।

स्त्री : तुम्हें शराब चाहिए ?

वि. दा. : हाँ। चाहिए।

स्त्री : हमारे साथ चलो।

वि. दा. : कहाँ ?

स्त्री : शराब-बन्दी आन्दोलन करेंगे।

वि. दा. : कब ?

स्त्री : दिन में।

वि. दा. : शराब कब मिलेगी ?

स्त्री : रात में।

वि. दा. : चलो।

स्त्री : चलो।

(दार्शनिक स्त्री के पीछे विंग्स की तरफ़ जाता है। स्त्री का प्रस्थान। दार्शनिक लौटकर मंच पर आता है। फिर मंच के ऊपरी हिस्से में सिर पकड़कर बैठ जाता है।)

है। दार्शनिक कुर्सी पर खड़ा हो जाता है।)
यहाँ एक भाषण दो !

वि. दा. : (भाषण देने की मुद्रा में) देवियो और सज्जनो !
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। फिर दार्शनिक मंच के दूसरी ओर आकर स्टूल पर खड़ा हो जाता है। अन्य पुरुष उसके पीछे-पीछे चलता है।)
देवियो और सज्जनो !
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। दार्शनिक अभिवादन स्वीकार करता हुआ मंच के बीच चौकी पर आकर खड़ा हो जाता है और ऐसे व्यवहार करता है मानो अभी-अभी उसने अपना भाषण समाप्त किया हो। अन्य पुरुष ताली बजाता है।)

अ.पु. : अब तुम महान् हो। इस रातोरात के परिवर्तन पर जोर से हँसो !

वि. दा. : नहीं। अब हम सिर्फ मुसकरा भर सकते हैं। एक हलकी मधुर मुसकान, जो हमारी इस महानता की परिचायक है।

अ. पु. : (फोटो लेने की माइम करता) स्माइल प्लीज।
एक के बाद एक, दोनों ओर से पुरुष, स्त्री, अन्य स्त्री का प्रवेश। सभी फ़ोटो लेने की माइम करते हैं। दार्शनिक चौकी पर खड़ा चारों तरफ़ घूम जाता है। सभी पात्र उसके इर्द-गिर्द दो-तीन चक्कर घेरे में लगाते हैं।)

पुरुष : स्माइल प्लीज़।

स्त्री : ज़रा-सा मुसकराइए।

अ. स्त्री. : जस्ट ए मिनट ! ओ. के. थैंक्यू।
(दार्शनिक को छोड़कर सभी विंग्स में वापस चले आते हैं। दार्शनिक जो अभी तक चौकी पर चारों ओर घूम रहा होता है, 'स्माइल प्लीज़' आदि की आवाज़ों के

अचानक बन्द हो जाने से दर्शकों की ओर मुँह करके खड़ा रह जाता है। इधर-उधर लोगों को देखता है, जो उसे अकेला छोड़कर चले गये हैं। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता। वह चौकी से नीचे उतरकर मंच पर बायीं ओर कुरसियों के पास नीचे बैठकर रोने लगता है। स्त्री का प्रवेश।)

स्त्री : अरे, तुम इस तरह रो क्यों रहे हो ?

वि. दा. : तुमने मुझे नहीं पहचाना? मैं अपनी पूर्व स्थिति में आ गया हूँ।

स्त्री : पूर्व स्थिति ?

वि. दा. : हाँ। अब मैं बेकार हूँ।

स्त्री : ओह। तो तुम्हारे पास कार नहीं रही।

वि. दा. : हाँ। अब मुझे चरस नहीं मिलता। गाँजा नहीं मिलता। लड़की नहीं मिलती। शराब नहीं मिलती।

स्त्री : तुम्हें शराब चाहिए ?

वि. दा. : हाँ। चाहिए।

स्त्री : हमारे साथ चलो।

वि. दा. : कहाँ ?

स्त्री : शराब-बन्दी आन्दोलन करेंगे।

वि. दा. : कब ?

स्त्री : दिन में।

वि. दा. : शराब कब मिलेगी ?

स्त्री : रात में।

वि. दा. : चलो।

स्त्री : चलो।

(दार्शनिक स्त्री के पीछे विंग्स की तरफ जाता है। स्त्री का प्रस्थान। दार्शनिक लौटकर मंच पर आता है। फिर मंच के ऊपरी हिस्से में सिर पकड़कर बैठ जाता है।)

है। दार्शनिक कुरसी पर खड़ा हो जाता है।)
यहाँ एक भाषण दो!

वि. दा. : (भाषण देने की मुद्रा में) देवियो और सज्जनो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। फिर दार्शनिक मंच की दूसरी ओर जाकर स्टूल पर खड़ा हो जाता है। अन्य पुरुष उसके पीछे-पीछे चलता है।)
देवियो और सज्जनो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। दार्शनिक अभिवादन स्वीकार करता हुआ मंच के बीच चौकी पर आकर खड़ा हो जाता है और ऐसे व्यवहार करता है मानो अभी-अभी उसने अपना भाषण समाप्त किया हो। अन्य पुरुष ताली बजाता है।)

अ.पु. : अब तुम महान् हो। इस रातोंरात के परिवर्तन पर ज़ोर से हँसो!

वि. दा. : नहीं। अब हम सिर्फ मुसकरा भर सकते हैं। एक हल्की मधुर मुसकान, जो हमारी इस महानता की परिचायक है।

अ. पु. : (फोटो लेने की माइम करता) स्माइल प्लीज़।
एक के बाद एक, दोनों ओर से पुरुष, स्त्री, अन्य स्त्री का प्रवेश। सभी फोटो लेने की माइम करते हैं। दार्शनिक चौकी पर खड़ा चारों तरफ घूम जाता है। सभी पात्र उसके इर्द-गिर्द गोल-गोल चक्कर घेरे में लगाते हैं।)

अचानक बन्द हो जाने से दर्शकों की ओर मुँह करके खड़ा रह जाता है। इधर-उधर लोगों को देखता है, जो उसे अकेला छोड़कर चले गये हैं। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता। वह चौकी से नीचे उतरकर मंच पर बायीं ओर कुरसियों के पास नीचे बैठकर रोने लगता है। स्त्री का प्रवेश।)

स्त्री : अरे, तुम इस तरह रो क्यों रहे हो ?

वि. दा. : तुमने मुझे नहीं पहचाना ? मैं अपनी पूर्व स्थिति में आ गया हूँ।

स्त्री : पूर्व स्थिति ?

वि. दा. : हाँ। अब मैं बेकार हूँ।

स्त्री : ओह! तो तुम्हारे पास कार नहीं रही।

वि. दा. : हाँ। अब मुझे चरस नहीं मिलता। गाँजा नहीं मिलता। लड़की नहीं मिलती। शराब नहीं मिलती।

स्त्री : तुम्हें शराब चाहिए ?

वि. दा. : हाँ। चाहिए।

स्त्री : हमारे साथ चलो।

वि. दा. : कहाँ ?

स्त्री : शराब-बन्दी आन्दोलन करेंगे।

वि. दा. : कब ?

स्त्री : दिन में।

वि. दा. : शराब कब मिलेगी ?

स्त्री : रात में।

वि. दा. : चलो।

स्त्री : चलो।

(दार्शनिक स्त्री के पीछे विंग्स की तरफ जाता है। स्त्री का प्रस्थान। दार्शनिक लौटकर मंच पर आता है। फिर मंच के ऊपरी हिस्से में सिर पकड़कर बैठ जाता है।)

है। दार्शनिक कुरसी पर खड़ा हो जाता है।)
यहाँ एक भाषण दो!

वि. दा. : (भाषण देने की मुद्रा में) देवियो और सज्जनो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। फिर दार्शनिक मंच की दूसरी ओर आकर स्टूल पर खड़ा हो जाता है। अन्य पुरुष उसके पीछे-पीछे चलता है।)
देवियो और सज्जनो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। दार्शनिक अभिवादन स्वीकार करता हुआ मंच के बीच चौकी पर आकर खड़ा हो जाता है और ऐसे व्यवहार करता है मानो अभी-अभी उसने अपना भाषण समाप्त किया हो। अन्य पुरुष ताली बजाता है।)

अ.पु. : अब तुम महान् हो। इस रातोरात के परिवर्तन पर जोर से हँसो!

वि. दा. : नहीं। अब हम सिर्फ मुसकरा भर सकते हैं। एक हलकी मधुर मुसकान, जो हमारी इस महानता की परिचायक है।

अ. पु. : (फ़ोटो लेने की माइम करता) स्माइल प्लीज़।
एक के बाद एक, दोनों ओर से पुरुष, स्त्री, अन्य स्त्री का प्रवेश। सभी फोटो लेने की माइम करते हैं। दार्शनिक चौकी पर खड़ा चारों तरफ घूम जाता है। सभी पात्र उसके इर्द-गिर्द दो-तीन चक्कर घेरे में लगाते हैं।)

पुरुष : स्माइल प्लीज़।

स्त्री : ज़रा-सा मुसकराइए।

अ. स्त्री. : जस्ट ए मिनट! ओ. के. थैंक्यू।
(दार्शनिक को छोड़कर सभी विंग्स में वापस चले जाते हैं। दार्शनिक जो अभी तक चौकी पर चारों ओर घूम रहा होता है, 'स्माइल प्लीज़' आदि की आवाज़ों के

अचानक बन्द हो जाने से दर्शकों की ओर मुँह करके खड़ा रह जाता है। इधर-उधर लोगों को देखता है, जो उसे अकेला छोड़कर चले गये हैं। दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं देता। यह चौकी से नीचे उतरकर मंच पर बायीं ओर कुरसियों के पास नीचे बैठकर रोने लगता है। स्त्री का प्रवेश।)

स्त्री : अरे, तुम इस तरह रो क्यों रहे हो?

वि. दा. : तुमने मुझे नहीं पहचाना? मैं अपनी पूर्व स्थिति में आ गया हूँ।

स्त्री : पूर्व स्थिति?

वि. दा. : हाँ। अब मैं बेकार हूँ।

स्त्री : ओह्। तो तुम्हारे पास कार नहीं रही।

वि. दा. : हाँ। अब मुझे चरस नहीं मिलता। गाँजा नहीं मिलता। लड़की नहीं मिलती। शराब नहीं मिलती।

स्त्री : तुम्हें शराब चाहिए?

वि. दा. : हाँ। चाहिए।

स्त्री : हमारे साथ चलो।

वि. दा. : कहाँ?

स्त्री : शराब-बन्दी आन्दोलन करेंगे।

वि. दा. : कब?

स्त्री : दिन में।

वि. दा. : शराब कब मिलेगी?

स्त्री : रात में।

वि. दा. : चलो।

स्त्री : चलो।

(दार्शनिक स्त्री के पीछे विंग्स की तरफ जाता है। स्त्री का प्रस्थान। दार्शनिक लौटकर मंच पर आता है। फिर मंच के ऊपरी हिस्से में सिर पकड़कर बैठ जाता है।)

है। दार्शनिक कुर्सी पर खड़ा हो जाता है।)
यहाँ एक भाषण दो।

वि. दा. : (भाषण देने की मुद्रा में) देखो और समझो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। फिर दार्शनिक दूसरी ओर आकर स्टूल पर खड़ा हो जाता है। पुरुष उसके पीछे-पीछे चलता है।)
देखो और समझो!
(अन्य पुरुष ताली बजाता है। दार्शनिक स्वीकार करता हुआ मंच के बीच चौकी पर खड़ा हो जाता है और ऐसे व्यवहार करता है मानो अभी उसने अपना भाषण समाप्त किया हो। पुरुष ताली बजाता है।)

अ.पु. : अब तुम महान् हो। इस रातोंरात के परिवर्तन पर से हँसो!

वि. दा. : नहीं। अब हम सिर्फ़ मुसकरा भर सकते हैं। एक मधुर मुसकान, जो हमारी इस महानता को परिभाषित

अ. पु. : (फ़ोटो लेने की माइम करता) स्माइल प्लीज़।
एक के बाद एक, दोनों ओर से पुरुष, स्त्री, अन्य का प्रवेश। सभी फ़ोटो लेने की माइम करते हैं। निक चौकी पर खड़ा चारों तरफ़ घूम जाता है। पात्र उसके इर्द-गिर्द दो-तीन चक्कर घेरे में लगाते हैं

पुरुष : स्माइल प्लीज़।

स्त्री : ज़रा-सा मुसकराइए।

अ. स्त्री. : जस्ट ए मिनट! ओ. के. थैंक्यू।
(दार्शनिक को छोड़कर सभी विंग्स में हैं। दार्शनिक जो अभी तक चौकी पर चारों रहा होता है, 'स्माइल प्लीज़' आदि की

वि. दा. : नहीं, अब मैं किसी के साथ नहीं जाऊँगा।

चारों पात्र : तुम्हें जाना ही होगा।

वि. दा. : कोई जरूरी है ?

चारों पात्र : हाँ, बहुत जरूरी। तुम लाचार हो और हम मजबूरियाँ। तुम बेकार हो और हम स्थितियाँ।

चारों पात्र बारी-बारी से १ : यहाँ आओ।

२ : यहाँ आओ।

३ : यहाँ आओ।

४ : यहाँ आओ।

वि. दा. : नहीं।

(दार्शनिक चारों पात्रों से घिरकर दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँपकर बैठ जाता है। प्रकाश सिकुड़कर इस समूह पर केन्द्रित होता धीरे-धीरे विलुप्त होता है। ध्वनि-प्रभाव। पुनः प्रकाश। मंच पर शेर, भालू और लोमड़ी।)

शेर : वह ठहर गया है।

भालू : हमारी माँगें पूरी होंगी न ?

लोमड़ी : हमारी माँगें जरूर पूरी होंगी।

भालू : हमारी माँगें पूरी होंगी।

(खुशी में भालू डुगडुगी की थापध्वनियों पर नृत्य करता है। लोमड़ी नृत्य में भालू का साथ देती है। तभी दार्शनिक का प्रवेश। भालू और लोमड़ी उसे वहाँ आया देख नृत्य करना एकाएक बन्द कर देते हैं और आश्चर्य-चकित-से उसको तरफ देखते हैं।)

शेर : तुम ?

भालू : आ गये तुम ?

वि. दा. : खाली पीने से पेट नहीं भरता।

(अन्य स्त्री का दायीं विंग्स के पहले हिस्से से प्रवेश।

अ. स्त्री : खाली हो।

वि. दा. : हाँ।

(पुरुष का दायीं विंग्स के दूसरे हिस्से से प्रवेश।)

पुरुष : जरूरतमन्द हो ?

वि. दा. : हाँ।

(स्त्री का दायीं विंग्स के दूसरे हिस्से से प्रवेश।)

स्त्री : किसका इन्तजार है ?

वि. दा. : जरूरतमन्द का।

(अन्य पुरुष का दायीं विंग्स के पहले हिस्से से प्रवेश।)

अ. पु. : मैं एक जरूरतमन्द हूँ। मेरे साथ आओ।

(चारों पात्र दार्शनिक को चारों ओर से घेर लेते हैं।)

वि. दा. : नहीं। मैं तुम्हारे साथ नहीं चलूँगा। तुम जरूरतमन्द नहीं हो। तुम धोंचे हो।

चारों पात्र एक स्वर में : तुम जरूरतमन्द हो। हम भी जरूरतमन्द हैं। हम घोंचे हैं। तुम भी घोंचे हो।

वि. दा. : नहीं, मैं घोंचा नहीं हूँ। मैं एक बुद्धिजीवी हूँ।

चारों पात्र : नहीं, अब तुम बुद्धिजीवी नहीं रहे।

वि. दा. : हाँ, अब मैं बुद्धिजीवी नहीं रहा, क्योंकि मैं भाषों में जिन्दगी की सही तसवीर पेश था। और अपने स्वार्थ ने मुझे इसकी .

चारों पात्र : तुम अब नेता भी नहीं रहे।

वि. दा. : हाँ। मैं करप्शन मिटाना चाहता था वाटर ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा।

चारों पात्र : आओ, हमारे साथ आओ।

तुम्हारा प्रतिनिधि हूँ।

शेर : जब व्यक्ति गिरने लगता है, तो उसे अपने सच्चे दोस्त याद आते हैं।

लोमड़ी : हर बार यही होता है।

भालू : क्या हर बार यही होगा ?

शेर : बार-बार यह नहीं होगा।

भालू : हम पिस रहे हैं।

लोमड़ी : जिसके पास ज्यादा है, वह अपनी जरूरत से ज्यादा हिस्सा छोड़ने को तैयार नहीं है।

शेर : जिसके पास कम है, वह दुख और सुख की स्थिति के बीच झूल रहा है।

वि. दा. : इन दो सीमा-रेखाओं के बीच हैं, विश्वास-अविश्वास के अर्थहीन दायरे, जो दुख से सुख को और सुख से दुख की पहचान कराते हैं।

भालू : कुचली हुई उम्मीदों के साथ हम बूँद-बूँद पिघल रहे हैं।

शेर : हर जीव की गिनती होती है।

लोमड़ी : पैदा होने पर।

भालू : मर जाने पर।

वि. दा. : हर जीव खरीदा जाता है।

लोमड़ी : तन से।

शेर : धन से।

भालू : जीवन से।

शेर : हमें सलाखों के टूटने का इन्तजार है।

वि. दा. : एक मौका और दो, मुझे।

लोमड़ी : नहीं, अब और नहीं।

वि. दा. : इस बार मैं जरूर सबके उचित अधिकार दिलाकर रहूँगा।

भालू : हर बार यही कहा जाता है।

वि. दा. : हाँ।

भालू : उन्होंने हमारी माँगें मान लीं ?

लोमड़ी : हमें बराबरी का अधिकार मिला ?

शेर : तुमने हमारी आवाज़ उन तक पहुँचायी ?

वि. दा. : वहाँ जाकर तुम सबके लिए मैंने आवाज़ उठायी। मेरी
मेरी आवाज़ के साथ मेरी तारीफ़ की इतनी आवाज़ें
मिलीं कि मैं अपनी बात कहना भूल गया। फिर ताल
उद्घाटनों, समर्थों का एक न ख़त्म होनेवाला सिलसि
शुरू हुआ और मैं अपने आपको भूल गया।

शेर : यह भी भूल गये कि तुम हमारे प्रतिनिधि बनक
गये हो ?

वि. दा. : मैं सब कुछ भूल गया। मैं चढ़ता गया। चढ़ता गया।
चढ़ता गया।

लोमड़ी : तुम चढ़ते गये ?

वि. दा. : ऊँचे।

लोमड़ी : चढ़ते गये।

वि. दा. : ऊँचे।

लोमड़ी : ऊँचे। बहुत ऊँचे।

वि. दा. : बहुत-बहुत ऊँचे।

लोमड़ी : अंगूर मिले ?

वि. दा. : नहीं।

लोमड़ी : तो क्या मिला ?

वि. दा. : अंगूर की बेटी।

भालू : तुमने उसकी शादी की ?

वि. दा. : मैं फिर गिरने लगा। गिरने लगा। गिरता गया।

भालू : तुम्हें कैसे महसूस हुआ कि तुम गिर रहे हो ?

वि. दा. : यह उस दिन मालूम हुआ जब मुझे याद आया कि मैं

तुम्हारा प्रतिनिधि हूँ ।

शेर : जब व्यक्ति गिरने लगता है, तो उसे अपने सच्चे दोस्त याद आते हैं ।

लोमड़ी : हर बार यही होता है ।

भालू : क्या हर बार यही होगा ?

शेर : बार-बार यह नहीं होगा ।

भालू : हम पिस रहे हैं ।

लोमड़ी : जिसके पास ज्यादा है, वह अपनी जरूरत से ज्यादा हिस्सा छोड़ने को तैयार नहीं है ।

शेर : जिसके पास कम है, वह दुख और सुख की स्थिति के बीच झूल रहा है ।

वि. दा. : इन दो सीमा-रेखाओं के बीच हैं, विश्वास-अविश्वास के अर्थहीन दायरे, जो दुख से सुख की और सुख से दुख की पहचान कराते हैं ।

भालू : कुचली हुई उम्मीदों के साथ हम बूँद-बूँद पिघल रहे हैं ।

शेर : हर जीव की गिनती होती है ।

लोमड़ी : पैदा होने पर ।

भालू : मर जाने पर ।

वि. दा. : हर जीव खरीदा जाता है ।

लोमड़ी : तन से ।

शेर : धन से ।

भालू : जीवन से ।

शेर : हमें सलाखों के टूटने का इन्तज़ार है ।

वि. दा. : एक मौका और दो, मुझे ।

लोमड़ी : नहीं, अब और नहीं ।

वि. दा. : इस बार मैं जरूर सबके उचित अधिकार दिलाकर रहूँगा ।

भालू : हर बार यही कहा जाता है ।

शेर : हमें सत्य का आभास हो गया है। हमारी लड़ाई हम खुद लड़ेंगे।

(स्त्री, अन्य स्त्री और अन्य पुरुष का बारी-बारी से विंग्स की दोनों तरफ़ से प्रवेश। तीनों पात्र 'हमें सत्य का आभास हो गया है। हमारी लड़ाई हम खुद लड़ेंगे!' दोहराते एवं चौकी के गिर्द चक्कर काटते शेर, भालू और लोमड़ी के समूह में आकर शामिल हो जाते हैं। सभी पुरुष का नेता के रूप में और ढोलकिया का चमचे के रूप में प्रवेश।)

नेता : चमचे! चमचे!

(सभी पात्र अपनी-अपनी जगह फ्रीज़ हो जाते हैं।)

नेता : चमचे, कहाँ हो भाई?

(कठपुतली की तरह चमचे का प्रवेश। शब्दों के उच्चारण भी कठपुतली-जैसे।)

चमचा : इस बार कौन आफ़त आयी?

नेता : देख रहे हो?

चमचा : देख रहा हूँ।

नेता : कोई तरकीब सोचो।

चमचा : ध्यान हटा दो।

नेता : हाँ, ध्यान हटा दो।

(फ्रीज़ समूह से) सुनिए, सुनिए, सुनिए।

(सभी पात्रों में एक-साथ हरकत होती है। स्त्री चौकी पर चढ़ जाती है। सभी पात्र उसके इर्द-गिर्द खड़े हो जाते हैं।)

स्त्री : (भाषण देने की मुद्रा में) भाइयो और बहनो! विश्व की अनेक समस्याएँ हमारे सामने हैं। विश्व-समुदाय के प्रति हमारी कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं। इन ज़िम्मेदारियों

को हम सबको बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभाना है। इसलिए आप सबको पहले इन बातों की तरफ ध्यान देना है।

(स्त्री फ्रीज होकर चौकी पर खड़ी रहती है। पुरुष मंच की दायीं ओर कुरसी पर खड़ा होकर भाषण जारी रखता है। शेष पात्र उसकी तरफ़ मुड़कर उसे सुनते हैं।)

पु. : विश्व एक नाजुक दौर से गुज़र रहा है। इसने उसपर, उसने उसपर, इसने इसपर, उसने उसपर, हमला कर दिया है। शान्ति के लिए हमें हर युद्ध में भाग लेना है।

(पुरुष अपने स्थान पर फ्रीज़ हो जाता है। अन्य पुरुष मंच की बायीं ओर रखी स्टूल पर चढ़कर भाषण जारी रखता है। शेष पात्र पूर्ववत् उसकी तरफ़ मुड़ जाते हैं।)

अ. पु. : सारे संसार में डॉलर की क़ीमत गिरी है। महँगाई बढ़ी है। हम चाहते हैं, डॉलर की कीमत के साथ-साथ कीमतें भी गिरें ताकि सबको राहत मिले।

(अन्य पुरुष फ्रीज़ हो जाता है। स्त्री अपनी फ्रीज़ तोड़कर भाषण का क्रम जारी रखती है। पुनः एक बार उसी तरह।)

स्त्री : हमें चाहिए, हम हड़तालें करना बन्द करें। तालाबन्दी छोड़ें।

पु. : विचार प्रकट करने की स्वतन्त्रता में हमारा अटूट विश्वास है।

अ. पु. : मिट्टी के तेल के दाम इसलिए बढ़ाये गये हैं ताकि लोग पेट्रोल में मिट्टी के तेल की मिलावट न करें।

स्त्री : पेट्रोल के दाम इसलिए बढ़ाये गये हैं ताकि लोग पेट्रोल का इस्तेमाल कम करें।

पु. : अनाज के दाम इसलिए बढ़ाये गये हैं ताकि लोग....।

(अकालसूचक ध्वनि-प्रभाव। सभी पात्र मुँह बा
दृश्य में आकाश की ओर देखते हैं। चौकी, कुरसी और
स्टूल पर खड़े पात्र 'अकाल ! मुन्ना ! भूख !' कहते नी
उतर आते हैं और शेष पात्रों के साथ शामिल हो ज
हैं, जो मंच पर यहाँ-वहाँ 'रोटी, भूख, प्यास' चिल्ला
घबराये हुए फिर रहे हैं। यह क्रम कुछ क्षणों तक
जारी रखकर बादलों की गड़गड़ाहट के साथ समाप्त होता
है। बादलों की गड़गड़ाहट के तुरन्त बाद वर्षासूचक
ध्वनि-प्रभाव। सभी पात्र हर्षोल्लास से आकाश की
ओर देखकर ख़ुशी से झूमने लगते हैं। 'पानी, बारिश,
बरसात' की अनेक ध्वनियाँ मंच पर फैल जाती हैं।
स्त्री-पात्राएँ एक दूसरे का हाथ पकड़े पार्श्व में बजती
वर्षा-गीत की धुन पर नृत्यलीन हो जाती हैं। शेष पात्रों
में भालू और शेर को बैलों की तरह जोतकर पुरुष (मूका-
भिनय) हल चलाता है। अन्य पुरुष फावड़े से मिट्टी
खोदता है। दार्शनिक और ढोलकिया भी अपने को किसी
न किसी रूप में व्यस्त रखते हैं। कुछ क्षणों यही क्रम।
अचानक तीव्र वर्षासूचक ध्वनि-प्रभाव। इसके साथ
ही बिजली कड़कने की आवाज़। वातावरण के अनुकूल
प्रकाश। मौन। बाढ़ के प्रभाव। सभी पात्र इस प्रकार
व्यवहार करते हैं मानो उनकी तरफ़ बाढ़ का पानी बढ़ा
आ रहा हो। वे अपनी जान बचाने की चेष्टा में 'बचाओ !'
'बाढ़!', 'सैलाब!', 'तूफ़ान !', 'मुन्ना !' आदि शब्द
चिल्लाते हैं। बाढ़सूचक ध्वनि-प्रभाव समाप्त होने तक
लगभग सभी मानव पात्र कुरसियों और स्टूल पर तथा
पशु पात्र मंच के बीच रखी चौकी पर चढ़ जाते हैं।
मौन।

मौन को तोड़ती दार्शनिक की आवाज़ ।)

वि. दा. : सब नष्ट हो रहा है । सब कुछ । सब ।

(स्त्री अपने स्थान से उठकर सामने आती है ।)

स्त्री : कुछ भी नष्ट नहीं होता । न वह, जो हमने जिया है । न वह, जो हम जी रहे हैं ।

चोर : हम जहाँ थे, वहीं हैं ।

मालू : वही अभाव और माँगों की लम्बी सूची ।

लोमड़ी : वही सम्भावनाओं-भरा आकाश शून्य ।

स्त्री : उठो....उठो....उठो....

(सभी पात्र उठकर खड़े हो जाते हैं ।)

हम सच्चाई जान गये हैं । मुखौटे पहचान गये हैं ।

अन्य पु. : हम सच्चाई जान गये हैं । मुखौटे पहचान गये हैं ।

स्त्री : हाँ ! हम सच्चाई जान गये हैं । मुखौटे पहचान गये हैं ।

(नेता और चमचे के अतिरिक्त सभी पात्र चारों दिशाओं में—'हम सच्चाई जान गये हैं । मुखौटे पहचान गये हैं !' हवा में दोहराते हैं । अचानक एक भगदड़-सी मचती है और नेता पात्रों के हुजूम से बाहर निकलकर चमचे को आवाज देता है । इसके साथ ही चमचे के अलावा सभी पात्र अपने-अपने स्थान पर मौन हो जाते हैं ।)

नेता : चमचे ! चमचे !

(चमचा पात्रों के जमघट से निकलकर बाहर आता है । दोनों पहले ही-जैसे कठपुतलियों की तरह व्यवहार करते संवाद बोलते हैं ।)

नेता : अब क्या करें ?

चमचा : चिन्ता की कोई बात नहीं है । इन्हें सत्य की खोज और क्रान्ति के लिए संगठित होने को कहो ।

नेता : हाँ । (सभी पात्रों को सम्बोधित करता है ।

दरिन्दे

में हलचल होती है। नेता अपनी बात हरेक से उसके पास जाकर कहता है। पात्र अपनी ओर से 'हाँ' में सिर हिलाते हैं।)

तो भाइयो और बहनो!

सत्य क्या है, यह हमें जानना है। असत्य क्या है, यह हमें पहचानना है। इसके लिए जरूरत है, सत्य की खोज और क्रान्ति की। एक ऐसी क्रान्ति की जो समाज को तह से सतह तक झकझोर डाले। तो आओ, हम सब सत्य की खोज और क्रान्ति के लिए संगठित हो जायें।

(सभी पात्र 'सत्य की खोज और क्रान्ति के लिए संगठित हो जाओ' कहते, हर ओर जन-जन का आवाहन करते, अपने दोनों हाथ मशीन की तरह शून्य में फैला देते हैं। पार्श्वध्वनि। सभी पात्र अपनी-अपनी मुद्रा में जड़वत्। मौन। एकाएक नेता और चमचे का अट्टहास-भरा स्वर। दोनों सभी पात्रों को देखकर व्यंग्यपूर्ण हँसी हँसते हैं। ध्वनि-प्रभाव। दोनों जड़वत्। मौन। दार्शनिक अपने स्थान से चलकर मंच के कोने पर दर्शकों के समीप आता है। मंच पर जड़वत् खड़े पात्रों पर एक उचटती-सी दृष्टि डालता है।)

वि. दा. : एक ही क्रम की पुनरावृत्ति।
एक ही क्रम की पुन रा वृत्ति।
एक ही क्रम
(ध्वनि-प्रभाव)
(जड़वत्)
(समाप्ति-सूचक संगीत)

(परदा)

□

घरबन्द

अ. भा. प्रतियोगिता में १९७०-७१
में प्रथम पुरस्कार प्राप्त एकांकी

पात्र

१. पति। २. पत्नी। ३. बड़ा लड़का।
४. बड़ी लड़की। ५. छोटा बच्चा। ६. देवेन्द्र।

समय : सुबह सात बजे।

[परदा उठने पर—सामने बैठी पत्नी और तीनों बच्चे आपस में खुसर-फुसर कर रहे हैं। तभी जीने से पति हाथ से आँखें मलता ऊपर के कमरे से उतरता है। वह अभी सोकर उठा है। उसे देखकर पत्नी और तीनों बच्चे बिना उससे नजरें मिलाये उठकर तेज़ी से विंग्स में चले जाते हैं। वह आश्चर्य से चारों ओर देखता है।]

पति : (स्वगत) ये सब मुझे देखकर चले क्यों गये ? (आवाज देता है) रंजना, मनोज, विन्नी...न जाने क्यों चले गये सब यहाँ से उठकर। (सामने रखे सोफे पर बैठ जाता है) मैंने कहा जी, आज क्या चाय नहीं मिलेगी ?
(पत्नी का प्रवेश।)

पत्नी : (त्यौरियाँ चढ़ाकर) जी हाँ, आज चाय नहीं मिलेगी, कुछ भी नहीं मिलेगा।

पति : नहीं मिलेगी ? कुछ भी नहीं मिलेगा ? क्या मैं पूछ सकता हूँ कि चाय क्यों नहीं मिलेगी, श्रीमतीजी ?

पत्नी : कह दिया न कि नहीं मिलेगी।

पति : (विनम्र स्वर में) हे भगवान्, रक्षा करना। मैंने कहा, आज दुश्मनों की तबीयत तो ठीक है न ?

'घर बन्द' का मतलब।

पति : हूँ, 'घर बन्द'।

पत्नी : बिलकुल।

पति : (कुढ़ते हुए) 'घर बन्द'।

पत्नी : जी हाँ, 'घर बन्द'। यानी आज घर पूरी तरह से बन्द रहेगा। न कुछ खाने-पीने को बनेगा और न ही कोई काम होगा।

पति : (लम्बी साँस खींचकर) ठीक है। तो आज 'घर बन्द' है। मगर इसका कारण क्या है, आखिर ?

बड़ा लड़का : हमारी माँगें....

(माँ, बेटे, सब एक साथ चिल्लाते हैं) पूरी हों, हमारी माँगें पूरी हों। हमारी माँगें....पूरी हों।

पति : अरे, अरे, यह क्या बदतमीज़ी है। मैं कहता हूँ, क्या हो रहा है, यह सब ?

पत्नी : इस तरह हमें डाँटने-डपटने से कुछ नहीं होगा। आज 'घर बन्द' होकर रहेगा।

पति : यह क्या 'घर बन्द' 'घर बन्द' की रट लगा रखी है, तुम लोगों ने। बात समझ में तो आये कि आखिर....

पत्नी : आज हम साफ़-साफ़ कहे देते हैं, जब तक हमारी माँगें पूरी नहीं होंगी, 'घर बन्द' जारी रहेगा। क्यों ठीक है न बिट्टी ?

बड़ी लड़की : हाँ जी, हाँ।

यह क्या बदतमीज़ी है। शायद साढ़े सात से भी ज़्यादा वक्त हो गया है और तुम लोग अभी तक स्कूल

आने वाले नहीं हैं। आज तो हम अपनी माँगें मनवा कर ही रहेंगे।

पति : (आश्चर्य से) अरे, यह तू बोल रहा है। बल्लू, लगता है, तेरी माँ ने तुझे पहले से ही आज के लिए डायलॉग रटा दिये हैं।

छोटा लड़का : हमारी माँगें....

पत्नी, लड़का, लड़की : पूरी हों।

पति : मैं यह कब कहता हूँ कि मेरी चिकनी-चुपड़ी बातों में आओ। पर बैठकर शान्ति से बातें करने में कोई बुराई तो नहीं है। देखिए, आप लोगों ने अपनी माँगें मनवाने का जो ढंग अपनाया है, वह किसी भी तरह उचित नहीं है।

बड़ा लड़का : उचित नहीं है ? क्यों उचित नहीं है ? जब और जगहों पर बेकार और ऊल-जलूल बातों पर 'बन्द' हो सकता है, तो 'घर बन्द' क्यों नहीं हो सकता ? क्यों विन्नी ?

लड़की : मनोज सही कहता है। जब अपनी-अपनी उल्टी-सीधी माँगों को लेकर सब जगह 'बन्द' हो सकता है, तो 'घर बन्द' क्यों नहीं हो सकता।

पति : ठीक है, ठीक है, मगर आप लोग नहीं जानते कि इन 'बन्दों' से देश को कितना नुकसान होता है। देश के उत्पादन में कमी आती है। देश को भारी....

पत्नी : (बात काटकर) लेकिन हमारी बात तो सुनिए, हमें देश के उत्पादन....

पति : पहले मुझे अपनी बात तो पूरी कर लेने दो....इन 'बन्दों' की वजह से दफ्तर जाने वाले दफ्तर नहीं जा पाते। उनकी एक दिन की तनख्वाह मारी जाती है, अगर वे रोजनदारी पर हो तो। बच्चे स्कूल-कालेज नहीं जा पाते।

लड़का-लड़की : पूरी हों....

पति : (गुस्से में) आप लोग आखिर मुझसे चाहते क्या हैं?

पत्नी : हमारी माँगें..............

लड़का-लड़की : पूरी हों!

पति : ओह, आपकी इस नारेबाजी से तो मेरा दिमाग खराब हो जायेगा। मैं कहता हूँ, आज किसी स्कूल क्यों नहीं गये? उसके भविष्य की भी कोई चिन्ता है?

पत्नी लड़का-लड़की : हमारी माँगें....पूरी हों!

पति : तो यह जवाब हुआ, मेरे सवाल का....माँगें पूरी हों। (पति परेशान-सा होकर सोफ़े पर बैठ जाता है। तभी सोफ़े के पीछे से छोटा बच्चा बल्लू चिल्लाता हुआ निकलता है—हमारी माँगें....पूरी हों। पति चौंककर उठता है। परिस्थिति को समझने की कोशिश करता हुआ बल्लू को अपने पास बैठा लेता है।)

पति : (विषय बदलता हुआ) अरे भाई, आओ बल्लू, कल रात हम तुम्हारे लिए ढेर सारी मीठी-मीठी मिठाई की गोलियाँ लाये हैं। तुम तो रात बहुत जल्दी सो गये थे।

छोटा लड़का : पिताजी, आज हम आपकी मीठी-मीठी बातों में आनेवाले नहीं हैं।

पति : हूँ? अरे

पति : अच्छा भई, मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ। मुझसे ग़लती हुई। अब कृपा कर अपने इस जुलूस, मेरा मतलब है, इन बच्चों को थोडी देर के लिए बाहर भेज दीजिए। हम दोनो बैठकर माँगों पर बात कर लेते हैं। इस तरह नारे लगाने से पडोसी क्या समझेंगे ? इन बच्चो को तैयार करके स्कूल भेजो।

छोटा लड़का और लड़की : हम आज स्कूल नही जायेंगे।

पति : अच्छा, बाबा अच्छा। पढ़ने नही जाना तो न जाओ। हमें तुम्हारी माँ से माँगों के बारे में तो बात कर लेने दो।

बडा लड़का : नही, हम हमेशा की तरह इस बार भी आपको माँ को फोडने नही देंगे।

लड़की : आप अकेले में माँ को डरा-धमकाकर अपनी तरफ कर लेंगे।

छोटा लड़का : नही, हम बिना अपनी माँगें मंज़ूर कराये, यहाँ से नहीं हटेंगे।

पत्नी : जबतक हमारी सारी माँगें पूरी नहीं हो जाती, 'घर बन्द' जारी रहेगा और ये भी यहाँ से नहीं हटेंगे।

पति : मैं कहता हूँ, आपकी इस नारेबाज़ी और चीख-चिल्लाहट से न तो आप मेरी बात समझ सकेंगे और न मैं आपको। मैं आपकी सारी माँगों पर विचार करने के लिए तैयार हूँ, लेकिन आप मुझे इसका मौका तो दें। मुझे आपके साथ सहानुभूति है।

पत्नी : तो फिर देर किस बात की है ?

पति : मेरा आप सबसे यही अनुरोध है कि आप सब यहाँ से पास के कमरे में चले जायें और एक-एक करके आयें और मुझे अपनी माँगें बतायें।

बीमारों को दवा नहीं मिल पाती और....

बड़ा लड़का : आप तो राष्ट्रीय स्तर की बात कर रहे हैं, पिताजी, और हमारा बन्द तो स्थानीय स्तर का है—यानी 'घर बन्द' है।

पति : यही तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि 'बन्द' कैसा भी हो, हर हालत में बुरा है। उससे नुकसान होता है। अब इस 'घर बन्द' को ही लीजिए। आप लोगों ने 'घर बन्द' किया। कितना नुकसान हुआ है, इससे घरवालों को।

पत्नी : आप भाषण तो बहुत अच्छा दे लेते हैं।

पति : शुक्रिया।

बड़ा लड़का : हम सब यह सुनने के लिए तैयार नहीं, पिताजी।

पति : लेकिन तुम्हें यह तो मानना ही पड़ेगा कि इस 'घर बन्द' से घर का कितना ज्यादा नुकसान हुआ है। सुबह दूध आया होगा, वह बेकार पड़ा है। बच्चे स्कूल नहीं गये। इससे पढ़ाई का हर्ज होगा।

छोटा लड़का : पिताजी, आप हमारी पढ़ाई की बात रहने दें। आप तो अपनी चिन्ता कीजिए।

पति : मैं भी दफ्तर नहीं जा पाऊँगा। इससे मेरी एक दिन की छुट्टी मारी जायेगी। यह छुट्टी मैं आप लोगों के साथ घूमने या पिकनिक मनाने के लिए ले सकता था। घर में खाना नहीं बनेगा, तो बाहर खाना पड़ेगा, जो बहुत महँगा पड़ेगा। इससे घर का बजट बिगड़ेगा।

पत्नी और बड़ा लड़का : हम आपका भाषण सुनना नहीं चाहते। हमारी माँगें....

सब : पूरी हों।

पति : आखिर यह क्या बकवास है?

पत्नी : आप हमारी माँगों को बकवास कह रहे हैं? देखिए, आप अपने शब्दों को वापस ले लीजिए वरना कहे देती हूँ....

पति : अच्छा भई, मैं अपने शब्द वापस लेता हूँ। मुझसे ग़लती हुई। अब कृपा कर अपने इस जुलूस, मेरा मतलब है, इन बच्चों को थोड़ी देर के लिए बाहर भेज दीजिए। हम दोनों बैठकर माँगों पर बात कर लेते हैं। इस तरह नारे लगाने से पड़ोसी क्या समझेंगे? इन बच्चों को तैयार करके स्कूल भेजो।

छोटा लड़का और लड़की : हम आज स्कूल नहीं जायेंगे।

पति : अच्छा, बाबा अच्छा। पढ़ने नहीं जाना तो न जाओ। हमें तुम्हारी माँ से माँगों के बारे में तो बात कर लेने दो।

बड़ा लड़का : नहीं, हम हमेशा की तरह इस बार भी आपको माँ को फोड़ने नहीं देंगे।

लड़की : आप अकेले में माँ को डरा-धमकाकर अपनी तरफ़ कर लेंगे।

छोटा लड़का : नहीं, हम बिना अपनी माँगें मंजूर कराये, यहाँ से नहीं हटेंगे।

पत्नी : जबतक हमारी सारी माँगें पूरी नहीं हो जातीं, 'घर बन्द' जारी रहेगा और ये भी यहाँ से नहीं हटेंगे।

पति : मैं कहता हूँ, आपकी इस नारेबाज़ी और चीख़-चिल्लाहट से न तो आप मेरी बात समझ सकेंगे और न मैं आपकी। मैं आपकी सारी माँगों पर विचार करने के लिए तैयार हूँ, लेकिन आप मुझे इसका मौक़ा तो दें। मुझे आपके साथ सहानुभूति है।

पत्नी : तो फिर देर किस बात की है?

पति : मेरा आप सबसे यही अनुरोध है कि आप सब यहाँ से पास के कमरे में चले जायें और एक-एक करके आयें और मुझे अपनी माँगें बतायें।

बड़ा लड़का : और अगर आपने हममें से किसी को डराया-धमकाया या हममें आपस में किसी तरह फूट डालने की कोशिश की तो.... ?

पति : तो आप लोगों के जो जी में आये, मेरे खिलाफ़ करना।

पत्नी : बोलो मनोज, क्या कहते हो ?

बड़ा लड़का : प्रस्ताव मेरे विचार से तो बुरा नहीं है। क्यों विन्नी ?

लड़की : मैं तुमसे सहमत हूँ। क्यों बब्लू, तुम क्या कहते हो ?

छोटा लड़का : जब आप सब इस बात पर सहमत हैं, तो मैं भी आपसे सहमत हूँ।

पति : (खुश होकर) यह हुई न कोई बात। अच्छा अब आप सब बाहर चले जाइए। और एक-एक करके आइए।

(सब चले जाते हैं। पति अकेला मंच पर इधर-उधर कुछ सोचता-सा टहलने लगता है।)

पति : अपनी एक अदद पत्नी और तीन अदद बच्चों को आज इस मूड में देखकर अपनी भलाई इसी में नजर आती है कि पहले ठण्डे दिमाग से इनकी माँगें सुन ली जायें, फिर उसके बाद....

(पत्नी का प्रवेश।)

पति : आइए, आइए, श्रीमतीजी। फरमाइए। आपको क्या शिकायत है, मुझसे ?

पत्नी : (त्यौरियाँ चढ़ाकर) शिकायत ?

पति : मेरा मतलब है, आपकी माँगें क्या हैं ? हाँ, पहले एक छोटी-सी अर्ज मेरी भी सुन लीजिए। अगर इस वक़्त एक कप चाय मिल जाये तो सोचने-समझने की ताक़त आ जाये। आप तो जानती ही हैं, चाय मेरे लिए....

पत्नी : जी नहीं। आपको चाय-वाय कुछ नहीं मिलेगी। पहले आपको हमारी माँगें माननी होंगी।

पति : (मुसकराते हुए) कोई जबरदस्ती है, जो माननी ही पड़ेगी....!

पत्नी : देखिए, आप धमकाने की कोशिश कर रहे हैं। आपने तो अभी सबके सामने वादा किया था कि आप किसी को डरायें-धमकायेंगे नहीं। क्या मैं सबको बुला लूं (मनोज को आवाज देने ही लगती है कि पति बोल पड़ता है।)

पति : अरे यह क्या गज़ब करती हो। बड़ी मुश्किल से तो अभी भेजा है। ऐसा मत करना। अच्छा यहां आराम से बैठकर अपनी माँगें बताओ।

पत्नी : सुनिए और अपनी नोटबुक में नोट करते जाइए।

पति : जी नहीं, मुझे नोट करने की जरूरत नहीं है। मेरी याद-दाश्त आपकी जैसी नहीं है।

पत्नी : देखिए, आप तानाकशी कर रहे हैं और इस तरह अनड्यू इनफ्लुएंस इस्तेमाल कर रहे हैं।

पति : मैं तो सिर्फ यह कह रहा हूँ कि मुझे अपनी याददाश्त पर भरोसा है।

पत्नी : तो सुनिए, मुझे हर महीने एक साड़ी, एक ब्लाउज, एक पेटीकोट और इन सबसे मैच करती हुई चप्पल आनी चाहिए। इतवार की शाम को घर में खाना नहीं बनेगा। हम दोपहर को पिक्चर देखेंगे और शाम को खाना किसी होटल में खाया करेंगे।

पति : ऐसा क्यों ?

पत्नी : जब दफ्तर के कर्मचारियों तक को सप्ताह में एक दिन की छुट्टी मिलती है, तो क्या हमें एक वक्त की छुट्टी भी न मिले।

पति : ठीक है। और ?

' हर तीसरे महीने मैं अपने मायके जाया करूँगी। आप हर

बार की तरह झूठे बहाने बनाकर आधी नहीं झुठला लिया करेंगे।

पति : और ?

पत्नी : आप रात को आठ से पहले हर हालत में घर आ जाया करेंगे। अकेले दोस्तों के साथ पिक्चर नहीं देखेंगे। किसी दोस्त के घर अकेले नहीं जायेंगे, मुझे भी साथ लेकर जायेंगे। जब भी मुझे अपनी किसी सहेली के घर जाना होगा, तो आप मुझे वहाँ छोड़कर और फिर वहाँ से लेकर आयेंगे।

पति : बहुत खूब। और ..?

पत्नी : और अभी सुनते जाइए।

पति : आप कहती रहिए। क्या मैं सिगरेट पी सकता हूँ? (माचिस तलाश करता है) ओह, आज सुबह से एक सिगरेट भी तो नहीं पी। क्या आप माचिस ला देंगी?

पत्नी : जी नहीं। माचिस रसोई में है और रसोई बन्द है, क्योंकि आज 'घर बन्द' है।

पति : अच्छा तो फिर अपनी माँगें आगे बताइए।

पत्नी : (याद करती हुई) हाँ, याद आया। मैं यह तो भूल ही गयी थी। जब कोई सहेली मेरे घर आयेगी, तो आप उसकी आवभगत में किये गये खर्च की निन्दा नहीं करेंगे। जब मैं किसी पड़ोसी से बातचीत कर रही होऊँ, तो आप बीच में डिस्टर्ब नहीं करेंगे।

(बड़े लड़के का प्रवेश।)

बड़ा लड़का : सब सरकारी नौकरों का मँहगाई भत्ता बढ़ गया है, आपका भी बढ़ा है। इसलिए हमारा जेब-खर्च भी उसी अनुपात से बढ़ना चाहिए। कॉलेज जाना या न जाना हमारी मर्जी से होगा। आप जोर-जबरदस्ती नहीं करेंगे।

हम पढ़ना-लिखना बन्द कर कॉलेज में हड़ताल करेंगे और तोड़फोड़ की कार्रवाई करेंगे। कॉलेज से हमारे खिलाफ़ कोई रिपोर्ट आयेगी, तो आप उस पर कोई कार्रवाई नहीं करेंगे। यह कभी नहीं पूछेंगे कि किताबें खरीदने के लिए दिये गये पैसों की किताबें कहाँ हैं।

(और सोचने लगता है।)

पति : जी हाँ, आगे कहिए....और.. ?

बड़ा लड़का : हम घर से कब जाते हैं और कब आते हैं, कौन-कौन हमारे दोस्त हैं, हम कहाँ जाते हैं, वग़ैरह, वग़ैरह के बारे में आप कभी कुछ भी नहीं पूछेंगे। यानी हम पूरी स्वतन्त्रता चाहते हैं। फुल लिबर्टी वी वाण्ट।

(लड़की का प्रवेश।)

बड़ी लड़की : हम चाहे जितनी पिक्चर देखें, चाहे कैसी ही पिक्चर देखें, आप इसके बारे में कुछ नहीं पूछेंगे, हम अपनी मर्जी के उपन्यास और पत्रिकाएँ पढ़ेंगे।

पति : बस, बिटिया रानी। क्या तुम्हारी सिर्फ़ दो ही माँगें हैं?

बड़ी लड़की : नहीं, अभी और हैं। हमें याद करने दीजिए।

पति : ठीक है। याद कर लो।

बड़ी लड़की : हमें हर महीने नये डिज़ाइन के कपड़े सिलवाये जायें। चुस्त पोशाक पहनने पर आप भविष्य में नाक-भौं नहीं सिकोड़ेंगे और न ही इसके लिए हमें बुरा कहेंगे। सबको धूप के चश्मे दिलवाये जायेंगे। अगर हम 'फ़ॉर अडल्ट्स ओनली' वाली फ़िल्म देखने जायें, तो आप मना नहीं करेंगे।

(छोटे बच्चे का प्रवेश)

छोटा लड़का : हम भी स्कूल पैदल नहीं जायेंगे। रिक्शे में जायेंगे। और दस पैसे रोज की बजाय बीस पैसे रोज जेब-खर्च लेंगे,

महँगाई बहुत बढ़ गयी है न।

पति : अच्छा भई, अच्छा। मैंने आपकी माँगें सुन लीं। अब मुझे इस पर विचार करने के लिए कुछ समय दीजिए। मेरे विचार से एक सप्ताह का समय—

पत्नी : नहीं, हम इन चक्करबाजों में नहीं आने के। हमें आज ही फ़ैसला चाहिए। बिना जवाब मिले न तो हम यहाँ से हटेंगे और न ही हड़ताल तोड़ेंगे।

पति : यह सब नहीं चलेगा। आप लोगों की माँगों पर विचार करने के लिए मुझे समय तो चाहिए ही।

पत्नी : नहीं, समय हरगिज़ नहीं मिलेगा। हमें अपनी माँगों का जवाब अभी चाहिए।

पति : यह तो अल्टीमेटम है। सरासर ज़्यादती है।

पत्नी : जो भी हो....

पति : और अगर मैं अभी आप लोगों की माँगें न मानूँ तो?

बड़ा लड़का : तो 'घर बन्द' जारी रहेगा। आपका तुरन्त घेराव किया जायेगा।

छोटा लड़का : मम्मी, मुझे तो भूख लगने लगी है।

पत्नी : बस बेटे, थोड़ी ही देर की बात और है। अपनी माँगें मंजूर हुईं और 'घर बन्द' टूटा। हाँ, तो शुरू हो जाओ— हमारी माँगें ...

सब बच्चे : पूरी हों। हमारी माँगें—पूरी हों।

छोटा लड़का : हमारी माँगें फौरन मानो, वरना हम तोड़फोड़ की कार्रवाई शुरू करते हैं। बोलो—हमारी माँगें........

सब : पूरी हों!

पति : सुनिए, सुनिए। देखिए, इस नारेबाजी से आपका ही नुकसान होगा।

बड़ा लड़का और पत्नी : होने दो जी, होने दो।

बड़ी लड़की : मेरी सारी माँगें उचित हैं। पिताजी के विचार दक़ियानूसी हैं। इसलिए मानने में आना-कानी कर रहे हैं।

बड़ा लड़का : तुमसे ज्यादा उचित मेरी खुद की माँगें हैं।

बड़ी लड़की : तुम्हारी सारी माँगें उचित नहीं हैं।

बड़ा लड़का : तेरी भी सारी माँगें उचित नहीं हैं।

बड़ी लड़की : हैं।

बड़ा लड़का : नहीं हैं।

(लड़का और लड़की अपनी-अपनी बातें ज़ोर-ज़ोर से कहने लगते हैं। 'हैं, नहीं हैं' का अच्छा-खासा शोर होने लगता है।)

पत्नी : अगर हम इस तरह आपस में लड़ने लगे, तो 'घर बन्द' असफल हो जायेगा।

(शोर जारी रहता है।)

पति : (स्वयं से) आज पहली बार जीवन में परिवार-नियोजन का महत्त्व समझ में आया है। न कम्बख्त इतने बच्चे होते और न आज इनकी ये ऊल-जलूल बातें सुननी पड़ती। (बच्चों से) सुनिए, सुनिए। मैं आपकी माँगों का जवाब देने के लिए तैयार हूँ। आप बिलकुल चुप हो जाइए।

पत्नी : हाँ, यह ठीक है।

बड़ा लड़का : दैट्स राइट।

बड़ी लड़की : यह हुई न कोई बात।

पति : तो सुनिए, श्रीमती जी ! जहाँ तक आपको हर महीने नये डिज़ाइन की साड़ी, ब्लाऊज़, उनसे मैच करते रंगों की चप्पलें आदि लाने की माँग की बात है, मुझे खेद है कि

देना होगा।

बड़ा लड़का : शेम, शेम, शेम!

पति : मैं एक बात जरूर कहना चाहता हूँ। मैं अपने बच्चों से पूरे अनुशासन की आशा करता हूँ।

छोटा लड़का : और मेरी माँग का क्या हुआ?

पति : रिक्शे में स्कूल जाने की माँग मंजूर नहीं की जा सकती। जेब खर्च की रकम बढ़ाने पर विचार किया जायेगा।

बड़ा लड़का : विचार किया जायेगा....आपकी खुद की मँहगाई पिछले दो सालों में तीन बार बढ़ी है, जब कि हमारे जेबखर्च की रकम पिछले तीन साल से वही चली आ रही है।

पति : मैं इसके बारे में गम्भीरता से विचार करूँगा।

बड़ा लड़का और लड़की : हमारी बाकी माँगें, उनका क्या होगा?

पति : आपकी वे सारी माँगें जिनमें कोई फ़ाईनेनिशयल इम्प्ली-केशन्स नहीं है, मुझे सिद्धान्त रूप में स्वीकार हैं। हाँ, मार्च के आखिर में अगले वर्ष का बजट बनाते समय, मैं उन पर फिर से विचार कर लूँगा। अब मैं आप सबसे अनुरोध करता हूँ कि आप कृपया 'घर बन्द' आन्दोलन वापस ले लें, क्योंकि घर की आर्थिक स्थिति और यह विरोधी दल के नेता से छिपा नहीं है कि चाय के बिना [illegible] हालत होती है।

[illegible] से सन्तुष्ट नहीं हैं। उसमें कोई नवीनता [illegible] जारी रखेंगे।

[illegible] तब तक जारी रहेगा जब तक कि [illegible] की जाती। हमारी माँगें

पति : अरे रे रे, सुनने तो दो, बाहर कौन दरवाज़ा खटखटा रहा है। देखना कौन है?

पत्नी : मैं दरवाज़ा खोलने नहीं जाऊँगी। आज 'घर बन्द' है।

बड़ा लड़का, लड़की और छोटा लड़का : हम भी 'घर बन्द' चालू रहने तक आपकी किसी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे, हमारी माँगें....

सब : पूरी हों।

(दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ बदस्तूर आती रहती है।)

पति : (चिढ़कर) अजीब बात है। (ज़ोर से) अरे भई, कौन है? (बाहर से आवाज़ आती है—'मैं हूँ, देवेन्द्र। जीजाजी, दरवाज़ा खोलो।' इसके साथ ही शान्ति हो जाती है।)

पत्नी : (खुश होकर) अरे, देवेन्द्र आया है।

बड़ा लड़का, लड़की और छोटा लड़का : कौन? मामाजी हैं। मामाजी आ गये, मामाजी आ गये। (सब दरवाज़ा खोलने दौड़ पड़ते हैं।)

पत्नी : (देवेन्द्र के साथ अन्दर मंच पर आती हुई।) देवेन्द्र, *तुमने तो चिट्ठी तक नहीं दी कि तुम आज आ रहे हो।*

देवेन्द्र : नमस्ते जीजाजी।

पति : नमस्ते, नमस्ते। आओ भई, देवेन्द्र।

देवेन्द्र : जीजाजी, आज मुझे अचानक एक इण्टरव्यू के सिलसिले में यहाँ आना पड़ा। इसलिए आप लोगों को अपने आने की सूचना ही नहीं दे सका। कुशल तो है, जीजाजी, ये....

पत्नी : सब कुशल है, भैया, देवेन्द्र।

देवेन्द्र : (सबको इकट्ठा देखकर आश्चर्य से) पर आप एक जगह इस तरह इकट्ठे क्यों खड़े हैं? आज ये बच्चे स्कूल क्यों

नहीं गये ? आज....क्या कोई खास बात है ?

पति : अरे भई, कुछ न पूछो, देवेन्द्र। आज तुम्हारी जिज्जी ने घर में हड़ताल कर दी है।

देवेन्द्र : हड़ताल ?

पति : हाँ भई, 'घर बन्द' है और ये लोग मेरा घेराव करने जा रहे हैं।

देवेन्द्र : वजह ?

पति : वजह, तो कुछ नहीं। बस 'घर बन्द' होना था, इसलिए हो गया। मौत, बन्द, हड़ताल का आजकल कारण नहीं बताना होता।

देवेन्द्र : तो भई मैं चला यहाँ से। मैं तो बहुत ग़लत वक्त पर आ गया यहाँ। मैं तो किसी होटल में जाकर ठहर जाऊँगा। (उठकर चलने लगता है।)

पत्नी : भैया देवेन्द्र, तुम कहाँ चले ? चलो, ऊपर चलकर नहा-धोकर कपड़े बदलो। मैं तुम्हारे लिए अभी चाय-नाश्ता बनाकर लाती हूँ।

पति : पर श्रीमतीजी, आज तो 'घर बन्द' है।

पत्नी : तुमसे चुप नहीं रहा जाता (बच्चों से) मनोज, बिन्नी, बब्लू, तुम लोग झटपट स्कूल जाने के लिए तैयार हो जाओ। मैं अभी तुम्हारा नाश्ता तैयार करती हूँ।

(बच्चे कपड़े बदलने चले जाते हैं।)

पति : बहुत अच्छे समय पर आये, देवेन्द्र बाबू ! तुम्हारे यहाँ आने से एक बहुत बड़ा संकट टल गया।

पत्नी : क्या कहा ? संकट टल गया ? मैं कहे देती हूँ। आपको न तो चाय मिलेगी और न नाश्ता।

(पत्नी सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर जाने लगती है। पति अपनी कुरसी पर बैठा-बैठा नीचे झुकने लगता है, मानो

उसे कोई दौरा पड़ा हो।)

देवेन्द्र : जीजाजी, आपको यह क्या हो रहा है ? जिज्जी, जीजाजी को देखना।

पति : (गिरी हुई धीमी आवाज़ में) इन लोगों ने मेरा दिल तोड़ दिया है। मुझे दिल का दौरा........

देवेन्द्र : यानी हॉर्ट अटैक ! जिज्जी देखना, जीजाजी को क्या हो गया ? दौड़ना जिज्जी।

(पत्नी भागी हुई आती है।)

पत्नी : देवेन्द्र, तुम जल्दी से डॉक्टर को बुलवाओ। (रुआँसी होकर) न जाने इन्हें क्या हो गया ? मैंने तो 'घर बन्द' करने की बस धमकी ही दी थी। सचमुच मेरा इरादा 'घर बन्द' करने का नहीं था।

देवेन्द्र : सच कहती हो, जिज्जी ? यानी कि तुमने जीजाजी के सामने जो कुछ किया वह महज़ एक नाटक था।

पत्नी : देवेन्द्र, तेरी सौगन्ध खाकर कहती हूँ। मैंने वह सब नाटक ही किया था। घर की स्थिति क्या मेरे से छिपी थोड़े ही है।

देवेन्द्र : लेकिन जिज्जी, जीजाजी तुम्हारे इस नाटक को सच मान गये।

पत्नी : पर वह तो नाटक ही था।

पति : (सीधा उठकर) तो मुझ पर भी कौन-सा सचमुच दिल का दौरा पड़ा था, श्रीमती जी ! वह नाटक था, तो यह भी नाटक है।

पत्नी : आप बड़े वो हैं। मैं तो एकदम घबरा गयी थी।

पति : और तुम कौन-सी कम हो।

(सबकी हँसी के बीच परदा)

□

दरिन्दे

दूसरा पक्ष

अ. भा. प्रतियोगिता में १९७२-७३ में
प्रथम पुरस्कृत एकांकी

इतने गिरे हुए इनसान हो। लेकिन मैं इतनी नादान नहीं हूँ, जो अपना भला-बुरा न सोच सकूँ। मेरी माँ नहीं है। पर डैडी को मैं सब कुछ साफ़-साफ़ बता दूँगी। यह भी कि तुम एक धोखेबाज़ इनसान हो।

तुम हँस रहे हो। खूब हँसो। लेकिन सोचो, एक छोटी-सी भूल की इतनी बड़ी क़ीमत माँग रहे हो। कुछ पत्र लौटाने की क़ीमत दस हज़ार। मेरे भविष्य के साथ खिलवाड़ करके आखिर तुम्हें क्या मिलेगा? बोलो विशन, बोलो!

(विशन के ठहाकों के साथ प्रकाश लुप्त हो जाता है। मंच पर फिर अँधेरा और अचानक मंच के दायें कोने में दीनदयाल का चेहरा आलोकित होता है।)

दीनदयाल : जी हाँ, मैं ही वकील दीनदयाल हूँ—लीला का डैडी! क्या हो गया है, दुनिया को....सब अकेले-अकेले अपने ही लिए जीना चाहते हैं। दूसरे को किसी को फ़िक्र ही नहीं रह गयी है। हर तरफ़ अँधेरा ही अँधेरा है।....(उपयुक्त संगीत, प्रकाश लुप्त हो जाता है। अँधेरे में विशन की तेज़ चीख सुनाई देती है और प्रकाश मंच के बायीं ओर मोती के चेहरे पर जम जाता है, जो पसीने से भरा हुआ है।)

मोती : (मानो किसी अदालत में बयान दे रहा हो) मेरा नाम मोती है। उमर २१ साल। माँ का नाम जमना। बाप का नाम नामालूम। पेशा, गुण्डागर्दी, जो शुरू में शौक था, फिर धीरे-धीरे आदत बना और अब तो धन्धा हो गया है। आज हर आदमी मुझे गुण्डा कहता है। आप शायद सोच रहे होंगे, मैंने बाप का नाम नामालूम क्यों कहा? मैं तो बस इतना ही जानता हूँ कि जब मैंने होश

दरिन्दे

सँभाला, तो जाना, मैं पाप की औलाद हूँ और इस कचहरी के बड़े वकील दीनदयालजी को अपना पिता कह सकता हूँ। जब मैं सात साल का था, मेरी माँ मर गयी। सुना था, माँ दीनदयालजी के घर का काम करती थी। एक दिन उनकी पत्नी ने उसे घर से निकाल दिया। माँ अलग रहने लगी। बचपन की बात आज तक याद है— दीनदयालजी अकसर हमारे घर आते थे। माँ को हर तरह से तसल्ली देते रहते थे। तभी माँ ने बताया था, मैं उन्हें अपना पिता कह सकता हूँ। माँ के मरने के बाद वह जब भी मुझसे मिले तो यहीं इसी कचहरी में। उन्होंने कई बार मेरी जमानत ली है। पर एक बात साफ़ है। दीनदयालजी को यह कभी अच्छा नहीं लगा कि मैं उन्हें अपना पिता कहूँ। कौन किसकी करतूत के लिए ज़िम्मेदार है, यह मैं क्या जानूँ? मैं तो अपनी तरफ़ से यही कह सकता हूँ, मुझे अपने धन्धे में बड़ा सुख मिलता है। (संगीत। मोती का चेहरा धीरे-धीरे अन्धकार में विलीन हो जाता है और फिर मंच पर एकदम अँधेरा।)

(धीरे-धीरे मंच आलोकित होता है। ड्राइंग रूम में दीनदयाल बेचैनी से इधर-उधर टहल रहे हैं। सामने सोफे पर शीला बैठी है। सन्नाटा। घड़ी की टिक-टिक की आवाज़। वाल-क्लॉक में दस बजते हैं।)

शीला : विशन अभी तक नहीं आया, डैडी! दस बज रहे हैं रात के। उसने तो सात बजे तक ज़रूर आने के लिए कहा था।

दीनदयाल : तुमसे भी सात बजे शाम के लिए कहा था?

शीला : हाँ, डैडी! उसे अब आ जाना चाहिए।

दीन : क्या कहा था, उसने?

शीला : यही कि मैं तुम्हारे डैडी से बात करने के लिए सात बजे

साँप को जरूर मारेगा...ब्लैकमेलर! लोफर! बेगैरत!

दीन : यह बरसों की बात है न ?

शीला : आखिर भी तो बरसों ही तो मिला था। कुछ दिन और दे राज खुले।

दीन : राज ?

शीला : क्यों, राज के नाम पर क्या आप सोचने लगे, डैडी ?

दीन : मैं सोच रहा था, सोच रहा था मैं....

शीला : क्या ?

दीन : कुछ नहीं। हाँ। यही कि उसने पहले तो धोखा दिया तुम्हें। फिर हमसे ही उसका मुआवजा माँग रहा है। कुछ पत्र लौटाने की कीमत दस हजार।

शीला : मैं नहीं जानती थी डैडी, विजय एक ब्लैकमेलर है।

दीन : ऐसे ब्लैकमेलर से मुझे खूब निपटना आता है। बड़ा होशियार समझता है अपने को। तुमने पहले मुझसे कभी जिक्र नहीं किया वरना ऐसी नौबत....

(कॉलबेल बजती है।)

शीला : वह आ गया, डैडी! मैं नीचे जाकर दरवाजा खोलती हूँ।

दीन : ठहरो। मैं खुद भी तुम्हारे साथ चलता हूँ।

शीला : आइए।

दीन : नहीं। तुम ही जाओ। मैं यहीं बैठता हूँ। (शीला चली जाती है। दीनदयाल बैठते नहीं। परेशानी में इधर-उधर घूमते रहते हैं। शीला के दरवाजा खोलने की आवाज आती है और उसके बाद शीला और आगन्तुक का वार्तालाप सुनाई देता है।)

शीला : कौन ? कौन हो तुम ? क्या बात है ? यहाँ किसलिए आये

कर दिये !

शीला : जी, वो....

मोती : और आनेवाला था कोई ?

शीला : जी, वो....

मोती : मुझे देखकर डर गयी या...?

शीला : नहीं, नहीं तो। आप अन्दर आइए। आइए न। आपको डैडी से काम है ? वह अन्दर हैं। आपका नाम ?

मोती : मोती मेरा नाम है, इस घर की नौकरानी जमना का बेटा।

शीला : कौन जमना ?....अच्छा हाँ, याद आया। लेकिन वह तो कब की मर गयी। मैंने उसे छुटपन में देखा था। मैं वकील साहब की लड़की शीला हूँ। उनकी इकलौती बेटी।

मोती : इकलौती बेटी ! हूँ ! मुझे भी कुछ-कुछ याद आता है कि हम दोनों यहीं एक साथ बचपन में खेले हैं। इसी बँगले में। इस बँगले के लॉन में। इस बँगले में कुछ अपनापन दिखता है मुझे।

शीला : लेकिन आप बाद में कभी यहाँ नहीं आये ?

मोती : आया तो नहीं, बस बाहर से इस बँगले को देखता रहा हूँ।

शीला : आइए, आपको डैडी से मिलवाऊँ।

मोती : चलिए।

(दोनों मंच पर आते हैं)

दीन : कौन ? मोती ! तुम !

मोती : मुझे देखकर आपको....

दीन : आज कैसे रास्ता भूल गये ? बैठो।

मोती : बैठ जाऊँ ?

दीन : हाँ भई, बैठ जाओ। आज गैरों की तरह इजाजत क्यों माँग रहे हो ? इनसे मिलो, यह है मेरी बेटी, शीला।

मोती : इन्होंने अभी नीचे बताया था।

मोती : देवेन्द्रकुमार होगा। मैंने उनका नाम जल्दी में पढ़ा था।
दीन : पढ़ा था? कहाँ?
मोती : चिट्ठी में।
दीन : चिट्ठी में? किसकी चिट्ठी में?
मोती : यह बाद में बताऊँगा मैं। मुझे आपसे एक जरूरी बात करनी है।
दीन : कोई कानूनी राय लेनी है?
मोती : हाँ।
दीन : क्या फिर कोई जुर्म किया है तुमने?
मोती : हाँ, मैंने एक आदमी का खून कर दिया है।
दीन : खून!
मोती : हाँ। उसने मेरी इज्जत पर हाथ मारा था।
दीन : *इज्जत? तुम्हारी इज्जत। कोई दूसरा मजाक करो। वैसे इतना मैं बता दूँ कि मजाक करना या सुनना मुझे अच्छा नहीं लगता आजकल।*
मोती : एक आवारा की कोई इज्जत नहीं होती?
दीन : तुम्हारे जैसे पेशावर अपराधी की नजर में भी इज्जत की कोई वुकत है?
मोती : है। और पाप की भी।
दीन : बड़ी अजीब-सी बात है।
मोती : आपको जरूर अजीब लग रही होगी यह बात। मैं तो इतना जानता हूँ वकीलसाहब, कि हर शरीफ आदमी के दिल में कहीं कोई जानवर छुपा बैठा रहता है, जो मौका मिलते ही बाहर निकल आता है। ठीक इसी तरह हर बदमाश, आवारा के दिल में कहीं कोई इनसानियत की किरण जरूर होती है, जो सही वक्त पर फूट निकलती है, खासतौर पर ऐसे मौकों पर जब शरीफ आदमियों को

तमाम प्रकार से पूरी होती है।

दीन : बड़ी समझदारी की बातें कर लेते हो। लेकिन मुझे अफसोस है, ऐसी बातें करने के लिए यह वक्त नहीं है। हाँ, तो तुमने खून किया है। मुझे एक-एक बात साफ़ बात बताओ कि खून किस तरह हुआ। मैं तुम्हारे बचाव की पूरी कोशिश करूँगा। पर यह सब-कुछ मैं बातें धीरे से करनी चाहिए।

मोती : तो आपको भी डर लगता है, खून से? हर शरीफ आदमी दो बातों से डरता है, एक तो खून से और दूसरे दुश्मन से।

दीन : शायद अभी तुम होश में नहीं हो मोती?

मोती : मेरे होश-हवास बिलकुल ठीक हैं। आज तो मैंने पी भी नहीं है।

दीन : फिर ऐसी बहकी-बहकी बातें क्यों कर रहे हो?

मोती : आप इन्हें बहकी-बहकी बातें मानते हैं। मैं तो जीवन का निचोड़ बता रहा हूँ।

दीन : इसके लिए यह सही वक्त नहीं है, मैंने कहा। तुम मुझे यह बताओ कि क्या तुम मनसुख को जानते थे?

मोती : वह मेरी टोली का आदमी था।

दीन : धन्धा क्या करता था?

मोती : बड़े घरों की कुँआरी लड़कियों को फँसाना, उनसे अपने साथ प्रेम-पत्र लिखना, फिर उन्हें ब्लैकमेल करके उनसे पैसा ऐंठना—यही उसका धन्धा रहा है। वह जँचता भी खूब था—एकदम फ़िल्मी हीरो।

दीन : तुमने वहाँ कोई सबूत तो नहीं छोड़ा?

मोती : उसकी पतलून की जेब में कुछ चिट्ठियाँ थीं।

दीन : वहाँ पुलिस के हाथ लग गयीं तो........

मोती : असली खूनी पकड़ा जायेगा। इसलिए मैंने उसकी जेब से

सारी चिट्ठियाँ निकाल लीं।

दीन : कहाँ हैं वे चिट्ठियाँ ?

मोती : सब जला दीं मैंने।

दीन : बड़ा अच्छा किया। सारी प्रोब्लम सॉल्व हो गयी।

(शीला का प्रवेश।)

शीला : चाय लीजिए। आप लीजिए, डैडी!

मोती : यहाँ रख दो। शीला, बैठो।

शीला : थैंक्यू। (पॉज़) वह अभी तक नहीं आया, डैडी।

दीन : मालूम नहीं क्या हुआ उसे।

मोती : कौन आनेवाला था ?

दीन : शीला का मित्र।

मोती : कॉलिज का साथी होगा।

दीन : नहीं।

शीला : हाँ। (पॉज़) आपके कुरते पर चाय गिर गयी, डैडी! ठहरिए मैं साफ कर दूँ।

दीन : तुमसे साफ नहीं होगी। वैसे भी यह कुरता मैला हो गया है।

मोती : पक्के रंग पर कोई निशान दिखाई नहीं देता। (व्यंग्य भाव)

शीला : यह तो बताया ही नहीं, आपने कि काम क्या करते हैं आप ?

मोती : अगर वकील साहब के शब्दों में कहूँ, तो शरीफ़ों-जैसा कोई काम नहीं करता मैं। वैसे यह जानते हैं, मेरा पेशा आवारागर्दी है। तुम्हारे लिए इतना ही जान लेना काफ़ी है।

शीला : बड़े दिलचस्प हैं आप!

मोती : वकील साहब, एक बात तो आपने बतायी ही नहीं।

शीला उम्र में मुझसे बड़ी है या छोटी ?

दीन : छोटी है।

शीला : आप लोग शायद जरूरी बातें कर रहे थे, मैंने आपको डिस्टर्ब तो नहीं किया ?

दीन : नहीं। नहीं तो....

मोती : बिलकुल नहीं। शीला, तुम्हारे और वकील साहब के बीच यहाँ बैठे हुए मुझे अच्छा लग रहा है।

शीला : शायद अब वह नहीं आयेगा डैडी !

दीन : मुझे भी यही लगता है। तुम जाकर सो जाओ। ग्यारह बजने को हैं।

मोती : बड़ी बेचैनी से राह देख रही है शीला उसकी। कोई काम अटक रहा है उसके बिना, या....

शीला : डैडी, आप इनसे क्यों नहीं कहते ? शायद यह उस सिलसिले में हमारी मदद कर सकें।

दीन : तुम बिशन को जानते हो मोती।

मोती : बिशन। हाँ, बहुत अच्छी तरह। वह और मैं एक साथ आवारगी की गोद में पले, बड़े हुए और एक ही टोली में रहे हैं। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ।

दीन : तुम एक काम कर सकते हो हमारा ?

मोती : क्या ?

दीन : पहले यह बताओ कि तुम इस बात को अपने ही तक रखोगे ?

मोती : आप मुझपर पूरा भरोसा कर सकते हैं।

दीन : तो तुम....तुम बिशन से शीला के पत्र लौटाने के लिए कह सकते हो ? वह बदमाश हमारी खुशियों में जहर घोलने की कोशिश कर रहा है।

शीला : वह मुझे ब्लैकमेल करके मेरे भविष्य के साथ खिलवाड़

करना चाहता है।

मोती : मैं कह सकता हूँ, वह चिट्ठियाँ लौटा देगा। पर उसे इसके लिए कुछ देना होगा।

दीन : तुम्हें भी क्या ? अच्छे-खासे ताल्लुकात के बाद भी।

मोती : जो अपने होते हैं, वे ही चोट पहुँचाते हैं।

धोला : आज मालूम हुआ, लोग कीचड़ उछालने में किसी के साथ कोई रियायत नहीं करते।

मोती : जान-पहचान और अपने-अपने पेशे की माँग, दोनों अलग-अलग बातें हैं।

दीन : ताल्लुकात की बिना पर तुम उससे पत्र वापस तो ला सकते हो।

मोती : हाँ। लेकिन मैं ऐसा करूँगा नहीं। बिना कुछ दिये उससे यह काम कराने की मुझमें हिम्मत नहीं है।

धोला : यानी आप भी विद्यन से डरते हैं, या....

दीन : मैं समझ गया। तुम खुद मुआवज़ा माँग रहे हो मुझसे। उसके बहाने तुम मुझसे पैसा ऐंठोगे, इसकी उम्मीद कर सकता हूँ मैं तुमसे। तुम ठीक ही तो कहते हो, जो अपने होते हैं, वही चोट पहुँचाते हैं। मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी। मोती, तुम्हारे शरीर से मेरे खून का रिश्ता भी जुड़ा हुआ है। मुझे आज भी वे दिन याद हैं....

(संगीत। मंच पर अँधेरा। बायें कोने में प्रकाश आता है। स्त्रियों का वार्तालाप। पूर्वदृश्यांकन)

स्त्री : मैं कहती हूँ, निकल जा मेरे घर से। अभी। इसी समय। जिस थाली में खाया, उसी में छेद करते शर्म नहीं आयी तुझे।

दीन : तुम तो फ़िज़ूल बात बढ़ा रही हो!

(जमना रो रही है।)

स्त्री : तुम चुप रहो जी। इस घर में अब या तो यह रहेगी या....

दीन : क्यों जग हँसा रही हो ?

जमना : मैं चली जाती हूँ, बीबीजी ! पर यह ध्यान रखना, इस दुनिया में मेरा कोई नहीं है।

दीन : जमना !

(दृश्य लुप्त हो जाता है। संगीत। दीनदयाल अपने मंच पर पुनः प्रकाश आने से पूर्व अपने स्थान पर आकर बैठ जाते हैं। पूरा मंच आलोकित होता है।)

दीन : तब तुम जमना के पेट में पल रहे थे। मैंने जमना को सहारा दिया। उसकी गलती में मैं बराबर का शरीक था....

शीला : डैडी, क्या जमना से आपके सम्बन्ध....

दीन : मैंने इसी शहर में जमना के लिए अलग मकान लिया। तुम्हारी और उसकी छह-सात साल तक परवरिश की। तुम्हें पढ़ाने-लिखाने की कोशिश की। जो कुछ मैं तुम लोगों के लिए कर सकता था, मैंने किया। फिर जमना का देहान्त हो गया और तुम....तुम आवारगी की गोद में चले गये, मोती ! क्या उन सारे अहसानों के बदले में मैं तुमसे अपना एक काम करने के लिए नहीं कह सकता ?

मोती : अब जब सम्बन्धों और अहसानों की बात आ ही गयी है, तो मैं आपसे एक बात पूछूँ ?

दीन : हाँ, हाँ, पूछो।

मोती : अगर आप इस बात का जवाब 'हाँ' में देंगे, तो मुझे बेहद खुशी होगी। आप तो जानते हैं, वकील साहब, मैं जीवन-भर प्यार के लिए तरसता रहा हूँ।

दीन : तुम कहो तो....

मोती : क्या आप दिल से भी मुझे अपनी औलाद मानते हैं ?

दीन : इससे मैंने कभी इनकार किया है ?

मोती : तो अपनी जायदाद में आपको मेरा हिस्सा मानना होगा।

दीन : नहीं, यह नहीं हो सकता।

मोती : क्यों ?

दीन : इसलिए कि तुम मेरी....तुम मेरी जायज औलाद नहीं हो।

मोती : मैं पाप की औलाद हूँ। यह जानकर मैं अपने को बहुत छोटा समझकर जीता रहा हूँ। पर आत्मग्लानि के बोझ को लेकर जीना आसान नहीं है। एक तरफ़ आप मुझसे अपने सम्बन्ध की बात करते हैं। खून का रिश्ता बताते हैं। और दूसरी तरफ आप मेरा कोई हक नहीं मानते। आप दो तरह की बातें करते हैं। मैं तो एक ही तरह की बातें करता हूँ। हो सकता है, जीवन में आपके कई रूप हों। मेरे तो दो ही रूप है। बुरा तो है ही, शायद थोड़ा-बहुत अच्छा भी हो। आज मैं आपके पास खून का मुकदमा लेकर आया हूँ। आप चाहें, तो मुझसे पूरी-पूरी सौदेबाजी कर सकते हैं!

दीन : सौदेबाजी की बात उनसे की जाती है, जो अपने नहीं होते।

मोती : और अहसान की बात उनसे की जाती है, जो अपने होते हैं? आपने मुझपर या मेरी माँ पर जो भी अहसान किये हैं, मैं आज उन सबका बदला चुका देना चाहता हूँ। आप बेफिक्र रहें। आपकी, या शीला की, या आपके खानदान की इज्जत पर कोई आँच नहीं आयेगी। मुझसे जो कुछ हो सका, करूंगा।

दीन : इसीलिए मैं तुम्हें इस वक्त पुलिस के हवाले नहीं कर रहा हूँ।

मोती : पुलिस से सिर्फ शरीफ़ लोग डरते हैं, वकील साहब! मुझे धमकी ?

शीला : आप ये कैसी बातें कर रहे हैं डैडी ? क्या आप ऐसा करेंगे
यह अच्छी बात नहीं होगी ।

दीन : लेकिन मैं ऐसा नहीं करूंगा ।

मोती : न जाने क्यों आपकी इन बातों से मेरा विश्वास आप प
से उठता जा रहा है ।

शीला : डैडी को ग़लत मत समझिए ।

दीन : शीला ठीक कह रही है, मोती ! ख़ैर, तुम उस ख़ून के
बारे में कहो । मैं तुम्हें बचाने की पूरी कोशिश करूंगा ।
तुम जाकर सो जाओ, शीला !

शीला : मुझे नींद नहीं आ रही है, डैडी !

दीन : तो बैठी रहो । हां, मोती, तो पहले यह बताओ कि ख़ून
किस जगह हुआ ?

मोती : स्टेडियम के पीछे, सुनसान जगह में, रात को ।

दीन : फिर....

मोती : मैं स्टेडियम के चौराहे पर आया । वहाँ चाय, पान, बीड़ी
की दो-तीन दुकानें हैं ।

दीन : हैं ।

मोती : वहां से सिगरेट का एक पैकेट लिया । थोड़ी देर वहां
खड़ा रहा । फिर वहां से चलकर उस जगह के काफ़ी पास
आ गया, जहाँ ख़ून हुआ था ।

दीन : तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था ।

शीला : डैडी ठीक कहते हैं । आपको ख़ून की जगह वापस नहीं
जाना चाहिए था ।

मोती : वहाँ से थोड़ी दूर पर त्रिलोचन खड़ा था, जो तभी वहाँ
आया था ।

दीन : त्रिलोचन कौन ?

मोती : रात की डायरी का पब्लिसिटी-मैन । [illegible]

था। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ।

दीन : सही है। मोती को कौन नहीं जानता। उसे तुमपर शक तो नहीं हुआ?

मोती : मैं चाहता था, उसे मुझपर शक हो जाये। इसलिए मैंने उसे सिगरेट दी। अपनी जेब से लाइटर निकाला। लाइटर से उसकी सिगरेट सुलगायी और उसकी सूरत रोशनी में देखकर लाइटर अपनी सूरत की तरफ़ कर लिया ताकि वह भी मेरी सूरत अच्छी तरह देख ले।

शीला : यह क्या किया आपने?

दीन : उसके बाद....

मोती : मैं उससे बड़ी देर तक वहाँ बैठा गपशप करता रहा।

शीला : बातें करते रहे?

दीन : किस तरह की बातें?

मोती : यही अपने धन्धे के बारे में।

दीन : इस खून के बारे में तो कोई बात नहीं हुई?

मोती : वह जानता है, मैंने खून किये हैं। वैसे भी जब खून की चर्चा होगी तो त्रिलोचन को याद आ जायेगा कि खून की रात मैं लाश के पास मौजूद था। पुलिस की तफ़तीश के लिए इतना ही काफ़ी है।

दीन : यह अच्छा नहीं किया तुमने। अपने खिलाफ़ एक सबूत खड़ा कर लिया। आखिर तुमने ऐसा क्यों किया?

मोती : मुझे एक बात का डर था। वह डर सच निकला।

दीन : कैसा डर? किस बात का डर?

मोती : कि खून किसने किया है?

दीन : किसका?

मोती : बिशन का।

दीन : तो मरनेवाला बिशन था?

शीला : विशन.? ? ? विशन का खून हो गया ?....

मोती : हाँ। विशन ने मुझे उस रात ग्यारह और बारह के बीच स्टेडियम के पीछे बुलाया था। उसे मुझ-जैसे गुण्डे की मदद चाहिए थी। उसने आपसे चिट्ठियाँ लौटाने के दस हज़ार माँगे थे। *आपने उसे वहाँ रुपया देने का* वादा किया था। वह जेब में शीला की सारी चिट्ठियाँ लेकर आया था।

दीन : विशन ने तुम्हें मेरा नाम बताया था ?

मोती : नहीं। उसने मुझे ठीक टाइम पर स्टेडियम के पीछे पहुँचने के लिए कहा था। पर मैं एक और लफड़े में पड़ गया और मुझे वहाँ पहुँचने में देर हो गयी। उसने मुझे इतना *ही बताया था कि उसे किसी से रुपये वसूल करने हैं।* मैं वहाँ उसकी मदद के लिए मौजूद रहूँ ताकि उसके साथ कोई धोखा न हो। पर मेरे वहाँ पहुँचने से पहले ही किसी ने उसे खत्म कर दिया था।

दीन : यानी तुमने उसका खून नहीं किया है ?

मोती : बिलकुल।

दीन : फिर यह खून किसने किया ?

मोती : *मैं उसे जानता हूँ।* पहले नहीं *जानता था, बाद में* जान गया।

दीन : कौन है वह ?

मोती : यह मैं बाद में बताऊँगा।

दीन : जब विशन ने मेरा नाम नहीं बताया, तो तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि रुपये देने के लिए मैंने उसे वहाँ बुलाया था ?

मोती : उसकी जेब से निकली चिट्ठियों से। जब मैंने देखा कि उसे किसी ने मार डाला है, तो मैंने उसकी जेबों की *तलाशी* ली। जेबों में चिट्ठियाँ थीं। विशन को मारनेवाला

एकदम अनाड़ी था। मुझे लगा कि बिशन को मारनेवाला हमारे पेशे का आदमी नहीं है, नहीं तो वह उसको जेब में चिट्ठियाँ नहीं छोड़ता। मैं स्टेडियम के चौराहे पर आया। वहीं से सिगरेट ली। रोशनी में तीन-चार चिट्ठियाँ पढ़ने के बाद सारी बात मेरी समझ में आ गयी। मेरा मुखड़ा सच में बदल गया। बिशन का खून हो ही चुका था। इसलिए सबसे पहले मेरे दिमाग़ में आपको बचाने की बात आयी। मैं आज तक आपको और आपके खानदान को धब्बा लगाता रहा हूँ। आपने मुझपर और मेरी माँ पर काफ़ी अहसान किये हैं। मैंने सोचा, उन अहसानों का बदला चुकाने के लिए यह वक़्त ठीक रहेगा।

शीला : लेकिन बिशन का खून किसने किया?

मोती : वकील साहब ने।

शीला : डैडी आप?....

दीन : यह सच नहीं है। नहीं। मैंने कोई खून नहीं किया। यह झूठ है।

मोती : तो सच क्या है?

दीन : बिशन का खून तुमने किया है, मोती!

मोती : मैं चाहता हूँ, आप यही कहें। उसके खून का इल्ज़ाम मैंने अपने सिर ले लिया है। इससे मेरी साख को कोई धक्का नहीं लगेगा। हाँ, अगर आप जेल चले गये, तो आपकी इज़्ज़त धूल में मिल जायेगी और आपके खानदान का नाम भी।

दीन : तुमने वे पत्र जला दिये न?

मोती : सब कुछ जला दिया आपके लिए।

शीला : आप इतना घटिया काम करेंगे, डैडी, मैं सोच भी नहीं सकती थी!

दीन : तुमने मुझे पहले नहीं बताया, वरना उस कमीने को मैं कभी का रास्ते से हटा चुका होता !

मोती : मेरी मौजूदगी में उसे गाली मत दो। बिशन मेरा जिगरी दोस्त था।

दीन : कमीना हमेशा कमीना ही कहा जायेगा।

मोती : आप फिर उसे गाली दे रहे हैं। इससे मुझे बड़ी तकलीफ़ हो रही है, वकील साहब !

दीन : वह एक नीच आदमी था।

मोती : आप कहते हैं, बिशन एक नीच आदमी था। ठीक है। पर शीला की मर्ज़ी के बिना वह आगे कैसे बढ़ा ? कौन अच्छा है, कौन बुरा, इसका फ़ैसला आप नहीं कर सकते, क्योंकि आप तो खुद....

दीन : शीला और बिशन को या शीला और तुम्हें बराबरी का दर्जा कैसे दिया जा सकता है ?

मोती : क्या आप अब भी मुझमें और शीला में फ़र्क़ मानते हैं ?

दीन : वह तो है और रहेगा। उस फ़र्क़ को मिटाया नहीं जा सकता। यह मत भूलो मोती, कि तुम एक नाजायज़ औलाद हो।

मोती : इस बार आपने मेरी माँ को गाली दी है। वकील साहब, मेरी पाप और अपराध की ज़िन्दगी के ज़िम्मेदार आप हैं। कम से कम आपको मेरी बेचारगी का अहसास होना चाहिए....मैं सारी उम्र प्यार को तरसा, किसी को अपना नहीं कह सका और आज जब मैं अपराध-भरी ज़िन्दगी को ख़त्म करने और आपके अहसान चुकाने की वजह लेकर आया हूँ तब भी आप मुझे मेरी ज़िन्दगी का हवाला दे रहे हैं। मैं चाहूँ, तो जायज़ और नाजायज़ का फ़र्क़

दरिन्दे

जो सिर्फ़ आपकी आँखों में है, अभी मिटा सकता हूँ....एक हत्या और सही। शीला का खून और उसके बाद आपको अपना खून सिर्फ़ मुझमें दिखाई देगा। पर मैं ऐसा करूँगा नहीं। मैं पुलिस-स्टेशन जा रहा हूँ। आप सिर्फ़ इतना याद रखना पिताजी, कि बिशन का खून मैंने किया है। अच्छा शीला बहन, आप मुझे माफ़ कर देना।

शीला : अब मैं तुम्हें नहीं जाने दूँगी भैया....मुद्दतों बाद मुझे मेरा भाई मिला है.... मोती.... मेरे भैया! (मोती चला जाता है।)

दीन : सुनो, मोती! रुक जाओ। मेरी बात तो सुनो। अपराधी तुम नहीं...अपराधी तो मैं हूँ! जमना की बरबादी का अपराधी, तुम्हारी जिन्दगी तबाह करने का अपराधी। बिशन की हत्या का अपराधी। मोती....मोती....रुक जाओ! मोती!

शीला : वह चला गया, डैडी! चला गया। डैडी, आप कुछ भी कीजिए पर मोती को बचा लीजिए, डैडी! डैडी!....

दीन : तुम फ़िक्र न करो, बेटी! मैंने अपनी जिन्दगी में बहुत से मुकदमे लड़े हैं। अब मुझे आखिरी और अहम् मुकदमा लड़ना है। यह सच है कि मोती की इस अपराध-भरी जिन्दगी का अपराधी मैं हूँ। जमना का जीवन मैंने बरबाद किया। बिशन की हत्या मैंने की है। अपराधी मोती नहीं है, दीनदयाल है। और मेरे पेशे का तक़ाज़ा है कि सज़ा अपराधी को ही मिलनी चाहिए। मैंने मोती को जिन्दगी की शक्ल में मौत दी थी, लेकिन मोती मुझे मौत की शक्ल में जिन्दगी दे रहा है। ऐसी मौत, जो मुझे अब जिन्दगी से ज़्यादा प्यारी है। शीला, मोती को कुछ नहीं होगा, कुछ नहीं होगा मोती को....

(दीनदयाल लॉबी से बाहर चले जाते हैं। दीपा दीनदयाल को बाहर जाता देखती रहती है। फिर पेशानी पर हथेली रखकर सिसकियाँ लेने लगती है। प्रकाश सिकुड़कर दीपा की आकृति को घेर लेता है। कुछ क्षण ठहरकर धीरे-धीरे लुप्त हो जाता है।)

□

अपना-अपना दर्द

अ. भा. प्रतियोगिता में १९७३-७४ में
प्रथम पुरस्कार प्राप्त एकांकी

पात्र-परिचय

मधु : अठारह वर्षीय अनुभवहीन युवती। जीवन के प्रति छटपटाहट, उदासीनता और घुटन।

बिहारी : पैंतीस वर्ष का घाघ व्यक्ति। चेहरे पर काइंयापन।

मालती : अधेड़ उम्र की सन्तानहीन विधवा, जिसे अभी भी अपने सुन्दर होने का अहसास है। शराब की इतनी शौक़ीन कि पीने के बाद होश ही नहीं रहता कि उसके साथ क्या हो रहा है, क्या किया जा रहा है।

वीरेन : डॉक्टर, जिसे उसकी पत्नी छोड़कर चली गयी है। अपने को टूटा हुआ और अकेला महसूस करता है। फिर भी पत्नी से आज भी लगाव है। पत्नी के साथ बिताये क्षणों की मार्मिकता को याद करके जीता है।

मंच-व्यवस्था

मंच चार भागों में विभक्त। मंच पर नितान्त आवश्यक वस्तुएँ।

भाग 'क' : मालती का ड्राइंगरूम। सोफ़ा। कुरसियाँ।

भाग 'ख' : पार्क। हरी दूब। लम्बी बेंच। फूलों के गमले।

भाग 'ग' : साधारण कमरा।

भाग 'घ' : अस्पताल का कमरा। स्ट्रेचर। बेड।

[मंच-व्यवस्था इस प्रकार कि कोई भाग किसी अन्य भाग को दर्शकों की दृष्टि से अलग नहीं करता। जब एक भाग में कार्य-व्यापार चल रहा हो, तो अन्य तीन भागों में प्रकाश नहीं होता।

[परदा उठने पर—मंच पर एकदम अँधेरा। भाग 'क' में प्रकाश आता है। एक युवती बैलबॉटम पहने जॉज़ की धुन पर नृत्य कर रही है। अचानक दरवाज़े की घण्टी बजती है। युवती नृत्य-मुद्रा में बढ़कर दरवाज़ा खोलती है।]

मधु : तुम !

बिहारी : हाँ, मधु। तुम्हें मुझे यहाँ आया देखकर ताज्जुब हो रहा है ?

मधु : नहीं बिहारी बाबू, बिलकुल नहीं। मैं जानती थी, तुम आण्टी से मिलने आओगे। आज छुट्टी है न।
(रिकॉर्डर पर बजता जॉज़ संगीत बन्द करती है।)
बैठिए ! इस तरह घूर क्या रहे हैं ?

बिहारी : मालती कहाँ है ?

मधु : आण्टी बाहर गयी हैं। शायद अभी लौट आयें। नहीं भी।

बिहारी : तुम बेहद खुश दिखाई दे रही हो ?

मधु : अर्थहीन भटकाव में खुशी का कोई स्थान नहीं। जी बहला लेती हूँ जब आण्टी घर में नहीं होतीं।

बिहारी : ऐसा क्यों है ?

मधु : मैं डायन जो हूँ, उनके शब्दों में।

बिहारी : डायन ?

मधु : मामा अमेरिका में रहते थे। अच्छा-खासा बिज़नेस था उनका। मुझे गोद लिया उन्होंने। मैं बम्बई से अमेरिका गयी। अचानक कार-दुर्घटना में उनकी मौत हो गयी। आण्टी उनका सब कुछ बटोरकर यहाँ वापस हिन्दुस्तान चली आयी। बम्बई हेडक्वार्टर बनाया। मुझे मामा ने गोद लिया, फिर भी आण्टी हरेक को अपने लिए कहती है—

आ रही हैं। हाँ, वही हैं शायद।

(मधु बिहारी के पास से उठ खड़ी होती है। मालती का प्रवेश।)

बिहारी : आओ मालती। आज छुट्टी के दिन भी दोपहर कहाँ कर दी? बड़ी देर से तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ यहाँ।

मालती : इसने बताया नहीं तुम्हें?

बिहारी : बताया था। कह रही थी, आण्टी मुझे कहकर नहीं जातीं।

मालती : मैं बेहद परेशान हूँ, इस लड़की से, बिहारी। इससे मैं अपना पीछा छुड़ाना चाहती हूँ। शायद मामा को तो खा ही गयी। अब इसकी मनहूसियत मेरे पीछे पड़ी है। कितनी बार कह चुकी हूँ, चली जा अपने माँ-बाप के पास, नहीं जाती।

बिहारी : तुम्हें चाहती है।

मालती : कितना चाहती है, यह मैं खूब जानती हूँ।

बिहारी : तुम इसपर नाहक नाराज हो रही हो। एक शब्द नहीं बोला है इसने अब तक। कितनी प्यारी बेबी है! उम्र क्या होगी अभी?

मालती : सत्रह-अठारह को पार कर रही है।

बिहारी : इसकी शादी की फ़िक्र है।

मालती : शादी की फ़िक्र मैं क्यों करूँ? वो करें, जिन्होंने जन्म दिया है इसे।

बिहारी : मैंने तो मजाक किया था, तुमसे। इससे कुछ नहीं कहा था तुम्हारे लिए। बाहर बहुत गरमी है क्या? यहाँ थोड़ी देर आराम से बैठो। मिजाज में ठण्डक आयेगी। क्यों गयी थीं बाहर, कोई काम था?

मालती : वही करन्सी के ट्रा

मिलनेवाले हैं ओः

आ रही है। हाँ, वही है शायद।

(मधु बिहारी के पास से उठ खड़ी होती है। मालती का प्रवेश।)

बिहारी : आओ मालती। आज छुट्टी के दिन भी दोपहर कहाँ कर दी ? बड़ी देर से तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूँ यहाँ।

मालती : इसने बताया नहीं तुम्हें ?

बिहारी : *बताया था। कह रही थी, आण्टी मुझे कहकर नहीं जातीं।*

मालती : मैं बेहद परेशान हूँ, इस लड़की से, बिहारी। इससे मैं अपना पीछा छुड़ाना चाहती हूँ। शायद मामा को तो खा ही गयी। *अब इसकी मनहूसियत मेरे पीछे पड़ी है। कितनी बार कह चुकी हूँ, चली जा अपने माँ-बाप के पास,* नहीं जाती।

बिहारी : तुम्हें चाहती है।

मालती : कितना चाहती है, यह मैं खूब जानती हूँ।

बिहारी : तुम इसपर नाहक नाराज हो रही हो। एक शब्द नहीं बोला है इसने अब तक। कितनी प्यारी बेबी है ! उम्र क्या होगी अभी ?

मालती : सत्रह-अठारह को पार कर रही है।

बिहारी : इसकी शादी की फ़िक्र है।

मालती : शादी की फ़िक्र मैं क्यों करूँ ? वो करें, जिन्होंने जन्म दिया है इसे।

[illegible] किया था, तुमसे। इससे कुछ नहीं कहा [illegible] लिए। बाहर बहुत गरमी है क्या ? यहाँ थोड़ी [illegible]ने। मिज़ाज में ठण्डक आयेगी। क्यों [illegible] था ?

[illegible] है। मेरी एक सहेली के [illegible] में। उसके यहाँ गयी थी।

बिहारी : पैसा अमेरिका से यहाँ ट्रान्सफ़र कराना है ? यह काम मैं करवा दूँगा । ओवरसीज़ के एजेंट से मेरी अच्छी जान-पहचान है ।

मालती : पैसे की बड़ी तंगी है आजकल ।

बिहारी : भई अपना तो यह विचार है कि हर आदमी की ७० प्रतिशत मरीज़ पैसे को लेकर है ।

मालती : कुछ लिया ?

बिहारी : ठण्डा या गर्म—अभी नहीं ।

मालती : इस लड़की को इतनी तमीज़ नहीं कि घर आये व्यक्ति से पूछ ले ।

बिहारी : इस पर क्यों बिगड़ रही हो । इसने तो पूछा था । तुम्हारे आने तक मैंने मना किया था ।

मधु : क्या लाऊँ ?

बिहारी : अपनी आण्टी से पूछो । हम तो कुछ भी ले लेते हैं ।

मालती : ठण्डा ले आओ । बड़ी गरमी है ।

मधु : जी ।

(मधु का प्रस्थान)

मालती : बिहारी ।

बिहारी : जी ।

मालती : तुम्हें ज़्यादा देर तो इन्तज़ार नहीं करना पड़ा ?

बिहारी : नहीं तो । वे बैंक के काग़ज़ मुझे दे दो । ऐसा न हो कि मैं उठकर चला जाऊँ और वे यहीं रह जायें । अब तुम्हारा यह काम कराने की ज़िम्मेदारी अपनी रही ।

मालती : शुक्र है, तुम मेरे प्रति अपनी ज़िम्मेदारी तो समझने लगे ।

मधु : (प्रवेश) लीजिए, कोल्ड ड्रिंक ।

मालती : मेज़ पे सर्व करो । तुम्हें तमीज़ कब आयेगी । (मौन) यहीं आयेगी क्या ?

मधु : चली जाऊँगी।

बिहारी : कहाँ ?

मालती : अपने मम्मी-डैडी से मिलने।

बिहारी : वहाँ बम्बई में रहते हैं ?

मालती : हाँ। (मधु से) जा रही है ?

मधु : तैयार हो लूँ।

बिहारी : थैंक्यू फ़ॉर द ड्रिंक। मैं अब चलूँ।

मालती : तुम कहाँ चले, थोड़ी देर बैठो ! अभी तो तुमसे बहुत-सी बातें करनी हैं।

बिहारी : फिर किसी वक़्त आऊँगा। अभी चलूँ। तुम चल रही हो, मधु ? कहाँ रहते हैं तुम्हारे मम्मी-डैडी। चाहो तो मेरे साथ चलो। स्कूटर है। छोड़ दूँगा वहाँ।

मालती : कोलाबा में रहते हैं। झटपट तैयार हो जा। बिहारी अंकल छोड़ देंगे वहाँ।

मधु : दो मिनट में आयी।

बिहारी : हाँ जल्दी। मुझे देर हो रही है।

मधु : अभी आयी। (प्रस्थान)

मालती : आजकल हवा पर सवार क्यों रहते हो ? मैं देख रही हूँ, आजकल तुम कुछ खोये-खोये से रहने लगे हो।

बिहारी : तुम्हारी चिन्ता रहती है।

मालती : सच !

बिहारी : सच !

मालती : क्या सोचते हो ?

बिहारी : रिश्तों का अर्थ।

मालती : जुड़ना।

बिहारी : जुड़ने के लिए टूटते रहना।

मालती : टूटने से बचने के लिए जुड़ना।

बिहारी : निरन्तर टूटते रहना।
मालती : सब एक ही प्रक्रिया का अंग नहीं है ?
बिहारी : अलग-अलग स्थितियों में अर्थ बदल जाते हैं।
मालती : और क्या सोचते हो ?
बिहारी : किस बारे में ?
मालती : तुम्हारे और मेरे बीच रिश्तों के बारे में।
बिहारी : पति-पत्नी के अलावा दोस्त बनकर भी तो रहा ज सकता है।
मालती : दोस्त ?
बिहारी : हाँ। इस तरह एक बन्दिश से नहीं बचा जा सकता ?
मालती : हूँ।

(दरवाजे के पास मधु का साड़ी पहने प्रवेश। अचानक बिहारी की दृष्टि उस पर पड़ती है।)

बिहारी : सुन्दर !
मालती : मेरे लिए कई बार इस शब्द का उन्होंने प्रयोग किया था।
बिहारी : किसने ?
मालती : मधु के स्वर्गवासी मामाजी ने।
बिहारी : अपने को अतीत से बाँधे रखना चाहती हो ?
मालती : इसमें सुख मिलता है।
बिहारी : कभी-कभी अतीत भविष्य की खुशियों में आड़े आ जाता है। कभी सोचा है इस बारे में ? अभी तो मैं मधु की साड़ी की बात कर रहा था। साड़ी में कितनी सुन्दर लग रही है यह लड़की।
मधु : चलिए।
बिहारी : चलें।
मालती : रात क्लब में मिल रहे हो ?
बिहारी : श्योर।

(प्रकाश विलुप्त हो जाता है। अन्तराल पार्श्वसंगीत। भाग 'ख' आलोकित होता है। मधु का हाथ पकड़े बिहारी का प्रवेश।)

मधु : यहाँ इस पार्क में क्यों ले आये मुझे ?

बिहारी : हरी दूब पर बैठेंगे कुछ देर। खुली हवा में बातें करेंगे।

मधु : तुम्हें कहीं जाने की जल्दी थी ?

बिहारी : अब नहीं। वहाँ बड़ी घुटन थी। इसलिए कहा था वो।

मधु : आण्टी क्या पूछ रही थी ?

बिहारी : यही, रिश्तों का अर्थ।

मधु : क्या बताया ?

बिहारी : अलग-अलग स्थितियों में अर्थ बदल जाते हैं, और····

मधु : और....

बिहारी : सम्बोधन भी। उनके अपने शब्दों में तुम्हारे बिहारी अंकल और यहाँ अकेले में तुम्हारा सम्बोधन सिर्फ 'बिहारी'।

(मधु हौले से हँसती है।)

बिहारी : तुम्हारा यूँ हलके से मुसकराना अच्छा लगता है।

मधु : मेरे लिए इस हँसी का कोई महत्त्व नहीं।

बिहारी : क्यों ?

मधु : भुलावे की जिन्दगी में किसी चीज़ का कोई अर्थ नहीं होता है। देखा, आण्टी किस क़दर खिन्न हैं मुझसे।

बिहारी : हाँ। ऐसी बात है तो तुम अपने माँ-बाप के पास क्यों नहीं रहतीं ?

मधु : मैं यही चाहती हूँ।

बिहारी : अड़चन क्या है ? (मधु चुप रहती है।) चुप क्यों हो ? कुछ छुपा रही हो मुझसे।

मधु : जानना चाहते हो ?

बिहारी : मुझे तुमसे प्यार है, मधु !

मधु : डैडी को मम्मी हरदम तीन सौ देती हैं। उन्हें रोज़ाना शराब चाहिए और औरतें। मम्मी घर पर कशीदा-कढ़ाई सिलाई का काम करती हैं। इससे किसी तरह घर का खर्च चल जाता है। दो छोटे भाई और दो बहनें और हैं। आये दिन किसी न किसी बात को लेकर मम्मी-डैडी में झगड़े होते रहते हैं। उस माहौल में घर-सा कुछ भी नहीं है। विश्वास करो, बिहारी, मैं उनकी सन्तान हूँ, लेकिन जब-जब मैं वहाँ जाती हूँ, मुझे मेहमान की तरह ट्रीट किया जाता है। मम्मी मुझे वहाँ आया देखकर उदास हो जाती है। वापस लौटने पर दरवाज़े तक मेहमान की तरह मुझे छोड़ने आया जाता है। वे नहीं चाहते, मैं वहाँ रहूँ। मेरा उस घर में क़दम रखना उन्हें अच्छा नहीं लगता। मेरा जीवन उस गीली लकड़ी की तरह है, जो न सुलगती है, न जलती है, धुआँ देती रहती है। हर तरफ़ धुआँ, धुआँ और अँधेरा। इस अँधेरे में यदि कोई प्रकाश-किरण है, तो वो तुम्हारा साथ है। मुझे अपनी जीवन-संगिनी बना लो।

बिहारी : दिल से चाहता हूँ, मैं भी। पर फ़िलहाल कुछ मजबूरियाँ हैं।

मधु : मजबूरियाँ कैसी ?

बिहारी : इंश्योरेन्स के काम में इतना पैसा नहीं मिलता कि तुम्हारी और मेरी आराम से गुज़र हो जाये।

मधु : मैं घर चाहती हूँ, बिहारी। घर बसाना चाहती हूँ। और चाहती हूँ, कोई मुझे प्यार करे। बेहद प्यार।

बिहारी : मैं तुम्हारी ख़ुशी चाहता हूँ।

मधु : इससे जीवन को अर्थ मिलेगा और स्थायित्व भी। भटकाव

अच्छा नहीं लगता।

विहारी : भटकाव किसी को भी अच्छा नहीं लगता, सिवाय ऐसे लोगों के जिनकी आदत में यह शामिल है।

मधु : तुम्हारी आदत में भी ?

विहारी : नहीं। पर कई बार ऐसा महसूस नहीं होता कि...

मधु : तुम्हारी बात मैं समझ रही हूँ। वह नैसर्गिक है। कभी-कभी उसकी इच्छा होती है, जो उससे भिन्न है जो अपने पास है।

विहारी : तुम भी यही सोचती हो, यह अच्छी बात है।

मधु : फिर क्या सोचा है तुमने उस बारे में ?

विहारी : दिक्कत यही है कि आर्थिक रूप से मैं इसके लिए फिलहाल तैयार नहीं हूँ।

मधु : आर्थिक कठिनाइयों का हल मिल-बैठकर निकाला जा सकता है। मैं ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं हूँ, इसलिए शायद कोई अच्छी नौकरी न मिले। लेकिन और कई काम हैं करने के लिए।

विहारी : हैं। स्वच्छन्द विचारोंवाली लड़की के लिए काम की कमी नहीं। तुमने कहा था न अभी—कभी-कभी उसकी ख्वाहिश होती है, जो उससे भिन्न हो जो तुम्हारे पास है।

मधु : हाँ, कहा था।

विहारी : इसका फ़ायदा उठाया जा सकता है। मेरा मतलब है, इस आदत को धन्धे के रूप में अपनाकर।

मधु : तुम चाहते हो, मैं....

विहारी : हाँ। फिर सारी समस्या हल हो जायेगी। तुम्हें अगर मेरी यह शर्त मंजूर है, तो मुझे तुम्हें पत्नी के रूप में अपनाने में खुशी होगी। मैं तो यह भी जरूरी नहीं समझता कि रीति-रिवाज के चक्कर में हम पड़ें। ऐसी किसी

बिहारी : मुझे तुमसे प्यार है, मधु !

मधु : डैडी की मन्थली इनकम तीन सौ रुपये है। उन्हें रोज़ाना शराब चाहिए और औरतें। मम्मी घर पर थोड़ा-बहुत सिलाई का काम करती हैं। इससे किसी तरह घर का खर्च चल जाता है। दो छोटे भाई और दो बहनें और हैं। आये दिन किसी न किसी बात को लेकर मम्मी-डैडी में झगड़े होते रहते हैं। उस माहौल में घर-सा कुछ भी नहीं है। विश्वास करो, बिहारी, मैं उनकी सन्तान हूँ, लेकिन जब-जब मैं वहाँ जाती हूँ, मुझे मेहमान की तरह ट्रीट किया जाता है। मम्मी मुझे वहाँ आया देखकर उदास हो जाती हैं। वापस लौटने पर दरवाज़े तक मेहमान की तरह मुझे छोड़ने आया जाता है। वे नहीं चाहते, मैं वहाँ रहूँ। मेरा उस घर में क़दम रखना उन्हें अच्छा नहीं लगता। मेरा जीवन उस गीली लकड़ी की तरह है, जो न बुझती है, न जलती है, धुआँ देती रहती है। हर तरफ़ धुआँ, धुआँ और अँधेरा। इस अँधेरे में यदि कोई प्रकाश-किरण है, तो वो तुम्हारा साथ है। मुझे अपनी जीवन-संगिनी बना लो।

बिहारी : दिल से चाहता हूँ, मैं भी। पर फ़िलहाल कुछ मजबूरियाँ हैं।

मधु : मजबूरियाँ कैसी ?

बिहारी : इंश्योरेन्स के काम में इतना पैसा नहीं मिलता कि तुम्हारी और मेरी आराम से गुज़र हो जाये।

मधु : मैं घर चाहती हूँ, बिहारी। घर बसाना चाहती हूँ। और चाहती हूँ, कोई मुझे प्यार करे। बेहद प्यार।

बिहारी : मैं तुम्हारी खुशी चाहता हूँ।

मधु : इससे जीवन को अर्थ मिलेगा और...

दिया। नौबत यहाँ तक आ पहुँची है कि अब तुममें और एक आम ग्राहक में फर्क करना मेरे लिए मुश्किल हो गया है।

बिहारी : मैंने तुम्हारे लिए उस धनी विधवा को छोड़ दिया, जिसे तुम आण्टी कहती थीं और जो मेरे बड़े काम की थी। बोलो, नहीं हुआ यह? तुम्हें तुम्हारे उस नरक से बाहर निकाला, जिसके लिए तुम हर रोज मुझसे कहती थी, मैं घुट रही हूँ, कुढ़ रही हूँ, मर रही हूँ। क्या ये सब नहीं किया मैंने? इसपर भी तुम यह अलाप रही हो कि मैंने कुछ नहीं किया। कुछ नहीं दिया।

मधु : जिसके पास देने के लिए अपने स्वार्थ के सिवा और कुछ न हो, वह किसी को क्या दे सकता है? तुम्हारा प्यार झूठा, कमज़ोर और तंगदिल था।

बिहारी : तंग। पिछले दो-तीन महीने से यही रट लगा रखी थी—मैं तुमसे तंग आ गयी हूँ, तंग आ गयी हूँ, तंग आ गयी हूँ। तुम्हारी इस तंगी से तंग आकर मैंने गीता से कोर्ट मैरेज कर ली है। ये देखो कोर्ट का मैरेज-सर्टिफ़िकेट। पढ़ो इसे।

मधु : तुम्हें तो विवाह-संस्था में विश्वास नहीं था। यह कोर्ट में कैसे चले गये?

बिहारी : हमारा क्या है, मधुजी। हम तो सीधे आदमी हैं। जैसा मौक़ा हो, वैसा ही विश्वास कर लेते हैं। मैंने तुम्हें बड़ा कष्ट दिया है। कुछ भी नहीं दिया। च्ऽऽऽच्ऽऽऽ च्ऽऽऽच्ऽऽच्। अब तुम्हें और तकलीफ़ देना नहीं चाहता—बिलकुल नहीं। कल सुबह ही की गाड़ी से गीता कानपुर से आ रही है। तुम ऐसा करो। अपना सामान उठाओ और इस घर से फ़ौरन नौ-दो-ग्यारह हो जाओ।

फॉरमेलिटी के बिना हम पति-पत्नी बनकर रह सकते हैं। मैं इन सबको एकदम निजी मामला मानता हूँ। सोच लो, सब तुमपर निर्भर करता है। उठो मधु।

(तेज पार्श्वसंगीत। प्रकाश लुप्त हो जाता है। कुछ क्षणों के बाद भाग 'ग' में प्रकाश आता है। बिहारी भाग 'ग' का अदृश्य द्वार खटखटाता है। मधु दरवाजा खोलती है। अचानक उठी साँसों को किसी तरह रोकती है।)

मधु : कौन, तुम ?

बिहारी : (शराब पिये हुए) हाँ, मैं। मुझे घूर-घूरकर क्या देख रही हो। मैं कभी आऊँ, किसी वक्त आऊँ, कोई पाबन्दी है मुझपर। यह मेरा घर है।

मधु : चलो अच्छा हुआ। आज एक महीने के बाद तुम्हें घर तो याद आया। रात के ढाई बज रहे हैं। किस गाड़ी से आये हो? कहाँ थे? किसके पास गये थे? रीता, गीता, सलमा, सरला, शोभा—एक लम्बी लिस्ट है तुम्हारी तो।

बिहारी : सब बता दूँगा। अन्दर कदम तो रखूँ।

मधु : लगता है, आजकल पी भी खूब रहे हो!

बिहारी : पीऊँगा। खूब पीऊँगा। तुम रोक सकती हो मुझे पीने से? कौन रोक सकता है मुझे पीने से?

मधु : तुम्हें रोकनेवाला है कौन? जो जी चाहे करो। आज तीन साल हुए पति-पत्नी के रूप में साथ-साथ हमें रहते। इन तीन सालों में तुमने क्या दिया मुझे?

बिहारी : कुछ नहीं दिया? तुम घर चाहती थी। मैंने तुम्हें घर दिया। अपना सब कुछ दिया। और तुम कहती हो, मैंने कुछ भी नहीं दिया।

मधु : तुमने मुझे एक घिनौनी जिन्दगी के सिवा और कुछ नहीं

वीरेन : सभी संघर्ष करते हैं। जिन्दा रहने के लिए सभी लड़ते हैं, वक्त से, हालात से, विरोध से।

मधु : उनके और मेरे लड़ने में फ़र्क़ है, डॉक्टर!

वीरेन : कैसा फ़र्क़?

मधु : मेरी लड़ाई अकेले आदमी की अकेली लड़ाई है।

वीरेन : इससे क्या होता है? आज हर आदमी अपने होने और जिन्दा रहने की लड़ाई लड़ रहा है। तुम्हारी ही तरह। अकेले आदमी की अकेली लड़ाई। ज़िन्दा रहना बहुत ज़रूरी है। मैं शाम को फिर राउण्ड पर आऊँगा। डोण्ट वरी। *तुम बिलकुल ठीक हो जाओगी।*

(प्रकाश लुप्त होता है। अन्तरालीय संगीत। मंच-व्यवस्था के थोड़े परिवर्तन के साथ भाग 'ग' में प्रकाश आता है। रात के समय का परिचायक प्रकाश और हलका पार्श्वसंगीत। मधु और वीरेन एक दूसरे के सामने कुरसियों पर बैठे हैं।)

मधु : कितनी मिलती-जुलती हैं हमारी बातें, डॉक्टर!

वीरेन : उसके बाद मेरी पत्नी शोभा यह घर छोड़कर अपने माँ-बाप के पास चली गयी। मैंने उसे बहुत समझाया। लेकिन वह नहीं मानी। अब वह डाइवोर्स चाहती है। इसके लिए कोर्ट में उसने दरख्वास्त दी है। मधु, ऐसा लगता है, हम बड़ी ग़लतफ़हमी में जीते हैं। अपने बारे में, दूसरों के बारे में, दुनिया-भर के बारे में। और एक छोटी-सी बात जिसकी अहमियत बहुत मामूली होती है, कभी-कभी घरों को तबाह कर देती है। ताल्लुकात ख़त्म करा देती है। सम्बन्ध इस तरह टूट जाते हैं जैसे एक-दूसरे से परिचित न हों। जब से शोभा इस घर से गयी है, मैंने घर के काम-काज के लिए एक सरवेंट रख ली

वीरेन : क्या बताऊँ, अजीब परेशानी है।

मधु : मुझे बताओ, शायद मैं कोई काम आ सकूँ।

वीरेन : तुम ?

मधु : क्यों ? तुम यहाँ आराम से बैठो। मैं चाय लाती हूँ।

वीरेन : सुनो।

मधु : क्या बात है ?

वीरेन : तुम चाय ले आओ।

मधु : आज इतने परेशान क्यों हो ? तुम तो बड़े साहसी हो। इसी साहस से तुमने मुझे जीवन के प्रति नये सिरे से सोचने की हिम्मत दी है। जिन्दा रहने की चाह दी है। आज किसी छोटी-सी बात को लेकर तुम खुद परेशान हो उठे हो।

वीरेन : तुम चाय लाओ। (मधु के प्रस्थान के बाद स्वगत) छोटी-छोटी बातें ही मिलकर बड़ी बात का रूप धार लेती है। कैसी अजीब समस्या है ! इसे यह सब कैसे बताऊँ ? क्या इससे पहले तुम मेरे जीवन में नहीं आ सकती थी ? बहुत देर कर दी तुमने।

मधु : (चाय की ट्रे लिये प्रवेश करती है) देर कहाँ कर दी। बस किचन में गयी थी और आ गयी। यह लो, चाय का एक गर्म प्याला पियो। तबीयत सँभल जायेगी।

वीरेन : बैठो, मधु ! मुझे तुमसे एक जरूरी बात करनी है।

मधु : कहो।

वीरेन : सोचता हूँ, तुम्हें सुनकर घबरा न लगे।

मधु : तुम कहो तो।

वीरेन : शोभा ने डाइवोर्स-एप्लीकेशन वापस ले ली है। वह किसी भी दिन यहाँ आ सकती है। तुम ऐसा करो, ये रुपये लो....